SAMAJ SANDESH

G. K. U. 1971

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080487

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080487

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1.3.72

080487

080487

RT-0443

नवम्बर, दिसम्बर १९७१

समाज सन्देश

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां (रोहतक)
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

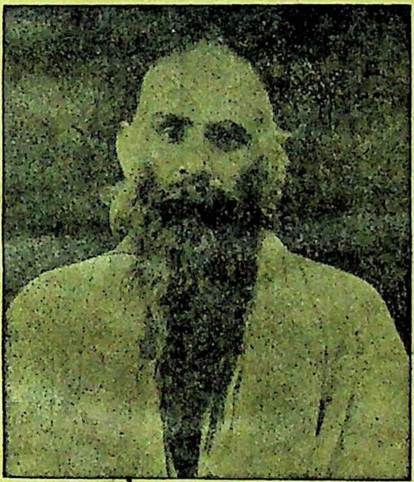

श्री भक्त फूलसिंह जी

ओ३म् । महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना ।
धियो विश्वा वि. राजति ॥ ऋ० १,३,१२

जल से पूर्ण महार्णव सम जो शीतल चेतनता लाती ।
प्रिय संकेतों से शुभ बातें रह रहकर है बतलाती ।
बुद्धि सिद्धि सिद्धान्त अनूठे मस्तिष्कों में बिठलाती ।
विश्व सृष्टि वैचित्र्य दिखाती वह वतरदेवी है भाती ॥

—निधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद-प्रवचन

लेखक :
आचार्य विष्णुमित्र
उपकुलपति :
गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल
तथा
कन्या गुरुकुल खानपुर, रोहतक

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा अखबार सम्बन्धी पत्र-व्यवहार का पता—

धर्म भानु

व्यवस्थापक समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल (रोहतक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ओ३म् ॥

व्यवस्थापक : श्री धर्मभानु

गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कलां (रोहतक)
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

* समाज सन्देश *

प्रकाशन तिथि २५ नवम्बर, १९७१

सम्पादक :
आचार्य हरिश्चन्द्र

सहायक सम्पादिका :
आचार्या सुभाषिणी

वर्ष-बारहवां | नवम्बर, दिसम्बर १९७१ | अङ्क : आठवां, नौवां

सम्पादकीय

वेद और आर्य समाज—

हम आचार्य विष्णुमित्र उपकुलपति का लिखा वेद प्रवचन का एक भाग अविकल रूप से प्रकाशित कर रहे हैं। इस बार हमने समाज सन्देश की प्रकाशन नीति में कुछ परिवर्वत किया है। इस वर्ष कुछ संस्कृत के लेख, अनुवाद भी यथा समय प्रकाशित किए हैं तथा और भी करने का विचार है। आचार्य विष्णुमित्र समाज सन्देश के प्रारम्भ से एक मूर्धन्य लेखक रहे हैं। इन्होंने पाठकों के लिए उत्तम विचारों का संकलन दिया है।

आचार्य जी ने वेद के स्वाध्याय को अपना ध्येय सा बना लिया है। जब लिखते हैं तो वेद चर्चा, तथा जब बोलते हैं तो वहां भी वेद चर्चा ही चलती है।

आर्य समाज वद के ज्ञान और प्रकाश को लेकर तो चला पर कुछ बीच में ऐसे भ्रम माया पद लिप्सा के रोग में फंसा कि आर्य लोग अवैदिक तथा अनार्य काम करने लगे। सभा सोसाईटियों को देख लें। सब जगह एक सभा की दो दो सभा बन चुकी हैं। अदालतों से उनके चुनाव होते हैं। नेताओं में न स्वाध्याय रहा, न त्याग तप ही। केवल रह गई पद लिप्सा। कोई भला ही सन्यासी महात्मा आर्य समाज के लिए काम करता है। ठीक है इसके अपवाद हैं जो वीतराग हैं पद से सर्वथा सर्वदा दूर रहने वाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ युवा सन्यासी तो ऐसा लगता है राजनैतिक भूख, पद तृष्णा के लिए ही काषाय वस्त्र धारी न बन गए हों।

पर अभी आर्य समाज में ऐसे ऐसे विद्वान् हैं जो सर्वथा इन मायाओं से दूर रहकर वेद स्वाध्याय, वेद पठन पाठन तथा वेद प्रचार में अपना समय लगाते हैं। उन्हें वेद का ही ध्यान रहता है। उन्हीं में से एक हैं आचार्य विष्णुमित्र जिनके इस सद् प्रयास के परिणाम स्वरूप हम वेद प्रवचन का प्रथम भाग समाज सन्देश के द्वारा पाठकों तक पहुँचा रहे हैं।

हम आचार्य जी के इस स्तुत्य प्रयास के लिए उन्हें भूरि भूरि बधाई देते हैं तथा आशा करते हैं कि वे भविष्य में भी इसी प्रकार समाज सन्देश की सेवा करते रहेंगे।

आशा है पाठक इस अंक को पढ़कर वेद के मर्म को समझकर अपने जीवन पर वेद का प्रभाव डालेगे। तथा जीवन वैदिक रीति नीति से चलाने का प्रयास करेंगे। आज इस प्रजातन्त्र की आंधी ने सत्ता प्राप्ति की होड़ में सब कुछ गड़बड़ा दिया है। फिर भी आर्य जन इस प्रचण्ड कोलाहल में कहीं वेद पाठ तथा वेद चर्चा कर सकेंगे ऐसी आशा है, विश्वास है।

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां की स्वर्ण जयन्ती —

इस वर्ष मार्च में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने का निर्णय पहले साल कर लिया गया था। जयन्ती की तैयारी के उपलक्ष्य में विद्यापीठ में दो छात्रावास बन चुके हैं। तथा स्नानागार भी बनने वाला है। जनता ने दिल खोलकर उदारता से सहयोग दिया है। जहां गुरुकुल के कार्यकर्ता धन संग्रह के लिए गए वहीं लोगों ने भरपूर सहायता की। शीघ्रतावश कुछ धन उस समय साथ साथ संग्रह न किया जा सका। अब दानी महानुभावो की सेवा में आचार्य विष्णुमित्र जी उपकुलपति जहां अपने सहयोगियों के साथ लिखने के बाद अवशिष्ट धन लेने पहुचे। वह उनकी सेवा में तुरन्त दिया जाना चाहिए। क्योंकि समय थोड़ा है तथा राशि काफी बड़ी है और घूमने वाले भी आचार्य जी अकेले हैं। यह हम सब का कार्य है। वे हमारे लिए ही कष्ट पा रहे हैं। तथा संस्था की सेवा में लगे हैं। शुभ समय हमेशा नहीं आते। यह आपका संस्था का स्वर्णिम युग है तथा आप स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं। फिर इस सुनहरी मौके में शिथिलता कैसी। ढिलाई क्यों। सुस्ती का काम कैसे। कुछ विचारिये, अपने देय भाग को देकर ही तृप्त न हो जाईये। अपितु कुछ औरों से दिलाइए। प्रेरणा दीजिये। और जिन महानुभावों ने धन देने का वचन दिया है उन सब से शीघ्र संग्रह कर गुरुकुल कार्यालय में पहुंचाइये। हरियाणे की एक कहावत है "जण जण की लाकड़ी एक जणे का बोझ।" आप सबके सहयोग से काम शीघ्र निबट सकता है सस्था की आवश्यकता को पूर्ति हो सकती है।

यह आप सब के प्रयत्न तथा सहयोग का ही फल है कि आपकी संस्था औं गुरुकुलों में सर्वाधिक छात्र हैं। कई संस्थायें धन होने के बाद भी बन्द हैं। उनके पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन हैं बैंकों में उनका धन है। पर कार्य कर्ताओं के अभाव में कई संस्थाओं के भवनों में उल्लू बोलते हैं। तथा कुछ मृतप्राय हैं। आपने सदा जोवन का सबूत दिया है। आप जीवित हैं सब प्रकार के वादों से दूर रख संस्था प्रेम सदा आपको इकट्ठा रखता है। आप सब इस स्वर्ण जयन्ती समारोह को सफल बनाने में कोई कसर न रखें।

वे लोग आगे बढते हैं जो इकट्ठे चलते हैं, जिनमें संगठन होता है, जहां सहन शक्ति होती है, जहां मन मुटाव नाममात्र को भी नहीं होता, न कोई पूर्वाग्रह होता है। न कोई पक्ष विपक्ष। केवल एक धारणा एक विचार एक प्रचार तथा एक ही ध्येय होता है अपने समाज को आगे बढ़ाने का। आज विगत अपने पचास बर्ष के इतिहास को ध्यान रख स्वर्ण जयन्ती महोत्सव को सफल बनावें।

भारत भाग्य ! जाग ऋतु आई

—सत्यकाम यादव, बी. ए. (आनर्ज) बी. एड.

सूर्य रश्मियां तुझे जगायें
विहग वृन्द तेरे गुण गायें
सुरभित शीतल चलीं हवायें
क्यों तेरी आंखें अलसाईं।
भारत भाग्य ! जाग ऋतु आई॥

धन-वैभव अंग्रेज ले गये
असभ्य-संस्कृति तुझे दे गये
और क्लर्की सिखा वे गये
दास-प्रवृत्ति क्यों मन भाई।
भारत भाग्य ! जाग ऋतु आई॥

भारत की थी महिमा न्यारी
सभ्य बनाई दुनिया सारी
आज भुलाकर गोता प्यारी
सोये हो क्यों कृष्ण कन्हाई।
भारत भाग्य ! जाग ऋतु आई॥

समाजवाद देख प्रिय मेरे
भूखे नंगे भाई तेरे
लगा रहे सड़कों पर डेरे
जिनका कोई नहीं सहाई।
भारत भाग्य ! जाग ऋतु आई॥

बेकारी बीमारी बनकर
खड़ी तुम्हारे सन्मुख तनकर
अनाचार हड़ताल उफनकर
ले आये स्वयं मंहगाई।
भारत भाग्य ! जाग ऋतु आई॥

भारत भाग्य ! नेत्र अब खोलो
ज्ञान-सलिल से लो मुख धोलो
तुम क्या नहीं कर सकते बोलो ?
तुम्हें बुलाती है अरुणाई।
भारत भाग्य ! जाग ऋतु आई॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप जानते हैं ?

—सुरेन्द्रकुमार नांदल, नौवीं डी०

क्या आप जानते हैं कि निम्नलिखित आवश्यक वस्तुओं का आविष्कार कब हुआ ?

* 1814 में फाऊंटेन पैन का आविष्कार हुआ।
* 1819 में सर्वप्रथम विमान उड़ा।
* 1826 में टैलीविजन का आविष्कार हुआ।
* 1827 में दियासिलाई का आविष्कार हुआ।
* 1842 में साईकल का आविष्कार हुआ।
* 1853 मे रविवार की छुट्टी आरम्भ हुई।
* 1875 में ऐक्सरे की मशीन का आविष्कार हुआ।
* 1876 में टैलीफोन का आविष्कार हुआ।
* 1880 में पैट्रोल का आविष्कार हुआ।
* 1881 में थर्मामीटर का आविष्कार हुआ।
* 1883 में सिनेमा का निर्माण हुआ।

विद्वान् बनने का स्वर्ण अवसर

पाश्चात्य सभ्यता के कुप्रभाव और बढ़ते हुए पाखण्ड एवं कुरीतियों को अनुभव करके महाविद्यालय गुरुकुल कालवा में नौकरी आदि के प्रपञ्च में न फंसने वाले विद्यार्थियों के लिये स्वर्ण अवसर है। इसमें विद्वान् गुरुओं की शरण में बैठकर केवल वेद प्रचार के लिये आजीवन ब्रह्मचारी रहकर वेद वेदाङ्ग पढ़ने का पूर्ण प्रबन्ध है। आर्य प्रणाली के अनुसार पूर्ण विद्वान् बन शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति प्राप्त करके राष्ट्र सेवा वैदिक संस्कृति और वैदिक धर्म की रक्षा के लिये प्रचार हेतु लगन वाले नौजवान जिनकी कम से कम योग्यता दसवीं पास स्कूल, आठवीं पास गुरुकुल या 18 वर्ष से बड़े वैराग्य वाले आचार्य महाविद्यालय गुरुकुल कालवा से सम्पर्क करें।

आर्य गुरुकुल कालवा जिला जीन्द (हरयाणा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *

१

संसार का कल्याण करने वाले गुण

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।

ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ ।। यजुर्वेद ६,२५

शब्दार्थ—(हृदेत्वा मनसेत्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा) तुझे सौहार्द के लिये, मननशील बनने के लिये, देवत्व प्राप्ति के लिये, सूर्य के आकर्षक, प्रकाशक आदि गुणों के लिये निर्मित करता हूं (इमं अध्वरं ऊधवं) इस हिंसा आदि दोषों से रहित विश्व यज्ञ को सदा ऊँचा रख। (दिवि देवेषु होत्रा यच्छ) दिव्यता में रहता हुआ देवों में होम अर्थात् शुद्ध विचार प्रदान करता रह।

1- जो मनुष्य दयालु है, अपने सुख दुःख के समान सब के सुख दुःख समझता है वही परिवार, समाज, देश तथा संसार का कल्याण करता है।

2- मननशील बन। विचारक बन। जो विचारकर कार्य करता है वह जीवन में कभी भूल नहीं करता है। ऐसा मनुष्य संसार का हितैषो होता है।

3- मानव में दैवी तथा आसुरी दोनों वृत्तियां होती हैं। आसुरी वृत्ति संसार का नाश करती है, दैवी वृत्ति संसार की वृद्धि करती है अतः जीवन में देवत्व धारण कर।

4- सूर्य के समान अपने जीवन को प्रकाशक, आकर्षक तथा तेजस्वी बना तभी संसार सजीव दिखलाई देगा।

5- इस विश्व यज्ञ को सदा सुगन्धित रख। प्रत्येक काम ऐसा करो जिससे इस संसार में शुभ कर्मों की सुगन्ध आती रहे। दुष्कर्मों की दुर्गन्ध से संसार को दूषित न कर, तभी संसार का कल्याण होगा।

6- स्वयं दैवी विचारों में रह तथा संसार में दैवी विचारों का प्रसार कर। दैवी विचार ही संसार को सुख तथा शान्ति को प्रदान करने वाले होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२

अपने दोषों को दूर करो

अपामीवामय विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायत ।
आरे देवा द्वेषो अस्माद्युयोतनोरुणः शर्मयच्छता स्वस्तये ।।

ऋग्वेद १०,६३,१२

(देवा: अमीवां अप विश्वां अनाहुतिं अप अरातिं अघायत दुर्विदत्रां अप)

हे देवो ! शारीरिक, मानसिक, आत्मिक रोगों को, समग्र अयज्ञमय जीवन को, अदानशीलता तथा अकर्मण्यता को, पापी की दुर्बुद्धि को दूर करो (अस्मत् द्वेषः आरे युयोतन) हमसे द्वेष भाव को शीघ्रता से दूर करो (नः स्वस्तये उरु शर्म यच्छत) हमारा कल्याण करने के लिये सुख तथा शान्ति प्रदान करो ।

1- शारीरिक, मानसिक, आत्मिक रोग जिसको लग जाते हैं उसका क्रमशः शरीर, मन तथा बुद्धि निर्बल हो जाता है। वह संसार में रहकर अपना ही भला नहीं कर सकता है औरों का तो वह क्या भला करेगा। अतः शरीर, मन, बुद्धि को नीरोग बनाओ।

2- जिसका जीवन यज्ञीय नहीं है अर्थात् जो विद्वानों, गुरुओं, माता-पिता आदि महानुभावों का आदर नहीं करता, जो उत्तम पुरुषों से मित्रता नहीं करता, जीवन में देने की इच्छा नहीं करता उसका जीवन व्यर्थ है।

3- अदान शीलता, कृपणता ये मानव जीवन को सामाजिक प्राणी नहीं रहने देते हैं। कंजूस पुरुष संसार के लिए कोढ के समान है। यह संसार कर्मभूमि है। जो यहां शुभ कर्म करता है उसका जीवन सार्थक है। जो शुभ कर्म नहीं करता वह पाप का भागी बनता है। अतः सदा कर्मठ तथा शक्ति के अनुसार दानशील बने रहो।

। वत्र है तो वह बुद्धि संसार का कल्याण करती है, यदि बुद्धि में अपवित्रता आ जाती है तो वह संसार का नाश करती है। अतः उचित है जो कल्याण चाहता है वह पापियों की विनाशकारिणी बुद्धि से सदा दूर रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5- संसार में द्वेष भाव अग्नि के तुल्य संसार को नष्ट भ्रष्ट कर देता है। जिससे जिसका द्वेषभाव होता है वह उसको सर्वथा ही नष्ट भ्रष्ट करना चाहता है। जो जिसका बुरा चाहता है वह उससे भलाई की आशा नहीं कर सकता है।

प्रभु ने इस संसार को बड़ा सुन्दर बनाया है। संसार में ऐसी सुन्दर वस्तुओं का उत्पादन किया है जिनका प्रयोग करके आनन्द प्राप्त होता है पर संसार में पैदा किया बैरभाव सर्वत्र अशान्ति तथा दुःख फैला देता है।

6- हम सदा प्रभु से निर्मित संसार में सुखी रहें, शान्त रहे, आनन्दित रहें। जब प्रभु द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चला जाता है तब सर्वत्र सुख शान्ति और आनन्द की वर्षा होती है।

३

उत्तम पुरुष की पहचान

आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवास्तिष्ठाविचाचलिः।
विश्वस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मात्वद् राष्ट्रमधि भ्रशत्॥

यजुर्वेद १२.११

(त्वा आ अहार्षम्) मैंने तुझे ग्रहण कर लिया है (अन्तः अभूः) तू मेरा अन्तरंग हितैषी बन गया है (ध्रुवः अविचाचलितिष्ठ) ध्रुव और अपने लक्ष्य से न हटने वाला बनकर यहां ठहर (त्वा सर्वाः विशः वाञ्छन्तु) तुझे सब राष्ट्र या देश की जनता चाहती रहे (त्वत् राष्ट्रं मा अतिभ्रशत्) तेरे जीवन से इस राष्ट्र का पतन न हो परन्तु तेरे जीवन से यह राष्ट्र उन्नत होता रहे।

1- ऐसा जीवन बनाओ जिससे प्रजा आपको प्राप्त करने की इच्छा करे। आपकी संगति करके अपने को सफल बनाये। वह आपके जीवन से प्रेरणा लेके आगे बढ़ती रहे।

2- संसार से इतना प्रेम कर कि संसार तुझे अपना अन्तरङ्ग मित्र या हितैषी समझे। जो समाज के लिये, देश के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देता है प्रजा उसे अपना समझती है। ऐसे पुरुष के विषय में महात्मा तुलसीदास ने कहा है—

तुलसी जब जग में भयो जग हंसे तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो तुम हंसो जग रोय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3- जिस शुभ काम को करने का तुमने निर्णय लिया है उसको पूर्ण करने के लिए ध्रुवता तथा स्थिरता रखनी चाहिए। जिस समय तक मानव की कष्ट सहने की आदत नहीं बन जाती तब तक उसमें ध्रुवता तथा स्थिरता नहीं आने पाती है। सुख दुःख में समभाव से रहकर कार्य करने की शक्ति से ही ध्रुवता तथा स्थिरता आती है।

4- ऐसा तेरा आचार, विचार, उच्चार तथा कार्य हो कि संसार के सारे प्राणी तेरी अभिलाषा करें। जब कभी कोई संकट आवे या आवश्यक काम होवे या शुभावसर होवे तब मनुष्य तेरी इच्छा या चाह करते रहें।

5- तेरा आचार विचार ऐसा उत्तम हो कि जिस परिवार, समाज तथा राष्ट्र में तेरा निवास हो वह परिवार, समाज, राष्ट्र आगे बढ़ता रहे।

उत्तम पुरुषों के योग से संसार उत्तम बनता है। एक नीतिकार ने कहा है:—

हीयते हि मतिस्तात हीनैः सह समागमात्।
समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम्॥

हीनों के सम्पर्क से हीन, बराबर वालों के संसर्ग से बराबर तथा उत्तमों के मेल से उत्तम बुद्धि या उत्तम जीवन होते हैं।

४

मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्य

सीद त्वं मातुरस्या उपस्थे विश्वान्यग्ने वयुनानि विद्वान्।
मैनां तपसा मार्चिषाभि शोचीरन्तरस्यां शुक्रज्योतिर्विभाहि॥
यजु० १२,१५

(अग्ने त्वम् अस्याः मातुः उपस्थे सीद) हे नायक या ज्ञानिन् तू इस मातृभूमि की गोद में स्थित हो (विश्वानि वयुनानि विद्वान्) प्रत्येक प्रकार के ज्ञान, चेष्टा, गति आदि को जान (एनां तपसा अर्चिषा मा अभिशोचीः) इस मातृभूमि को तप से तथा ज्योति से संतप्त न कर (अस्यां अन्तः शुक्र ज्योतिः विभाहि) इस मातृभूमि में रहके शुद्ध जीवन के प्रकाश से प्रकाशित रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1- जिस प्रकार बालक माता की गोद में बैठ के अपने को आनन्दित मानता है इसी प्रकार मनुष्य मातृभूमि की गोद में बैठ के आनन्दित माने। माता के लिये जिस प्रकार बालक में प्यार तथा श्रद्धा होती है उसी प्रकार मातृभूमि के लिये सबको प्यार होना चाहिये। यदि मातृभूमि का अपमान होता है तो माता का अपमान समझकर उसकी रक्षा के लिये सदा तैयार रहना चाहिए।

2- जो मातृभूमि का भक्त है उसे मातृभूमि पर होने वाली प्रत्येक गतिविधि से परिचित होना चाहिये। मातृभूमि में विज्ञान आदि प्रत्येक का विस्तार करना चाहिये। मातृभूमि जब आध्यात्मिक तथा भौतिक ज्ञान से युक्त होती है तभी वहां सफलता होती है।

3- मातृभूमि में या देश में जब तक तपस्वी तथा तेजस्वी पुरुष रहते हैं तब तक मातृभूमि का कोई अनिष्ट नहीं होता है। जब तप, तेज, शक्ति नष्ट होने लगती है तब मातृभूमि भी निर्बल होने लगती है। अतः प्रत्येक नागरिक को तपस्वी, तेजस्वी बनकर मातृभूमि की रक्षा करनी चाहिये।

4- जिस भूमि में रहने वालों का आचरण, जीवन पवित्र होता है वह भूमि उन उत्तम आचरण वाले पुरुषों के कारण प्रकाशित प्रतीत होती है।

प्राचीन काल में भारत के पुरुष अपने तथा अपने बालकों के आचरण की ओर बहुत ध्यान देते थे। माताएं अपने बालकों के आचरण बनाने के लिए अपना जीवन अर्पण करती थीं तभी बालक उत्तम चरित्र वाले बनकर अपने देश तथा जाति का कल्याण करते थे। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश, चन्द्र की ज्योति जगमगाती रहती है इसी प्रकार उनके जीवन जगमगाते रहते थे।

५

महान् बनने के उपाय

हंस शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषद तिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद् व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

यजु० १२,१४

(हंसः शुचिसत् वसुः अन्तरिक्षसत् होता वेदिसत् अतिथिः दुरोणसत्)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू दुष्टता का नाशक, पवित्रता में वर्तमान, संसार को बसाने वाला, अन्तरिक्ष में वर्तमान सूर्य के समान प्रकाशित तथा चन्द्र के समान ज्योतिष्मान्, सत्य ज्ञान को लेने वाला तथा देने वाला, पवित्र वेदि के समान जीवन वाला, संसार के कल्याण के लिए सर्वत्र विचरने वाला, घर के कलहों को दूर करने के लिये उनमें जाने वाला है (नृसत् वरसत् ऋतसत् व्योमसत् अप्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम् बृहत्) श्रद्धा के कारण सब मनुष्यों में बसा हुआ, श्रेष्ठ पुरुषों से वरणीय, सदाचार में स्थित, हृदय मन्दिर में विद्यमान, संसार में रहकर भी कमलपत्रवत् अलगाव रखने वाला, ज्ञान विज्ञान का प्रकाशक, सत्य से पूर्ण, बादल की वर्षा के समान ज्ञान का वर्षक या पर्वत की ऊँचाई के समान उच्च चरित्र वाला, अनुशासन के महत्व को समझने वाला है।

दुष्टता का अर्थ है दुष्ट जनों का व्यवहार, सज्जनता का अर्थ सज्जनों का व्यवहार, दुष्टता से दुःख सज्जनता से सुख होता है अतः सदा स्वयं दुष्ता से दूर रहो तथा औरों को दुष्टता से बचाओ।

मन, वचन, कर्म से जो पवित्र है, जो शरीर से पवित्र है वही पवित्र है अतः सदा पवित्रता में रहने का अभ्यास करो।

संसार को बसाने वाला बनो उसको उजाड़ने वाला नहीं। जो जनता की सेवा की भावना से काम करते हैं वे सब वसु होते हैं।

अन्तरिक्ष में सूर्य, चन्द्र अपने प्रकाश तथा ज्योति से सारे संसार को प्रकाशित तथा ज्योतिष्मान् करते हैं उसी प्रकार मानव भी अपने जीवन से सूर्यादि के समान प्रकाश तथा ज्योति फैलावे। सत्य का आदान प्रदान करके संसार को असत्याचरण से छुड़ाकर उसमें सत्य का प्रवेश करावे जिससे संसार का कल्याण हो।

यज्ञ वेदि को जिस प्रकार पवित्र करके उसमें उत्तम हव्यों का प्रक्षेपण किया जाता है इसी प्रकार इस जीवन वेदि में उत्तम विचारों का प्रक्षेपण करो।

जिस प्रकार उत्तम विद्वान् संन्यासी संसार में उत्तम विचारों को फैलाने के लिये सर्वत्र विचरता है इसी भावना से तुम भी विचरण करो।

प्रत्येक गृहस्थी के घर को अपना घर समझते हुए उन घरों के कलहों को दूर करने के लिए उनके घर में जा तथा वहां शान्ति की स्थापना करो।

साधारण जन से लेके बड़े से बड़े पुरुषों को अपना समझ तथा उनके जीवन का सुधार करने के लिये प्रयत्नशील रहो।

श्रेष्ठ पुरुषों में बैठो, उनकी संगति करो जिससे तेरे जीवन में निर्बलता अशौचत्व आदि दुर्गुण न आने पावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाचार को फैलाने के लिये प्रयत्नशील रह। सदाचार के न फैलने से दुराचार फैल जाता है। जिस तरह सदाचार संसार को बसाता है दुराचार इसके विपरीत उजाड़ने वाला है।

हृदय मन्दिर में प्रवेश कर जिससे तुझे अपने गुण दोषों का ज्ञान हो। अन्त: प्रविष्ट होके दोषों का त्याग कर तथा गुणों का आधान अपने हृदय मन्दिर में कर।

जिस प्रकार कमल का पत्ता जल में रहता हुआ भी जल से भिन्न दीखता हुआ अपनी सत्ता बनाए रखता है इसी प्रकार संसार में रहता हुआ भी अनासक्ति से यहां रह इससे तुम सदा प्रसन्न रहोगे।

संसार में ज्ञान का, विज्ञान का जो प्रकाश करते हैं उसे जो फैलाते हैं वे ज्ञानी या विज्ञानी होते हैं इसी प्रकार तुम भी ज्ञान विज्ञान के फैलाने में सतत प्रयत्नशील रहो।

पहाड़ कितना ऊँचा होता है उसी प्रकार तुम्हारा जीवन भी ऊंचा या महान् हो या जिस प्रकार जल वर्षा से बादल पृथ्वी को हरा भरा कर देता है इसी प्रकार विचार दान से पृथिवी लोकस्थ प्राणियों को हरा भरा कर।

अनुशासन से व्यक्ति, परिवार, समाज, देश, तथा संसार की रक्षा, सुरक्षा होती है इसलिये तुम स्वय भो अनुशासन का पालन करो तथा अन्य प्राणियों को भी अनुशासन में चलने के लिए प्रेरणा करो।

६

वीर पुरुष की भावना

अहमस्मि सहमानः उत्तरो नाम भूम्याम्।

अभिषाडस्मि विश्वषाढाशामाशां विषासहिः॥

अथर्व १२,१,५४

(अहं सहमानः अस्मि) मैं सहमान हूं अर्थात् मैं सहनशील बनूं। मेरा (नाम भूम्यां उत्तरः) नाम संसार में उत्कृष्ट या ऊँचा हो। (अभिषाट् अस्मि) मैं सामने रहकर सुख दुःख को सहने वाला हूं। (विश्वषाट् अस्मि) मैं विश्व विजेता बनूं (आशां आशां विसासहि) मैं प्रत्येक दिशा को विजय करने वाला बनूं। मैं प्रत्येक की शुभ आशा या अभिलाषा को पूर्ण करने वाला रहूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1- वीर पुरुष जो संसार में रहकर उत्तम काम करना चाहता है उसका पहला कर्त्तव्य है वह सहनशील बने। काम करते समय कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो शुभ काम करने वाले के मार्ग में भी रुकावट डालते हैं उस समय वीर पुरुष मानापमान, सुख-दु:ख, हानि लाभ, जय पराय चिन्ता किये बिना सहनशील बनकर उस काम को अविचल भाव से करता रहे।

2- संसार में रहके मनुष्य अपना नाम निकम्मों की श्रेणी में भी रखता है तथा अच्छे पुरुषों की श्रेणी में भी रखता है। वेद ने कहा कि हे मानव! तू निकृष्ट कर्म करने नहीं आया है उत्कृष्ट कर्म करने आया है। उत्कृष्ट कर्म करके अपने नाम को ऊँचा कर।

3- यदि कोई संकट या विपदा तुझ पर आती है, उसका मुकाबला सामने रहकर कर। उससे भयभीत मत हो। बुराई का, विपत्ति का मुकाबला सामने होकर करने से वह जल्दी दूर होती है। डरने से, भयभीत होने से वह उनको बहुत भयाक्रान्त करती है। वीर पुरुष विपत्ति का स्वागत करते हैं उसको नमस्कार करके बुलाते हैं।

4- संसार की सेवा करके, संसार के सामने कल्याणकारी वचन करके विश्वविजेता बन। किसी को डराने से, लूटने से, अत्याचार करने से मानव विश्वविजेता नहीं बनता, मानव मात्र की सेवा करने से विश्वविजेता बनता है।

5- प्रत्येक दिशा को विजयी कर। किसी भी कोने में तुझे पराजित करने वाला न रहे। प्रत्येक दिशा तुझ पर आनन्द की वर्षा करे। धर्मात्माओं को, दीन दुखियों की, महापुरुषों की उत्तम अभिलाषा या आशा को पूर्ण करने वाला बन।

७

वृद्ध का लक्षण

ये अग्ने नेरयन्ति ते वृद्धा उग्रस्य शवस:।
अप द्वेषो अप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिरे॥

ऋ० ५,२०,२

(अग्ने वृद्धा: ते ये न ईरयन्ति) हे ज्ञान सम्पन्न! वे ही वृद्ध कहलाने के अधिकारी हैं जो भय, संकट, निर्धनता आदि के आने पर भी कांपते नहीं हैं, घबराते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हैं (ये उग्रस्य शवस: अन्यव्रतस्य द्वेष: अपसश्चिरे) जो कठोर, असहनशील, विरोधी के भी द्वेष को दूर करने में समर्थ हैं (ये ह्वर: अपसश्चिरे) जो अपने जीवन से तथा दूसरों के जीवन से कुटिलता दूर करने वाले हैं।

1- जब तक मानव पर कोई विपत्ति या आपत्ति नहीं आती है तब तक सारे पुरुष ही वीर होते हैं। विपत्ति आने पर भी जिनके कार्यक्रम में कोई अन्तर न आवे ऐसे पुरुष वृद्ध कहलाने के अधिकारी हैं। राम की तरह जो राज्य प्राप्ति पर, वन गमन पर समभाव रहके व्याकुल नहीं होते हैं।

2- जो कठोर तथा किसी की बात को न मानने वाले अधम पुरुष के द्वेषभाव को भी अपनी योग्यता तथा गुणों से दूर करते हैं। द्वेष करना बुरा है, द्वेष भाव को दूर करना उत्तम है। जो मानव मात्र के द्वेष तथा दोष को दूर करने में कटिबद्ध रहते हैं ऐसे पुरुष ही वृद्ध कहलाने के अधिकारी हैं।

3- कुटिल कुटिलता करके अपने को धन्य तथा चतुर मानते हैं पर सरल स्वभाव के पुरुष कुटिलता को नीचता तथा अध:पतन मानते हैं। जो पुरुष कुटिलता को नष्ट कर, सरलता, सज्जनता, धर्मात्मा आदि को उत्पन्न करने वाले हैं वे वृद्ध कहलाते हैं।

८

आत्मज्ञान के लाभ

वृक्षे वृक्षे नियता मीमयत् गौस्ततो वय: प्रपतान् पुरुषाद: ।
अथेदं विश्वं भुवनं भयात् इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत् ॥

ऋ० १०,२७,२२

(वृक्षे वृक्षे गौ: नयता) वृक्ष के समान मानव शरीर में आत्मज्ञान निहित है यदि वह मानव साधना द्वारा (मीमयत्) गतिशील होवे यदि वह उसको जगाने के लिये प्रयत्नशील होवे (तत: पुरुषाद: वय: प्रपतान्) आत्मज्ञान हो जाने से पुरुष को खाने वाले उसके जीवन को नष्ट करने वाले काम विकार आदि पक्षिगण वहां से उड़ जाते हैं, भाग जाते हैं। (अथ इदं विश्वं भुवनं भयाते) इसके बाद यह विकार वासना रूपी लोक ऐसे आत्मज्ञानी से भयभीत रहता है (इन्द्राय सुन्वत्) इन्द्रियजेता पुरुष को ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होती है (ऋषये च शिक्षत्) जिज्ञासु पुरुषों के लिये वह शिक्षा देता है या प्रेरणा का स्रोत बन जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1- प्रत्येक मानव अपने जीवनकाल में अपनी आत्मशक्ति का जागरण कर सकता है। यदि वह उसको जगाने के लिये प्रयत्नशील हो जावे। संसारस्थ मानव बाहर की वस्तुओं के दर्शन स्पर्शन में अपने जीवन को लगाते हैं यदि वे आत्मनिरीक्षण करें तथा साधना करें तो उनको आत्मज्ञान होता है जिससे उनको आनन्द की प्राप्ति होती है।

2- जब मानव आत्मज्ञानी हो जाता है तो काम क्रोध लोभ मोह आदि पक्षिगण जो इस मानव मन्दिर में डेरा लगाये बैठे हैं वे उड़ जाते हैं क्योंकि उनके निवास का इस मन्दिर में स्थान नहीं रहता है।

3- भोग से रोग आते हैं। यह भोगी लोक दूर हो जाता है। भोगी पुरुष भी ऐसे पुरुष के समीप आके योगी बन जाते हैं। वासनाएं उसके पास फटकने नहीं पाती हैं।

4- यह मानव इन्द्रियों का स्वामी बन जाता है तथा इन्द्र कहलाने का अधिकारी हो जाता है तब उसे प्रभु के अमृत रस का स्वाद आने लगता है उसमें वह मस्त हो जाता प्राप्तव्य को प्राप्त कर लेता है।

5- जिज्ञासु लोग ऐसे इन्द्र के पास उत्तम-उत्तम उपदेश लेने के लिए उपस्थित होते हैं। उससे प्रेरणा लेते हैं। इस संसार में ऐसे पुरुषों के रहने से सुख तथा शान्ति की वर्षा होती है।

९

आत्म निरीक्षण करो

अहं सो अस्मि यः परासुते वदामि कानिचित्।
तं मा व्यन्त्याध्यो वृको न तृष्णजं मृगम्॥

ऋग्वेद १,१०५,७

(अहं सः अस्मि य परासुते) क्या मैं वही हूँ जो अब से पिछले समय में था (वदामि कानिचित्) किन्हीं व्यर्थ की बातों को तो मैं अपने मुख से नहीं बोलता हूं (तं मां आध्यः व्यन्ति) उस मुझको मन की व्यथायें, चिन्तायें तो नहीं सताती हैं (रोदसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्य मे वित्तम्) सतोगुणी वृत्ति होने पर अपने द्वारा किये गये चिन्तन किये गये दोषों पर रुदन करने वाले मन और बुद्धि ! तुम इसको भली प्रकार जानो।

1- हम दिन भर सांसारिक कार्य में व्याप्त रहते हैं। शरीर के तथा परिवार के कार्यों में व्यस्त रहते हैं। कई बार शरीर पोषण की लगन में अनेक गलतियां कर जाते हैं यदि उनको दूर करने का प्रयत्न न किया जावे तो वे गलतियां बहुत अधिक मात्रा में बढ़ जाती हैं। अतः प्रतिदिन सायंकाल जब शय्यासीन होवे तो चिन्तन करे कि मैं क्या वही हूं जो पहले था अर्थात् उत्तम था। मुझसे वे जीवन में भूलें तो नहीं हो रही हैं जो मुझे पतन की ओर ले जाने वाली हैं।

2- संसार में सुख से रहने के लिये वाणी की पवित्रता बहुत आवश्यक है। यदि आपके मुख से अशोभन, असत्य शब्द निकलते हैं तो आप अपनी वाणी में सत्य का, सुन्दरता का संचार कीजिये। सदा ध्यान रखो कि आपकी वाणी में सत्य हो, मधुरता हो। जितना आपकी वाणी में सत्य का समावेश होगी उतनी हो मधुरता वाणी में आती जावेगी। कठोरता में पूर्ण सत्य नहीं होता है।

3- आत्म-चिन्तन के समय एक बात की ओर ध्यान रखो कि कहीं आपका चिन्ता करने का स्वभाव तो नहीं बन गया है। जिनका चिन्ता करने का स्वभाव बन जाता है। वे सदा दुःखी रहते हैं। उनको अपना भविष्य सदा अन्धकारमय दिखाई देता है। उनको आगे क्या होगा यह चिन्ता सदा सन्तप्त रखती है। याद रखिये यह सोचने या चिन्ता करने का आपका काम नहीं है कि आगे क्या होगा। आपके इस लोक तथा परलोक के कर्म प्रभु की व्यवस्था के अनुसार इसका फल भुगतायेंगे। आप तो शुभ कर्म करते रहिये। कर्म करने का ही आपका अधिकार है।

4- जब मन में, बुद्धि में, सतोगुणी बुद्धि का समावेश हो जाता है तब चिन्ता के द्वारा भावना के द्वारा मनुष्य को यह अनुभव होता है कि ये कर्म तुझ से निकृष्ट हुए हैं। उस समय उन किये गये निकृष्ट कर्मों पर मानव को जो पश्चाताप या दुःख होता है, उसी का नाम रुदन है। अतः मन बुद्धि की उस दशा को रुदन दशा कहा है। जब यह दशा हो जाती है तब मानव पापाचार से सर्वथा मुक्त होके सदाचार के मार्ग में प्रवृत्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०

मानवताग्नि को प्रदीप्त करो

उद्बुध्यत्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीडाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः ॥
ऋ० १०,१०१,१

(समनसः सनीडाः बहवः सरवायः उद्बुध्यत्वम्) शुद्ध पवित्र मन वाले, समान स्थान पर रहने वाले, अनेक मित्रो ! सजग हो जाओ (अग्निं सम् इन्धवम्) मानवता रूपी अग्नि को अच्छी प्रकार प्रदीप्त करो (दधिक्रां अग्निं देवीं उषसंच वः इन्द्रावतः अवसे निह्वये) अपने आवृत पर घूमने वाली, लोकों को धारण करने वाली सूर्य रूपी अग्नि को तथा दिव्य उषा को तुम आत्मवान् मनुष्यों की रक्षा के लिये बुलाता हूं।

1- जब तक परिवार में, समाज में, देश में मन की दशा से एक दूसरे के उत्थान में संलग्न है तो सारे मानव समनस माने जाते हैं। सारे मानव पृथिवी रूपी घौंसले में रहते हैं अतः सारे सनीडा हैं। अनेक संख्या में इस भू पर मित्र बनकर रहते हैं इसी लिये सरवायः हैं। उत्तम मन वाले होकर, अपने को पृथिवी माता का पुत्र समझकर परस्पर मित्र भाव बनाकर जागरण करो, ज्ञानी बनो तथा बनाओ, ज्ञान विज्ञान से अपने को ओत प्रोत करो।

2- मानवता से संसार में रहो, पशुता, दानवता का सर्वथा परित्याग करो। मानवता रूपी अग्नि को इतना प्रदीप्त करो जिससे दानवता रूपी घास सर्वथा दग्ध हो जावे। जो मानव बनकर मानवता को नहीं अपनाता उसका जीवन बेकार है, व्यर्थ है।

3- जिस प्रकार सूर्य अपने आवृत्त पर सतत घूमता रहता है तथा निःस्वार्थ भावना से प्रकाश देता रहता है, सौर लोकों का आकर्षण से सम्मान करता है उसी प्रकार प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपने नियम के आवृत्त में निःस्वार्थ भाव से कार्य में सदा रत रहे। अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को प्रकाशित करता रहे। जीवन में ऐसा आकर्षण हो कि गुणों के कारण उसकी ओर संसार आकृष्ट होता रहे।

4- दैवी उषा से अभिप्राय है प्रभु का प्रकाश, प्रभु का दर्शन। जो मानव संसार में रह के प्रभु के दर्शन के लिए प्रयत्नशील नहीं होता है उसका मानव जीवन में आना व्यर्थ है। अतः दैवी उषा रूप ज्ञानाग्नि की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११

अनासक्त रहकर प्रजा की सेवा कर

इयं ते यज्ञिया तनूरपो मुञ्चामि न प्रजाम् ।
अंहोमुच: स्वाहाकृता: पृथिवीमाविशत पृथिव्या सम्भव ।।

यजुर्वेद ४,१३

(ते इयं तनु यज्ञिया) तेरा यह जीवन यज्ञ के लिये श्रेष्ठ कर्म करने के लिये है (अप: मुञ्चामि न प्रजाम्) प्राणों को छोड़ सकता हूं परन्तु लोक सेवा को नहीं छोड़ूंगा (अंहोमुच: स्वाहाकृता:) पाप त्यागी और स्वाहाकारी अर्थात् बलिदान की भावना लेकर (पृथिवीं माविशत) पृथिवी पर प्रवेश करो (पृथिव्या: संभव) पृथिवीमा-विशत) पृथिवी पर प्रवेश करो (पृथिव्या: लंभव) पृथिवीस्थ लोगों के साथ मिलकर चल ।

1- मानव जीवन को सब योनियों में श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि इसको प्राप्त कर मानव भी भोगों में ही लिप्त रहे तो मानव योनि से कोई लाभ नहीं हो सकता है। अत: मानव योनि में आकर सदा उत्तम कर्म करने में संलग्न रहना चाहिये। उत्तम कार्य करने वाला संसार में सदा प्रसन्न तथा सुखी रहता है।

2- जो सेवा करता है वह सेवा कराता है। जो पाप करता है वह पाप का फल अवश्य भोगता है। धर्म करने वाला धर्म के फल को अवश्य प्राप्त करेगा। माता पिता पुत्र की सेवा करते हैं। पुत्र आगे चलकर माता पिता की सेवा करता है। प्रजा राजा की सेवा करती है तो राजा को भी दूसरे प्रकार से प्रजा की सेवा करनी ही पड़ती है। जो महामानव होते हैं वे प्रजा के दु:ख को अपना दु:ख मानकर उसके दु:ख को दूर करने का प्रयत्न करते हैं। अत: वेद ने स्पष्ट शब्दों में कहा चाहे तुझे जन हानि, मान हानि अथवा प्राण हानि भी उठानी पड़े तो भी तू प्रजा की सेवा करना न छोड़। इस परम्परा का सदा संचालन रख।

3- जो दूसरों की सेवा करना चाहता है उसे बलिदान या अर्पण होना पड़ता है। माता स्वयं दु:ख उठाकर पुत्र की रक्षा के लिये अपने को अर्पण करती है। समाज सेवक का परम कर्त्तव्य है वह स्वयं को बलिदान देने वाला मानकर सेवा करे। सेवा करते हुए जिसे अभिमान आ गया उसको कभी सेवा का फल नहीं प्राप्त होता। अभिमान ऐसा शत्रु है जो मनुष्य के प्रत्येक कार्य में रुकावट डालता है। अत: जीवन में निश्चय कर कि सेवा के लिए बलिदान तथा निरभिमानता की आवश्यकता है।

4- यदि तुझे कोई उत्तरदायित्व दिया जाता है उसको छोड़कर मैदान से मत भाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार से कोई भाग नहीं सकता। जो कहते हैं कि उन्होंने संसार को छोड़ दिया है यह उनका केवल भुलावा है। संसार के प्रत्येक कार्य को करता रह पर अनासक्त भाव से उसे कर तब तुझे सुख की प्राप्ति होगी।

१२

अमृत मन का साथ शिव संकल्पवान है

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥
यजु० ३४,४

(येन अमृतेन इदं सर्वं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहतिम्) जिस अमृत मन से यह सब भूत, वर्तमान, भविष्यत्काल परिगृहीत हैं (येन सप्त होता यज्ञस्तायते) जिस मन से सात होताओं वाला यज्ञ विस्तृत होता है (तत् मे मनः शिव संकल्पं अस्तु) वह मेरा मन शिव संकल्प वाला होवे।

1- मन के दो रूप हैं एक मृत दूसरा अमृत। मृत मन के होने पर निराशा, अनुत्साह, अकर्मण्यता, निर्बलता, दुःख सब ओर दिखलाई देता है। प्रत्येक काम उसे कठिन दीखता है। संसार उसे अशान्ति से भरपूर दिखाई देता है।

अमृत मन, आशा, उत्साह, उमंग, शान्ति, सुख को सब ओर देखता है। उसे सब ओर से संसार हरा भरा दिखाई देता है। जिस काम को वह करना चाहता है उस काम को पूर्ण करके ही छोड़ता है। उसके मार्ग में कोई रुकावट नहीं डाल सकता। जो रुकावट डालना चाहता है उसके वेग के सामने उसे हटना पड़ता है।

2- मृत मन के लिये न भूतकाल है, न वर्त्तमान काल है, न भविष्यत्काल है। मुर्दे के लिये कोई वस्तु होती ही नहीं है जीवित के लिये सब कुछ होता है। जीवित ही जीवन डालता है मृत क्या किसी को जीवन देगा। अतः वेद मन्त्र में कहा है जिन लोगों ने अपने मन को अमृत बना लिया है उनको ही तीनों कालों की वस्तुएं प्राप्त होती है। उन्होंने ही अपने जीवनकाल में तीनों कालों में सुख दुःख का अनुभव किया है।

3- मानव का जीवन यज्ञ रूप है। जिस अमृत मन से यज्ञ रूपी जीवन का पांच होताओं अर्थात् (पांच ज्ञानेन्द्रिय, बुद्धि तथा चित्त) की सहायता से विस्तार होता है। पाँचों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानेन्द्रियों, बुद्धि तथा चित्त के साथ जब ग्रमृत मन का संयोग हो जाता है तब इस यज्ञ का विस्तार होता है।

यदि ज्ञानेन्द्रियों ग्रौर बुद्धि, चित्त के साथ ग्रमृत मन का संयोग हट जाता है तब ये मृत के समान रहकर कुछ नहीं कर पाती। ग्रनेक उदाहरण सम्मुख हैं। जब जब ग्रमृत मन ने मानव का साथ छोड़ दिया तब तब सर्वस्व संसार का लुट गया।

4- ग्रत: वेद ने कहा कि मन को सदा शिव संकल्पवान रखो। उसमें ग्रशिव संकल्प प्रविष्ट न होने पावे। जब नीरोग शरीर में रोग ग्रा घुसते हैं तब सारा शरीर ग्रस्त व्यस्त हो जाता है इसी प्रकार ग्रशिव संकल्प मानव जीवन को कलंकमय बनाकर दूषित कर देता है।

१३

महान् पुरुष की भावना

जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनोमन्यु: स्वराड्भाम:।
मोदा: प्रमोदा: ग्रंगुलीरंगानि मित्रं मे सह:॥

यजु० २०,६

(मे जिह्वा भद्रं वाङ्मह: मन: मन्यु: स्वराट्भाम:) मेरी जिह्वा कल्याण करने वाली हो, मेरी प्रतिज्ञा महान् हो, मेरा मन शुभ संकल्पवान् हो, मेरा मन ग्रात्मा ज्ञान से प्रकाशित हो (ग्रंगुली: मोदा: ग्रंगानि प्रमोदा:) मेरी ग्रंगुलियां प्रसन्नता का कार्य करने वाली हों मेरी कर्मन्द्रियां भी स्वस्थ तथा सुन्दर रहें (मे सह: मित्रम्) धैर्य जीवन में मेरा मित्र रहे।

1- मेरी जिह्वा की सहायता से जो वचन निकले वह लोक के कल्याण करने वाला हो। जिह्वा से निकला हुग्रा ग्रशोभन शब्द संसार में ग्रशान्ति तथा दु:ख फैला देता है। मेरी जिह्वा चटोरी न हो इस शरीर में वही भोजन डाले जो इस शरीर का पालन पोषण कर सके। मेरी जिह्वा सर्वथा मेरे बस में हो।

2- मैं महान् प्रतिज्ञा करूँ। मानव जीवन महान् कार्य करने के लिये ही मिला है जो इस जीवन से निकृष्ट कार्य करता है वह इस जीवन की महत्ता को नष्ट करने वाला है। जिस महान् कार्य को पूरा करने का सकल्प किया है उसे पूर्ण करने के लिए सारी सामर्थ्य लगानी चाहिये।

3- मेरा मन सदा शुभ संकल्पवान् हो। मेरे मन को मेरी ग्रोर से ग्रशुभ संकल्प करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कभी आज्ञा ही न मिले। अशुभ संकल्पवान् मनुष्य को बहुत हल्का तथा गर्हित कर देता है अतः जब कभी मन अशुभ संकल्प करे उससे कहो कि हे मन! तू शुभ संकल्पवान् बन।

4- आत्मा सदा ज्ञान से प्रकाशित रहे। ज्ञान से प्रकाश होता है या ज्ञान को ही प्रकाश का रूप समझें। जिस प्रकार प्रकाश के होने पर ठोकर नहीं लगती इसी प्रकार आत्म ज्ञान होने पर मानव कभी नहीं भटकता है।

5- मेरी अंगुलियों से, मेरे अंगों से, मेरी कर्मेन्द्रियों से वे काम हों जिन से संसार प्रसन्न हो। अपने मन में भी प्रसन्नता का वास हो। अशुभ कार्य करने से इन्द्रियां भी आत्मा के संयोग से संतप्त रहती हैं।

6- धैर्य संसार में सब से बड़ा साथी है। जिस मनुष्य ने धैर्य को अपना मित्र बना लिया है उसके लिये सुख दुख, हानि लाभ, जीवन मरण समान होते हैं। सांसारिक पुरुषों से या दैवी विपदाओं से व्याप्त होने पर भी वह उनसे विचलित नहीं होता है अतः जीवन में सदा धैर्य का आश्रय ले।

१४

महान् पुरुष की पहचान

स तुर्वणिर्महां अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः।
येन शुष्णं मायिन मायसो मसेदुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ॥

ऋग्वेद १,५६,३

(सः महान्) वह पुरुष महान् है जो (तुरवनि, पौंस्ये अरेणुः, गिरेः भृष्टिः न शवः तुजा भ्राजते) जो शीघ्रता से आदर या सहायता करने वाला है, जिसका पुरुषत्व या यौवन पवित्र हो, जो पहाड़ की वर्षा की तरह बल को त्याग से प्रकाशित करता है (येन शुष्णं मायिनं आयसः दुध्र) जिस बल के द्वारा सुखाने वाले मायीका लोह से मुक्त करके उद्धार करता है और जो (आभूषु दामनि निरामयत्) ऐश्वर्यों में तथा दमन में लगातार रमण कराता है।

1- दुःखिया के दुःख को देखकर धर्मात्माओं को दुःखी देखकर उनके दुःख को दूर कर जो उनकी सहायता करता है, उनको कष्ट से बचाकर जो उनका आदर करता है वह संसार में महान् है।

2- काम, क्रोध, लोभ, मोह ये संसार में मानव को किसी भी क्षण असावधान होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पतित कर सकते हैं, इनमें काम सबसे बड़ा शत्रु है जिसके विषय में गीता में कहा है—

काम एष क्रोध एष रजो गुण समुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम् ॥

काम तथा क्रोध मानव के बड़े शत्रु हैं इनकी ओर से सावधान रह। इनमें भी काम प्रबल है। जो पुरुषत्वकाल या यौवनकाल में अपने जीवन पर अनाचार का धब्बा नहीं लगने देता है वह महान् है।

3- जिस प्रकार पहाड़ वर्षा होने पर जल को अपने पास न रखकर उस जल को सर्वत्र बहाकर भू भाग को हरा भरा कर देता है इसी प्रकार जो मानव शरीर बल, मनोबल, बुद्धिबल, परिवार बल, समाज बल को प्राप्त कर उस बल को संसार के कल्याण के लिए प्रयुक्त करता है, उससे निर्बलों की सहायता करता है, बुद्धिहीनों को बुद्धि देता है, मनोबल से पतित लोगों को मनोबल देकर उनको शक्ति से भरपूर करता है वह महान् है।

4- जो मनुष्य धन वैभव को प्राप्त कर उसका भोग तो करता है पर उसमें लिप्त नहीं होता है, जनक की तरह राज्य का कार्य करता हुआ अनासक्त भाव से रहता है वह महान् है।

जो अपने इन्द्रियगण का उचित अवरोध करता है। उनका दास नहीं बनता वह संसार में महान् कार्य करने में समर्थ होता है। इन्द्रियों का दास संसार में अपने जीवन को पूर्ण सफल नहीं कर पाता है। अतः वेद मन्त्र ने कहा कि जो धनावस्था में धन में लिप्त नहीं होता तथा इन्द्रियों का संयमी है ऐसा पुरुष महान् है।

१५

जन्म दिवस पर गहरा चिन्तन

समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या।
सं दीव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशः चतस्रः ॥

यजु० २७,१

(अग्ने! त्वा समाः ऋतवः संवत्सराः ऋषयः यानि सत्या वर्धयन्तु) हे अग्र गमन करने वाले मानव! तुझे सारी ऋतुएं, वर्ष, ऋषिगण तथा सत्य व्यवहार बढ़ावें। (दीव्येन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोचनेन संदोदिहि) तू सुन्दर दिव्य प्रकाश से दीप्त हो (विश्वा चतस्रः प्रदिशः आभाहि) सारी चारों ओर की उत्तम दिशाओं से प्रदीप्त हो।

1- संसार में प्रत्येक काल में अपने को बढ़ता हुआ देखे। जितना जितना वह आगे चले यह समझे मैं आगे बढ़ रहा हूं। प्रत्येक ऋतु कुछ कठोरता, सुन्दरता को लेके आती है। उस ऋतु के आगमन के साथ जीवन में कठोरता को सहने का अभ्यास करे। ऋतु की सुन्दरता को जीवन में धारण करे।

2- जब नवीन वर्ष अपने जीवन का प्रारम्भ हो उस दिन अवलोकन करे कि क्या मैं आगे बढ़ा हूं या पीछे हटा हूं। मेरा जीवन निकृष्ट रहा है या उत्कृष्ट रहा है। जीवन को प्रत्येक वर्ष में विद्या, बल, बुद्धि से आगे बढ़ावे। यदि पिछले वर्ष में कुछ कमी रही हो उस कमी को दूर करके अग्रिम वर्ष कल्पना करे कि मैं अब आगे बढ़ रहा हूँ।

3- ऋषिगण तुझे आगे बढ़ावें। ऋषिगण से भाव है—आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, श्रवण, मनन, निदिध्यास्तन कर। जितना जितना उत्तम ग्रन्थों का आप पठन पाठन करेंगे उतना उतना आपका जीवन पवित्र होता जावेगा। उत्तम ग्रन्थ मानव जीवन को उन्नत करने में अत्यन्त सहायक हैं। जिस प्रकार उत्तम भोजन से शरीर पुष्ट होता है उसी प्रकार उत्तम ग्रन्थों के अध्ययन से आत्मा प्रबल होता है।

4- तेरा जीवन सत्य आचार, विचार से पूर्ण होके बढ़ता रहे। सत्य जीवन है असत्य मृत्यु है। प्रत्येक कर्म में, व्यवहार में, गति में, चिन्तन में, संकेत में सत्य का ही समावेश हो। इस प्रकार से सर्वतः शुद्ध, पवित्र, जीवनदाता सत्य तुझे बढ़ावे।

5- अन्धकार में ठोकर लगती है, प्रकाश ठोकरों से, भूत से सुरक्षित रखता है। दिव्य ज्ञान वह है जो वस्तु जैसी है देखने वाला उस वस्तु को जब तदाकार ही देखता है, समझता है तब वह ज्ञान दिव्य ज्ञान कहलाता है। "नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिहविद्यते" ज्ञान से बढ़कर कोई वस्तु पवित्र नहीं है। अतः यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर संसार में आगे बढ़ता चल।

6- यह निश्चय रख कि संसार के एक भाग में ही तुझे प्रकाश को विस्तृत नहीं करना है अपितु सर्वत्र इस लोक को प्रकाश से प्रकाशित करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६

गृहस्थाश्रम को उत्तम रख

या ते धामान्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिश्रृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि।
ब्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि रायस्पोष्टवनि पर्यूहामि।
ब्रह्म दृंह क्षत्रं दृंहायुर्दृंह प्रजां दृंह॥ यजु० ६,३

(ते या धामानि गमध्यै उश्मसि) हम तेरे जिन प्रकाशयुक्त घरों में जाने की इच्छा करते हैं (यत्र भूरिश्रृंगा गावः अयासः) जहां पर बहुत सींगों वाली अर्थात् अनन्त विस्तृत ज्ञान किरणें गमन करती हैं। (अत्र ह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदं भूरि अवभारि। यहां पर ही उत्तम स्तुति किये जाते हुए प्रभु का उत्तम पद या स्थान बहुत शोभा पाता है। ब्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि) मैं तुझे ज्ञानी, बलवान, आत्मैश्वर्य से युक्त को अनेक तर्कों से या अनेक प्रकार से समझता हूं तू (ब्रह्म दृंह क्षत्रं दृंह आयुर्दृंह प्रजां दृंह) ज्ञान को बढ़ा, बल को बढ़ा, आयु को बढ़ा, प्रजा को बढ़ा।

1- गृहस्थ का घर उत्तम हो, गृहस्थी स्त्री पुरुष केवल सांसारिक पुरुष ही न रहें वहां पर ब्रह्मज्ञान, वेद चर्चा, धर्मोपदेश होते रहने चाहियें जिससे उनकी सन्तान धर्मात्मा तथा विद्वान् बन सके। उत्तम माता पिता की सन्तान प्रायः उत्तम रहती है। सन्तान ही गृहस्थ का फल है। उत्तम सन्तान से गृहस्थी की शोभा है। अतः घर में सदा उत्तम विषयों की चर्चा रहनी चाहिये।

2- गृहस्थ पुरुष सदा इस ओर ध्यान रखें कि उनकी सन्तान ज्ञानवृद्ध होकर संसार में ज्ञान का प्रसार करने वाली हो। ज्ञान से जीवन में पूर्णता आती है।

निर्बल सन्तान भी गृहस्थ के लिए अभिशाप है। अतः सदा इस प्रकार का उपदेश दें कि उनकी सन्तान शरीर, मन, बुद्धि से युक्त हों। बलवान बनने के लिये माताएं अपने पुत्रों को व्यायाम करावें, ब्रह्मचर्य का पालन करावें, उनके आचार विचार को पवित्र करें।

आत्मिक शक्ति के बिना कोई उत्तम काम नहीं हो सकता है। आत्मा क्या है, मन क्या है, बुद्धि क्या है, चित्त क्या है। ये शक्तिशाली किस प्रकार बनते हैं इत्यादि शब्द बातों का ज्ञान सन्तान को, छात्रों को अवश्य कराया जावें।

3- हे गृहस्थ! तू संसार में ज्ञान को बढ़ा। ज्ञान के बढ़ने से अज्ञान का नाश होता है। प्रकाश के आने से अन्धकार का नाश होता है। सत्य व्यवहार से असत्याचरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर होता है। बल बढ़ा, जिससे संसार में उत्तम सामाजिक प्राणी बनकर तू यहां रह सके।

जीवन को बढ़ा। जीवन को, आयु को, स्वास्थ्य को सदा उत्तम रख। इस मानव जीवन को लम्बा बनाकर यहां रहकर शुभ कार्य कर। प्रजा की सेवा कर। प्रजा सेवक बनने से प्रजा का तथा अपना सुधार होता है। सेवा के द्वारा विपरीतगामी मानव को भी अनुकूलगामी बना सकता है।

१७

निन्दित कार्यों का त्याग करो

इदमाप: प्रवहतावद्यं च मलं च यत्।
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्।
आपो मा तस्मादेनस: पवमानश्च मुञ्चतु ॥ यजु० ६,१७

(आप: इदं अवद्यं यत् च मलं प्रवहत) हे जल के समान फैलने वाले विद्वान् पुरुषो! इस अकथनीय कुवचन को मानसिक तथा शारीरिक मल को बहा ले जाओ। मैंने (यत् च अभिदुद्रोह यत् च अनृतं यत् च अभीरुणं शेपे) जो द्रोह किया है, जो झूठ बोला है और जो न डरने वाले अर्थात् बलवान की निन्दा की है (तस्मात् एनस: च पवमान मुञ्चतु) उस पाप में पवित्रता सम्पादन करने वाला प्रभु छुटकारा देव।

1- उत्तम पुरुष कभी भी कुवचन नहीं बोलते। वे सदा इस प्रकार के शब्दों का उच्चारण करते हैं जिससे जनता जनार्दन का कल्याण होता है। कटु बोलने वाले प्रथम अपने रक्त को कटु करते हैं तदनन्तर ही औरों के लिये कटु वचनों का प्रयोग करते हैं। जीवन में, समाज में सुख शान्ति बनाए रखने के लिये सदा सुवचनों का प्रयोग करो।

3- मल सारे ही हानिकारक होते हैं चाहे वे वस्त्र के हों, शरीर के हों। पर इन मलों से भी अत्यन्त हानिकर मल मन का होता है। जिस मनुष्य का मन मलिन हो जाता है वह अपना भी कल्याण नहीं कर सकता। मलिन मन वाला व्यक्ति सारे संसार को समल, कपटी, छलिया देखता है इस प्रकार उसे कहीं भी सुख तथा शान्ति दिखाई नहीं देती। निराशा के वारिदों से वह सदा आच्छादित रहता है अत: मन को मल से मलिन न होने दो।

3- दूसरे व्यक्तियों से व्यर्थ ही द्वेष करना, झगड़ा करना, अशान्ति फैलाना गर्हित कर्म है। नीच पुरुष दूसरे की उन्नति को देखकर जलने लगते हैं। द्वेषी को कोई भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080487

बढ़ता अच्छा नहीं लगता। समय पड़ते ही अकारण दूसरों से झगड़ा करने लगते हैं वे कोई ऐसा साधन पैदा कर देते हैं जिससे अशान्ति का प्रसार होता है।

4- झूठा पुरुष समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। कोई व्यक्ति उसके वचन पर श्रद्धा नहीं करता है। वह चाहे सत्य बात भी कहता हो तो भी लोग उसकी बात को अपलाप तथा बकवाद समझते हैं। अतः असत्य को छोड़ सत्य का पालन करो।

5- जो पुरुष अपने से बलवान होता है हम भय के कारण उसकी निन्दा उसके सामने तो नहीं करते परन्तु परोक्ष में उसकी निन्दा अवश्य करते हैं वह निन्दा सदा हानिकारक रहती है। उससे निन्दक को लाभ न होके हानि होती है। हम सदा यदि सफलता चाहते हैं तो हमारा परम कर्त्तव्य है कि कुवचन न बोलें, मानसिक पाप को पास न फटकने दें, परोक्ष में किसी की निन्दा न करके उसकी भूल को उसके सामने कहें, असत्य व्यवहार से सदा पृथक् रहें।

१८

शुभ काम करें तथा शुभ मार्ग पर चलें

मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्तः स्थुर्नो अरातयः॥

ऋ० १०,५७,१ अथर्व० १३,१,५९

(सोमिनः वयं पथः मा प्रगाम) ऐश्वर्य को प्राप्त करके हम सुपथ से विपरीत कुपथ की ओर गमन न करें (इन्द्र सोमिनः वयं यज्ञात् मा प्रगाम) हे प्रभो! ऐश्वर्यशाली बनकर हम शुभ कर्मों का त्यागकर अशुभ कर्मों की ओर प्रवृत न हों (नः अन्तः अरातयः मा स्युः) हमारे अन्दर अदानशीलता तथा अकर्मण्यता का प्रवेश न होने पावे।

1- धन, बल, राज्य, पद, विद्या, सौन्दर्य आदि को सोम नाम से कथन किया गया है जिनके पास ये वस्तुयें होती हैं उनको सोमी कहते हैं। पूर्वोक्त धन बल आदि को प्राप्त करके तमोगुण के बढ़ने पर अनेक प्रकार के दोष मानव में पैदा हो जाते हैं, अभिमान पैदा हो जाता है, अनेक प्रकार के व्यसनों का शिकार वह हो जाता है। उलटे रास्ते में अभिमान वश तथा व्यसनाभिभूत होके चलने लगता है अतः कहा है कि हे मानव! तू सोमी बनकर सुपथगामी रहना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2- सोमी बनकर मानव निकृष्ट कर्मों का शिकार हो जाता है। निकृष्ट कर्मों को करने वाला अवश्य निकृष्ट पुरुष बन जाता है। कर्म से बनता है कर्म से बिगड़ता है। शुभ कर्म सुधारक तथा अशुभ कर्म नाशक होते हैं। निष्कृष्ट कर्म संसार की व्यवस्था को नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। सदा मानव यह ध्यान रखे कि यह मानव शरीर प्रभु ने उत्कृष्ट कर्म करने के लिए दिया है इससे निष्कृष्ट कर्म करना यह प्रभु के सामने अपने को अपराधी बनाता है।

3- जिस मानव समाज में हम रहते हैं वह समाज अदानशील तथा अकर्मण्य न बने। निकम्मा यह शब्द भी निष्कर्म या अकर्मण्य से बिगड़ा है। काम न करने वाला समाज में गर्हित दृष्टि से देखा गया है। अकर्मण्य पुरुष के जीवन में उत्साह नहीं होता। जिस समाज में जितने अकर्मण्य होंगे उतना ही वह समाज निकम्मा बनता चला जावेगा।

जिस समाज से दान शीलता के भाव समाप्त होते जावेंगे उतना ही वह समाज गिरावट की ओर चलने लगेगा। दान के योग्य पात्रों को दान देने से उत्तम पुरुषों का मान होता है। उत्तम गुणों का पोषण होता है। अतः सदा यह स्मरण रखो कि परिवार, समाज तथा देश से अकर्मण्यता तथा अदानशीलता शीघ्र से शीघ्र समाप्त हो।

१९

संसार को सुखी बनाने के साधन

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अरावणः॥ ऋ० ९,६३,५

(इन्द्रं वर्धन्तः) आत्मा को या आत्मिक शक्ति को बढ़ाते हुए (अप्तुरः) अच्छे कर्मों को करने के लिए शीघ्रता करते हुए (विश्वं आर्यं कृण्वन्तः) संसार को श्रेष्ठ बनाते हुए (अरावणः अपघ्नन्तः) अदानशीलता तथा अकर्मण्यता को नष्ट करते हुए संसार में विचरण करो।

1- शरीर तथा आत्मा के संयोग का नाम जीवन है। शरीर तथा आत्मा के वियोग का नाम मृत्यु है। शरीर के बिना आत्मा कुछ नहीं कर सकता, आत्मा के बिना शरीर दो धेले का नहीं है। शरीर बलवान है पर आत्मा निर्बल है वह मानव भी संसार के लिए उपयोगी नहीं होता है। आत्मिक शक्ति की प्रबलता से कठिन से कठिन काम सरल हो जाता है। अतः चेतन आत्मा जब प्रबल होता है उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय शरीर भी प्रबल हो जाता है अतः हे मानव ! तू आत्मिक शक्ति को बढ़ा ।

2- भले बुरे काम क्या हैं इसकी साक्षी मानव का मन देता है । भले काम को करके मनुष्य को प्रसन्नता होती है बुरे कर्म करके सफलता मिलने पर भी प्रसन्नता नहीं होती है । संसार में सदा आनन्दित रहने के लिये श्रेष्ठ कर्मों का आश्रय ले ।

3- यदि संसार में रहके स्वार्थ वृत्ति से रहेगा तो सारा संसार ही तुझे स्वार्थमय दिखलाई देगा । स्वार्थ को छोड़कर त्याग वृत्ति से रहना सीखो । यदि आप स्वयं को भला बना के औरों को भला बनाने के लिए प्रयत्नशील नहीं है तो आप स्वार्थी हैं । स्वयं श्रेष्ठ बनो, मन, वचन, कर्म से पवित्र बनो, इसके साथ अपने परिवर, समाज, देश तथा राष्ट्र को पवित्र बनाओ । श्रेष्ठ पुरुष सदा यह चिन्तन करते हैं कि जिस प्रकार शुद्धाचरण से, श्रेष्ठ पुरुष बनने से, मुझे आराम है, सुख है इसी प्रकार सारे विश्व को सुखी बनाने के लिए उनको श्रेष्ठ बनाऊ ।

4- अदान शीलता, कृपणता अकर्मण्यता का त्याग मन, वचन, कर्म से करना चाहिये ।

प्रभु ने प्राणिमात्र के लिये कितने आनन्द के साधन उत्पन्न किये हैं । कितना सुन्दर जगत् बनाया है । नदी नाले, पर्वत, वृक्ष, फल, फूल यह सब कुछ प्राणिमात्र के लिये प्रदान किया है परन्तु अपने लिए किसी भी वस्तु की इच्छा नहीं की है । मानव को मुक्त करने के लिए बुद्धि दी है पर किसी से उसके बदले कुछ लिया नहीं है इसी प्रकार मनुष्य का कर्त्तव्य है वह संसार की सेवा करे, जो कुछ संसार को अपने जीवन से सुख दे सकता हो उसे दे । निष्कर्म होके रिक्त न बैठे तभी कल्याण होगा ।

२०

देवनगरी अजेया है

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥

अथर्व० १०,२,३१

(अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूः योध्या) आठ चक्रों वाली नौ द्वारों वाली देवों की नगरी अयोध्या अर्थात् अजेया होती है । (तस्यां हिरण्ययः कोशः) उस नगरी में चमकीला कोश अर्थात् मस्तिष्क है । (स्वर्गः ज्योतिषा आवृतः) उसका स्वर्ग ज्योति से द्योतित है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1- देवों से रक्षित शरीर को देवनगरी कहा उस समय इस नगरी पर कोई भी शत्रु आक्रमण नहीं कर सकता है। यदि कोई उसपर आक्रमण करता है तो उसका आक्रमण विफल होता है। जब इस देवनगरी पर असुरों का अधिकार हो जाता है तब यह निर्बल हो जाती है। पांच ज्ञानेन्द्रियां जब दैवी वृत्ति में रहती हैं तब यह नगरी देवनगरी है, पांचों ज्ञानेन्द्रियां जब आसुरी वृत्ति को धारण कर लेती हैं तब यह आसुरी नगरी हो जाती है। देवों का कार्य देना है, असुरों का कार्य लेना तथा लूटना है।

जिस समय तक देवों का राज्य रहता है उस समय तक देव प्राणायाम, व्यायाम आदि के द्वारा इन चक्रों का संचालन भली प्रकार करते हैं। उनके ठीक प्रकार कार्य करने से यह देवनगरी स्वस्थ तथा सुन्दर बनी रहती है। इसके नव द्वार स्वच्छ पवित्र रहके इस नगरी की सब प्रकार सुरक्षा करते हैं। इस नगरी की किसी भी दीवार को निर्बल नहीं होने देते हैं पर असुरों के हाथों में पड़ने पर इस नगरी की सुरक्षा संभव नहीं है।

2- इस नगरी में सुनहरी कोश मानव का मस्तिष्क है। देवगणों का जब तक अधिकार रहता है तब तक सुविचार रूपी सौवर्ण प्रकाश किरणें इस मस्तिष्क से निकलती हैं। उन सौवर्ण किरणों के प्रकाश से यह समग्र नगरी आलोकित तथा प्रकाशित हो जाती है। असुर तो कुविचार रूपी अन्धकार को लेके इस नगरी में प्रवेश लेते हैं तथा इसको अन्धकारमय बना देते हैं। उस समय अन्धकार के कारण कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान नहीं होता है तथा यह सुन्दर नगरी सब ओर से उजाड़ होके नष्ट भ्रष्ट हो जाती है।

3- वैसे तो भगवान् सर्वत्र है पर मानव शरीर में जीवात्मा का स्थान योगी जन हृदय मन्दिर मानते हैं। जहां देखने वाला होता है वहीं वस्तु दिखाई देती है। जीवात्मा हृदय मन्दिर में हैं प्रभु सर्वत्र है, वहां भी है, देखने वाला जीवात्मा वहां है। प्रभु का प्रकाश सूर्य के प्रकाश में समान मानिये चन्द्र रूपी जीवात्मा को ज्योति प्रभु से मिलती है। जब दोनों का परस्पर मिलन होता है तब जीवात्मा ज्योति से आवृत हो जाता है।

योगी जन इस देव नगरी में आठ चक्र इस प्रकार बतलाते हैं—

1- मूलाधार चक्र इसका स्थान गुदा मूल है। 2- स्वाधिष्ठान चक्र इसका स्थान मूत्रेन्द्रियमूल। 3- मनोपूर चक्र—इसका स्थान नाभिकेन्द्र। 4- अनाहत चक्र—इसका स्थान हृदय है। 5- विशुद्धि चक्र—इसका स्थान कण्ठ है। 6- जीवन चक्र—इसका स्थान नासिका मुख मूल है। 7- आज्ञा चक्र—भौओं के मध्य में। 8- ब्रह्म चक्र कपाल में हैं।

नवद्वार—दो नेत्र, दो श्रोत्र, दो नासिका छिद्र, मुख, मूत्र द्वार, गुदा द्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१

कठिनताओं को पार करके धर्म के मार्ग पर चल

मा भेर्मा संविक्था ऊर्जं धत्स्व धिषणे वीड्वी सतीवीडयेथाम्
ऊर्जं दधाथाम् । पाप्मा हतो न सोमः ॥ यजु० ६,३५

(मा भेः मा संविक्थाः ऊर्जं धत्स्व) मत डरो, मत घबराओ, साहस को धारण करो (धिषणे वीड्वी सती वीडयेथाम्) बुद्धि और भावनाओ बलवती बनकर बलवान बनो तथा बनाओ। (ऊर्जं दधाथाम्) साहस को धारण करो (पाप्मा हतः सोमः न) पाप को नष्ट करो धर्म को नष्ट न होने दो।

1- किसी भी कठिन तथा शुभ कार्य करने में अनेक कठिनताओं का सामना करना पड़ता है।

एक नीतिकार ने कहा है:—

प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेर्नीचैः प्रारभ्य विघ्न विहता विरमन्तिमध्या। विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्य उत्तमजनाः न परित्यजन्ति।

नीच पुरुष कठिनता के भय से शुभ कार्य नहीं करते, मध्यमजन विघ्नों के भय से शुभ कार्य को मध्य में ही छोड़ते हैं, अनेक विघ्न आने पर भी उत्तम पुरुष निश्चित उत्तम काम को नहीं छोड़ते हैं। इस भावना को लेकर वेद में कहा है कि श्रेष्ठजन! उत्तम कार्य के करने में, उनकी कठिनता से न डर तथा न घबरा। घबराना तथा डरना निर्बलों का कार्य है।

2- विचार तथा भावना ऐसी हैं जिनकी प्रबलता से कठिन कार्य भी सरल हो जाता है। कठिनता में चलने में आनन्द का अनुभव होता है। कठिनता सरलता में बदल जाती हैं। जिसके विचार तथा भावना बलवान होती हैं वह अपनी बलवती भावना तथा प्रबल विचारों के सहारे अनेक निर्बल मानव मानवियों को संकट से पार उतार देता है। ऐसा व्यक्ति निर्बलों का सहायक बलवानों का प्रेरणा स्रोत बन जाता है।

3- साहसी बन। साहस के आश्रय से मानवों ने बड़े बड़े बन काटकर नगर बनाए। इस युग की महान् क्रान्तिकारी घटना, मानव का चन्द्र लोक में जाना साहस का ही कारण है। बड़े बड़े पर्वतों को काटकर ऊंचे ऊंचे पर्वतों में से गाड़ियों का दौड़ना भी साहस का ही कारण है अतः वेद ने कहा है कि हे मानव! तू साहस का आश्रय ले इससे कठिनाइयों को पार कर सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4- पापाचार को नष्ट कर धर्माचार का प्रसार कर। पापियों को नष्ट कर, धर्मात्माओं की रक्षा कर। ऐसा कोई भी कार्य न कर जो तेरी जीवन यात्रा का अवरोध करने वाला हो। जो वस्तु तू अपने लिये पसन्द नहीं करता उसको दूसरों के लिये पैदा न कर। मानव ! तू नहीं चाहता कि कोई तुझ से बैर करे, घृणा करे, धोखा दे, झूठ बोले तुझे ठगे इत्यादि तो तू भी निश्चय कर कि तेरा जीवन भी और के लिये दयालुतापूर्ण, धर्म भावना से भरित, मानव मात्र की कल्याण करने की इच्छा वाला बने।

२२

शरीर स्थित तीनों लोकों को उन्नत कर

उद्दिवं स्तभानान्तरिक्षं पृण दृंहस्व पृथिव्यां द्युतानस्त्वा मारुतो मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्मणा। ब्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि। ब्रह्म दृंह क्षत्रं दृंह आयुर्दृंह प्रजादृंह।

यजु० ५,२७

(दिवं उत्-स्तभ अन्तरिक्षं पृण पृथिव्यां द्युतानः दृंहस्व) मस्तिष्करूपी द्युलोक को ऊपर उठा, हृदय रूपी अन्तरिक्ष को पूर्ण कर, पृथ्वी पर प्रकाश फैलाता हुआ आगे बढ़ (त्वा मारुतो मिनेतु) तुझे उत्तम विचार उत्तम भावना रूपी आगे की ओर ले चले। (मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्मणा) सूर्य तथा चन्द्र की तरह ध्रुव धर्म से, ध्रुव व्यवहार से युक्त रह। त्वा ब्रह्मवनि क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि) तुझे मैं ज्ञानी, बलवान, ऐश्वर्यसम्पन्न मानता हूं। (ब्रह्म दृंह क्षत्र दृंह आयुर्दृंह प्रजां दृंह) ज्ञान को बढ़ा, बल को बढ़ा, जीवन को बढ़ा, प्रजा को बढ़ा।

1- मनुष्य का मस्तिष्क द्युलोक के समान है जिस प्रकार द्युलोक में तारे चन्द्र सूर्य प्रकाशते हैं इसी प्रकार सब ज्ञानेन्द्रियों की स्थितियां, शक्तियां इसी में विद्यमान हैं। जब मस्तिष्क विकृत हो जाता है तब सारी ही इन्द्रियां अपना कार्य यथावत् नहीं कर पाती हैं। अतः हे मानव ! तू सदा सदा यह ध्यान रख अपने इस द्युलोक के समान मस्तिष्क को कुविचारों से, हीन भावना से, निन्दा से, दुर्व्यसनों से पतित न कर।

2- हृदय मन्दिर में ही भगवान के दर्शन आत्मा को होते हैं। जब प्रभु का मिलन आत्मा को हो जाता है तब आत्मा अपने को पूर्ण समझता है तथा सोचता है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त करने योग्य था वह मुझे प्राप्त हो चुका है ऐसे व्यक्ति को सारा संसार अपना भासित होने लगता है तब उसका प्यार सारे संसार में भर जाता है। अत: कहा कि हे मानव! तू विश्व प्रेम से इस हृदय मन्दिर को पूर्ण कर ले।

3- पृथिवी पर प्रकाश फैलाता हुआ बढ़। बुरे कर्मों से, अज्ञान, मूर्खता से अन्धकार फैलता है। पवित्र कर्मों से प्रकाश फैलता है। अत: शुभ कर्म रूपी प्रकाश को फैला।

4- उत्तम विचार, उत्तम भावना मनुष्य को आगे बढ़ाते हैं। उनके द्वारा मानव जितना बढ़ना चाहता है उतना बढ़ जाता है। सदा इस बात का ध्यान रख कि तेरे विचार, या तेरी भावना उत्तम रहे।

5- सूर्य चन्द्र की तरह प्रकाश तथा ज्योति फैलाकर सारे विश्व को प्रकाशित कर।

6- जीवन को सफल बना। सफल जीवन का निर्माण ज्ञान तथा बल से होता है। अत: ज्ञानोपार्जन के लिए, बलवान बनने के लिये, सदा प्रयत्नशील रह। ज्ञान तथा बल के आश्रय से मानव बड़े से बड़े काम कर सकता है। सदा यह स्मरण रख कि तेरा ज्ञान विस्तृत होता रहे, तू शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शक्ति से सदा ओत प्रोत रहे। स्वयं भी बलवान बन तथा औरों को भी बलवान बना। तेरी सन्तान बढ़ती रहे तेरा जीवन सदा यश रूपी सुगन्धि से सुगन्धित रहे।

२३

दस्यु की पहचान

अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः।
त्वं तस्यामित्रहन् वधर्दासस्य दम्भय ॥

ऋ० १०,२२,८

(नः अभि अकर्मा, अमन्तुः अन्यव्रतः अमानुषः दस्युः हमारे चारों ओर जो शुभ काम न करने वाले, मर्यादा में न रहने वाले, व्रत को केवल ढोंग से पालने वाले तथा मानवता से रहित हैं वे दस्यु हैं वे देश, समाज, जाति के घातक हैं (अमित्र हन् त्वं वधः) अमित्रता या दस्युता को हनन करने वाले तू दस्युता का वध करने वाला बनकर (तस्य दासस्य दम्भय) उसकी दस्युता को नष्ट कर।

1- जो मानव कर्म नहीं करते अथवा जो निन्दित कर्म करते हैं वे इस प्रभु के बनाए संसार में निन्दा के पात्र बनते हैं। उनको कर्म करके भी शान्ति लाभ नहीं होता है। उनके दुष्कर्म उनको ले बैठते हैं। अपने किए हुए दुष्कर्म ही उसके सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साकार राक्षसों का सा रूप बनाकर उसे भयभीत करते रहते हैं। ऐसा मानव जीवन में कभी भी सुख शान्ति लाभ नहीं कर पाता, संसार की दृष्टि में ऐसे जन दस्यु कहलाते हैं।

2- जिस प्रकार किसी गांव या नगर की सीमा होती है, घर की सीमा होती है उसका अतिक्रमण करना उत्तम नहीं माना जाता है। इसी प्रकार व्यक्ति, परिवार, समाज, देश तथा राष्ट्र की भी सीमाएं होती हैं उनके अतिक्रमण से अशांति, युद्ध प्रारम्भ हो जाते हैं इसी प्रकार सीमा कहें, मर्यादा कहें उसके त्याग देने से भी शान्ति भंग होती है अतः उत्तम मनुष्य का कर्त्तव्य है जो मानव समाज की रक्षा के लिये, व्यवस्था के लिये, मर्यादाएं, सीमाएं निर्धारित हों उनको कभी भी भंग न करे। जो मनुष्य मर्यादाओं का भंग करता है वह वेद के शब्दों में दस्यु, घातक, हिंसक माना जाता है।

3- अच्छे कर्म को पूरा करने का दृढ़ संकल्प, दृढ़ निश्चय व्रत कहलाता है। जब मनुष्य किसी ऊँचे लक्ष्य को पूर्ण करना चाहे तदनुसार ही अपने जीवन को उच्च बनाये। तुम जैसा रूप बनाकर संसार के सामने आये हो तुम्हारा वास्तविक रूप भी वही हो। कथनी तथा करनी में कोई अन्तर न हो। जो मनुष्य कहता कुछ है, करता कुछ और है, सोचता कुछ और है, उसे भी वेद ने दस्यु की श्रेणी में घोषित किया है।

4- मानव में मानवता हो दानवता न हो, असुरता न हो, मानव प्राणिमात्र को अपने मन से अपने तुल्य समझता है। दूसरे के सुख दुःख को भी अपने ही समान समझता है, जिस प्रकार वह दूसरे से निन्दा सुनने के लिए उद्यत नहीं होता इसी प्रकार वह दूसरे की निन्दा करने में भी संकोच करता है। मानवता में गुणों का समावेश होता है। दानवता में दुर्गुणों का वास होता है। अतः जिस मानव ने मानवता को नष्ट कर दिया है उसे वेद ने दस्यु कहा है।

२४

शासक तथा गुरु संयमी हों

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥

अथर्व० ११,५,१७

(ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति) ब्रह्मचर्य रूपी तप से राजा या शासक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य की भली प्रकार रक्षा कर सकता है। (आचार्यो ब्रह्मचर्य्येण ब्रह्मचारिणं इच्छते) आचार्य स्वयं ब्रह्मचर्य का पालन कर शिष्य को ब्रह्मचारी बनाना चाहता है।

1- जिस प्रकार ब्रह्म या परमात्मा काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, अहंकार आदि दोषों से दूर होता है, इसी प्रकार जब अभ्यास या संयम का अभ्यास करके ब्रह्मचर्य पालन करने का मानव का स्वभाव बन जाता है तब ही वह ब्रह्मचारी कहाता है।

2- राज्य करने में, शासन करने में बहुत धैर्य चाहता है, बहुत शान्ति चाहता है, बहुत शक्ति की आवश्यकता होती है। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य का यथावत् पालन करता है, प्रजा की रक्षा के समान अपने वीर्य की रक्षा के लिये प्रयत्नशील होता है वही शासन करने की क्षमता रखता है, शक्ति रखता है।

अब्रह्मचारी मनुष्य तो किसी काम को भली प्रकार सोच भी नहीं सकता है। यदि किसी प्रकार सोच भी लेता है तो उसे आचरण में लाना उसके लिये नितान्त कठिन हो जाता है। शक्तिहीन मानव में उत्साह नहीं होता, धैर्य नहीं होता। अतः शासक बनने वाले को उपदेश दिया है कि तू ब्रह्मचर्य का पालन कर।

3- जो गुरु अपने शिष्यों को गुणवान् विद्वान् बनना चाहे उसे प्रथम ब्रह्मचर्य का पालन करना होगा। अपनी सन्तान को श्रेष्ठ बनाने के लिये माता पिता को ब्रह्मचर्य का अवलम्बन लेना चाहिये। हीन वीर्य पुरुषों को सन्तति हीन वीर्य ही बनती है।

जिसको तुम जैसा बनाना चाहते हो पहले तुम उसकी दृष्टि में वैसे बनो। निर्बल मनुष्य बलवान बनने का उपदेश देवे तो वह अच्छा नहीं लगता। पापी धर्म का उपदेष्टा बनकर केवल उपहासास्पद ही बनता है। झूठा सत्य की विशेषता का जब वर्णन करे तो लोगों को उसके कथन पर घृणा होती है। अतः वेद ने कहा है कि हे गुरो! या हे पितः! यदि तू शिष्य को, अपने पुत्र को तेजस्वी, उत्तम आचरण वाला, सत्यवादी, धर्मात्मा, उपकारी, आस्तिक बनाना चाहता है तो तू पहले अपने आप बन।

आज छात्रों में तथा गुरुओं में कालेजों के अन्दर जो परस्पर वैमस्य फैला है उसका कारण गुरुओं का आचरण वैसा नहीं है जैसा कि होना चाहिए। अतः वेद ने कहा कि हे गुरो! तू स्वयं ब्रह्मचारी बनकर ही शिष्य को ब्रह्मचारी बना सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५

महान् उद्देश्य वाले की सब बाधाएं दूर हो जाती हैं

अपां गम्भन्त्सीद मा त्वा सूर्योऽभिताप्सीन्माग्निर्वैश्वानरः ।
अच्छिन्नपत्राः प्रजा अनुवीक्षस्वानुत्वा दिव्या वृष्टिः सचताम् ।।

यजु० १३,३०

हे मानव ! (अपां गम्भन्त्सीद) सुकर्मों की गहनता में स्थित हो (त्वा सूर्यः वैश्वानरः अग्निः मा अभिताप्सीत्) तुझको सूर्य तथा सब मनुष्यों में प्रकाशमान अग्नि सन्तप्त न करे (अच्छिन्नपत्राः प्रजा अनुवीक्षस्व) पत्रों से हरी भरी प्रजा का अवलोकन कर (त्वा दिव्या वृष्टिः अपुसचताम्) तुझे दिव्य वर्षा मेंसंगत करे ।

1- हे मानव ! संसार में दुष्कर्म भी बहुत हैं । दोनों के उपासक संसार में हैं । कई ऐसे कर्म भी हैं जिनका निर्णय करना कठिन हो जाता है कि ये दुष्कर्म है या सुकर्म हैं । सन्देह ग्रस्त कर्मों का त्याग कर तू उत्तम कर्मो की गहनता में गमन कर । उत्तम कर्म स्वयं मानव को प्रसन्न तथा आनन्दित कर देते हैं । शुभ कर्मो के चहुं ओर प्रकाश ही प्रकाश है । उनके करने से मानव जाति का विकास होता है । मानव मानव से प्यार करता है । संसार में चहुं ओर सुख ही सुख शुभ कर्म करने वालों को दिखाई देता है ।

2- जब आप संसार में उत्तम कर्म करने का निर्णय कर लेंगे तब कठिनता भी सरलता में परिणत हो जाती है । बाधा भी स्वयंमेव बद्ध होकर मार्ग छोड़ जाती है । सूर्य की गर्मी भी ऐसे पुरुष को सन्तप्त नहीं करती । लौकिक अग्नि या विद्युदग्नि भी उसके मार्ग में रुकावट नहीं डालती वह अपने लक्ष्य पर निर्बाध चलता रहता है ।

3- उत्तम लक्ष्य वाला पुरुष सारे संसार को हरा भरा बनाना चाहता है या बनाने का संकल्प करता है । प्रत्येक प्राणी का दुःख उसका अपना दुःख हो जाता है । उसके दुःख को दूर करने का उसके जीवन का उद्देश्य होता है । सारी प्रजा को सुखी करने के लिये उसके मुख से अचानक ये शब्द निकल पड़ते हैं ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत् ।।

4- दो प्रकार की वृष्टि है । जल वृष्टि और दिव्य वृष्टि । जिस प्रकार वृष्टि के पड़ने से सूखे खेत लहलहाने लगते हैं । खेतों की शुष्कता दूर हो जाती है, सर्वत्र जीवन का संचार हो जाता है । उसी प्रकार देव पुरुष भी बचत रूपी दिव्य वृष्टि से ईर्ष्या, जलन, द्रोह रूपी अग्नि से सन्तप्त मानव समाज को हरा भरा कर देते हैं । जहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी विचार रूपी दिव्य वृष्टि हो जाती है वहां से निराशा, अनुत्साह, अशान्ति का सर्वथा अभाव हो जाता है। उनके वचनामृत के बून्दों का पान करके अनेक दुःखी लोग अपने को आनन्दित करते हैं। देश में ऐसे मनुष्य जितने अधिक होंगे उतना ही वहां पर सुख तथा शान्ति का साम्राज्य होगा।

२६

मानव जीवन रूपी हाण्डी की रक्षा रख

उत्थाय बृहती भवोदुतिष्ठ ध्रुवा त्वम्।
मित्रैतां त उखां परिददाम्यभित्या एषा मा भेदि ॥

यजु० ११,६४

(त्वम् ध्रुवा उत्तिष्ठ) तू स्थिर होकर ऊपर उठ। (उत्थाय बृहती भव) उठकर या उच्चस्थ होकर विशालता को प्राप्त कर (मित्र एनां उखांदे ददामि) हे मित्र! इस कच्ची हण्डी के समान मानव जीवनी को मैं तेरे लिए देता हूं (अभित्यै) भय से रहित रहने के लिये (एषा मा भेदि इसको तू मत फोड़ मत तोड़।

1- मनुष्य की जीवनी को कच्ची हण्डी के समान कहा है। जिस प्रकार कच्ची हाण्डी थोड़ी सो असावधानी से टूट जाती है, फूट जाती है इसी प्रकार यह मानव जीवनी भी थोड़ी सी असावधानी से टूट जाती है, नष्ट हो जाती है।

2- वेद ने कहा है कि हे मानव! तू स्थिर होकर ऊपर उठ। इसमें स्थिरता लाने के लिए सुविचार रख, सुभावना, ब्रह्मचर्य, व्यायाम कर, सुन्दर तथा सतोगुणी भोजन डाल जिससे हाण्डी स्थिर होके देर तक चल सके तथा तू इससे काम ले सके। मानव जीवन की उच्चता इसी में है कि इसको नीरोग तथा स्वस्थ बनाकर इहलोक तथा परलोक को सफल बना सके।

3- जीवन को ऊँचा बनाकर इसका दायरा विस्तृत कर। स्वयं को उन्नत बनाकर ही सन्तुष्ट न रह। अपने पास पड़ौस के लोगों को भी उन्नत बनाने के लिये प्रयत्नशील बन। जो गुण तुमने अपने अन्दर धारण किये हैं उन लोगों से अलकृत अन्य लोगों को भी करो।

4- इस मन्त्र में वेद ने परमात्मा को जीवात्मा का मित्र कहा है। जीवात्मा तथा परमात्मा परस्पर मित्र हैं। जिस प्रकार मित्र मित्र का भला चाहता है इसी प्रकार मैं भी तेरा भला चाहता हूं। अतः हे मेरे मित्र मानव! तू सुन। मैंने तेरे लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह जीवन रूपी उखा दी है। इसको प्राप्त कर भयभीत न हो कि यह जल्दी ही टूट जावेगी। मैंने तुझे इसकी रक्षा के लिये साधन भी बतलाये हैं यदि तू उनका प्रयोग करेगा तो यह उखा बहुत लम्बे काल तक तेरी सहायता करेगी तथा तुझे मनोवांञ्छित फल भी प्रदान करेगी।

4- यदि असावधानी से इसका प्रयोग करेगा। अर्थात् स्वास्थ्य रक्षा के जो साधन हैं उनका पालन न करेगा तो यह जल्दी ही टूट फूट जावेगी तथा तेरा कोई भी प्रयोजन सिद्ध न होगा। संसार में वही मनुष्य बुद्धिमान होता है जो अपनी निर्बल वस्तु का भी प्रयोग यथावत् करना जानता है। आज का मानव समाज इस मन्त्र की ओर ध्यान करे कि किस प्रकार वह इस कच्ची हाण्डी को जल्दी नष्ट भ्रष्ट करने के लिये प्रयत्नशील है। अतः वेद की शिक्षा की ओर ध्यान देने वाले मनुष्य ! तू सदा इस मानव जीवन की सुरक्षा रखते हुए संसार में कार्य कर।

२७

सदा कल्याण करने के लिए तत्पर रहे

शन्नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाच शमु रातिशाच शन्नो दिव्याः पार्थिवाः शन्नो अप्याः ॥

अथर्व० ११,५

(देवाः विश्वदेवाः नः शं भवन्तु) देव तथा विश्वदेव हमारे लिये कल्याणकारी होवें (सरस्वती सह धीभिः शं अस्तु) वाणी बुद्धि के साथ संयुक्त होके कल्याणकारी होवे अभिषाच रातिषाच शम्) समाज सेवक तथा दान सेवी हमारे लिये कल्याणकारक होवे (दिव्याः पार्थिवाः नः शम्) जल हमारे लिये कल्याणकारी होवे।

1- शरीर, मन, बुद्धि जब पूर्णतः स्वस्थ होते हैं तभी मानव अपने को पूर्ण स्वस्थ समझे। इसी अवस्था को 'शम्' कथन किया गया है।

2- माता, पिता, दादा, गुरु आदि देव कहलाते हैं क्योंकि ये अपनी सन्तान के लिये, अपने शिष्यों के लिये बहुत बहुत कीमती वस्तुए प्रदान करते हैं। उत्तम उत्तम विद्यादान करते हैं। अच्छे अच्छे उपदेश देके उनके जीवन का निर्माण करते हैं। हमारे देव हमारे लिये कल्याणकारी हों। ये लोग तभी कल्याण कर सकते हैं जब स्वयं शरीर, मन, बुद्धि के रोगों से मुक्त हों। इसी प्रकार संसार का कल्याण करने के लिये जो साधु, महात्मा, विद्वान् संसार में विचरण करते हैं वे विश्वदेव हैं, उत्तम शासक भी विश्वदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। ये सब कल्याण करने वाले हों। कल्याण करने वाला स्वयं को प्रथम पवित्र करे तदनन्तर ही वह अन्यों को पवित्र कर सकेगा।

3- वाणी का प्रयोग बुद्धि से संयुक्त करके करे। वाणी का प्रयोग जब बुद्धिहीनता से किया जाता है। तब वह वाणी महान् अनर्थ कर देती है जिसका प्रतिकार नहीं हो सकता। अतः लोकोक्ति है कि—"पहले तोलो फिर बोलो" वाणी को बुद्धि के साथ मिलाकर जब प्रयुक्त किया जाता है तब वह सदा कल्याणकारी रहती है।

4- समाज सेवक तथा दान सेवी पुरुष भी यदि अभिमान ग्रस्त हो जाता है, समाज के धन का अपव्यय करता है तो वह समाज का अलंकार न रहके उसका कलंक बन जाता है।

समाज सेवक कर्त्तव्य भावना से ही समाज की सेवा करे जब उसमें अभिमान का संचार होने लगे तो समझे उसका पतन आरम्भ हो गया। दान के रुपये को समाज का समझकर उसका ठीक प्रकार प्रयोग करे तभी समाज सेवक तथा दान सेवी कल्याणकारी होते हैं।

5- इस संसार में भौतिक तथा आत्मिक दोनों उन्नतियों की आवश्यकता रहती है। दोनों शक्तियों का प्रयोग करे, दोनों शक्तियों को बढ़ावे। अकेली भौतिक उन्नति तथा अकेली आत्मिक उन्नति संसार यात्रा में सफलता प्राप्त कराने वाली नहीं होती हैं। अतः कल्याणकारी बनने के लिये दोनों प्रकार की उन्नति बढ़ाने की आवश्यकता है।

6- जिस प्रकार अग्नि के ऊपर जल डालने से अग्नि शान्त हो जाती है इसी प्रकार अपना स्वभाव भी ऐसा बनाओ कि क्रोधी शत्रु भी अपनी शत्रुता को भूल जावे तथा वह आपका मित्र बन जावे यही जलीय गुण है। इसको धारण कर संसार का भला कर।

२८

प्राणियों से कुशिक्षा न ले

उलूक यातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुतगृध्र यातुं हषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र॥

अथर्व० ८,४,२२। ऋ० ७,१०४,२२

(उलूक यातुं शुशुलूक यातुं जहि श्वयातुं उत कोकयातुम) हे मानव! तू उल्लू जैसे जीवन को, भेड़ जैसे जीवन को, कुत्ते जैसे जीवन को छोड़ दे (सुपर्णयातुं उत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृध्रयातुं जहि) बाज तथा गीध जैसे जीवन का त्याग कर (इन्द्र रक्षः दृषद: इव प्रमृण) हे इन्द्रिय विजयिन् ! बुराइयों को रगड़ जिस प्रकार शिलवहा वस्तुओं को रगड़ देता है।

1- उल्लू समाज से पृथक् रहता है, अन्धकार में रहता है, रात्रि में भोजन के लिये इधर उधर फिरता है, अत: वह निन्दित माना जाता है। इसके विपरीत हे मानव ! तू समाज के लोगों में रहकर उनका कल्याण कर। अन्धकार पापमय प्रकाश पुण्यमय है। अन्धकार में पाप की सम्भावना रहती है प्रकाश में धर्म की स्थिति रहती है। ज्ञान रूपी प्रकाश में रहके मानवमात्र को प्रकाशोन्मुख कर।

2- भेड़ की तरह अन्धानुकरण न कर। किसी बात को इसलिये स्वीकार न कर कि यह अमुक पुस्तक में लिखी है। उसपर विचार कर। उसको पढ़कर उसमें से सत्य के अंश को निकाल तथा असत्य के अंश को छोड़। सारी प्राचीन बातें सत्य नहीं, सारी अर्वाचीन बातें असत्य नहीं। इसका पता तब ही होगा जब तू सत्य का अन्वेषक बनेगा।

3- कुत्ते के निन्दित स्वभाव को छोड़। अपनी जाति से कुत्तों की तरह वैर करना छोड़, भोजन की प्राप्ति के लिये व्यर्थ की चापलूसी न कर। स्मरण रख चापलूसी असमर्थता को प्रकट करती है। कर्म में विश्वास रख। जितना जितना कर्म में विश्वास बढ़ता जावेगा उतनी हो चापलूसी छुटती चली जावेगी तथा तेरा आत्म जागरण हो जावेगा।

4- भोग में चकवे की तरह न फंस कि थोड़ा सा वियोग ही तेरे लिये दुःखदायी बन जावे। संसार में मनुष्य नियत भोगों को ही भोगता है। जब भोग समाप्त हो जाता है तब उसकी अभिलाषा भी नहीं करनी चाहिये। अत: कामी न बनकर संयमी बन।

5- बाज पक्षी की तरह अहंकारी न बन। इस संसार में एक से एक बलवान है। तू निर्बलों को देखकर ही अपने को सबल समझ रहा है। जब बलवानों से तेरी टक्कर होगी तब तुझे अनुभव होगा कि तू संसार में कुछ नहीं है। प्रभु अनन्त शक्ति वाले हैं पर अहंकार रहित हैं तू भी अपने को वैसे ही बनाने का प्रयत्न कर।

6- गीध की तरह अत्यन्त लोभी न बन। जिस प्रकार मांस को देखते ही गीध उसपर झपटकर उसको लेना चाहता है। अन्य कोई भी न ले ऐसी अभिलाषा करता है इसी प्रकार तू भी दूसरे धन को अनुचित प्रकार से, छीना झपटी से लेने के लिये लालायित न हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९

उत्तम बनकर प्रभु का भजन कर

ग्राच्छा याहि ग्रावहा दैव्यं जनम् ।
ग्रासादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम् ॥ ऋ० १,३१,१७

हे मानव ! (ग्रच्छा याहि, ग्रावह दैव्यं जनम्) ग्रच्छे ढंग से चल, दिव्य गुण वाले मनुष्यों को प्राप्त कर (ग्रासादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम्) हृदय रूपी ग्रासन पर मानव प्रजा को बिठला, सब को प्यार करने वाले प्रभु का यजन कर या उसको प्राप्त कर।

1- संसार में ग्राके जीवित मानव को संसार के कारोबार करने के लिये ग्रवश्य इधर उधर दौड़ धूप करनी है। उस दौड़ धूप में विचलित होकर कभी भी उलटे मार्ग पर मानव चलने लगता है। उस मार्ग पर चलने से वह बुद्धि भ्रष्ट हो जाता है इससे उसका पतन हो जाता है। कहा भी है—"बुद्धि नाशात् प्रणश्यति" बुद्धि के नाश से मनुष्य नष्ट हो जाता है ग्रतः संसार में रहता हुग्रा सुमार्ग पर चल।

2- जिन पुरुषों में त्याग वृत्ति होती है वे देव पुरुष कहलाते हैं ग्रात्म भरण करना जिनके जीवन का लक्ष्य होता है वे ग्रसुर होते हैं। स्वार्थ मानव जीवन को ग्रधम मार्ग पर ले जाता है। परमार्थ मानव जीवन को उत्तम मार्ग की ग्रोर ले जाने में सहायक है। वेद ने कहा कि हे मानव ! तू देवत्व का उपासक बन। देवत्व ही तेरे जीवन का लक्ष्य हो। सारे संसार में दैवी वृत्ति उत्पन्न करने के लिये प्रयत्नशील बन।

3- मनुष्य लोक में रहकर मानव प्रजा से प्यार कर। जितना जितना प्यार तेरे हृदय मन्दिर में रहेगा उतना उतना तू संसार को जीत सकेगा। एक नीतिकार ने कहा है—

बन्धनानि खलु सन्ति बहूनि प्रेमरज्जुकृतबन्धनमन्यत् ।
दारुभेद निपुणोऽपि षडंघ्रि निष्क्रियो भवति बन्धनकोशे ।

ग्रनेक प्रकार के संसार में बन्धन हैं, उन सब में प्रेम का बन्धन सबसे उत्तम है। भौरा लकड़ी को काटकर उससे पार हो सकता है पर वही भौंरा प्रेम के कारण कमल जैसे कोमल फूल से बाहर होने में भी ग्रसमर्थ हो जाता है। ग्रतः हृदयासन को प्रेम से भरपूर कर ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4- वह पुत्र किस काम का जो घर में रहते हुए भी पिता का दर्शन न पा सके। पुत्र को दुखी देखकर पिता का हृदय द्रवित हो जाता है। जब पुत्र के दुख को देखकर पिता का दिल द्रवित नहीं हुआ तब सोचता होगा इसका क्या कारण है, इसी प्रकार परमात्मा पिता है जीवात्मा पुत्र है। पुत्र यदि सच्चे हृदय से पिता से याचना करे तो यह संभव नहीं कि दयालु पिता उसकी चाह को पूर्ण न करे। अतः हे मानव! तू सच्चा पुत्र बनकर पिता रूप परमात्मा का भजन कर जिससे तेरा जीवन सदा के लिये प्रसन्न तथा आल्हादित बन सके।

३.

छः गुणों वाला राष्ट्र या समाज उन्नत होता है

सत्यं बृहद्दतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवीनः कृणोतु ॥

अथर्व० १२,१.१

(सत्यं बृहत् ऋतं उग्रं दीक्षा तपः ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति) पूर्ण सत्य, कठोर अनुशासन, उत्तम कर्म करने का निश्चय, धर्मार्थ कष्ट सहने का स्वभाव, विवेक, संगठन ये गुण पृथिवीस्थ लोगों का स्तम्भन करने में समर्थ हैं (नः भूतस्य भव्यस्य पत्नी पृथिवी) हमारे भूत, भविष्यत् की स्वामिनी यह पृथिवी (नः उरुं लोकं कृणोतु) हमारे लिये विशाल कार्य क्षेत्र तैयार करे।

1- समाज, परिवार, देश तथा राष्ट्र की पूर्ण रक्षा के लिये वहां की प्रजा में नितान्त सत्य का समावेश होना चाहिये। जीवन में जितना सत्य स्थान बना लेता है जीवन उतना ही उत्तम तथा शोभनीय बन जाता है। जिसके जीवन में असत्य का समावेश है वह चाहे स्वयं को कितना ही महान् प्रदर्शन करावे, जन समाज में उसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं होती। ऐसे झूठे पुरुषों का जीवन अनुकरणीय नहीं होता अतः राष्ट्र के समुत्थान के लिए प्रथम जीवन में सत्य का आयोजन करो।

2- राष्ट्र की रक्षा के लिये अनुशासन कठोर होना चाहिये। अनुशासन की शिथिलता से किसी प्रकार के भी नियम का पालन न हो सकेगा। अनुशासन का अर्थ है शासन के अनुकूल चलना। इससे समाज की व्यवस्था नहीं बिगड़ती है।

3- उत्तम कर्म करने का दृढ़ निश्चय अनेक प्रकार की बाधाओं को दूर करता है। बाधा तभी तक कार्य में बाधा करती है जब तक उससे भयभीत रहा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय निवृत्ति के साथ बाधा निवृत्ति होती है। जब दृढ़ निश्चय कर लिया जाता है कि चाहे कुछ भी हो इस काम को पूर्ण करना है तब रुकावट कैसी।

4- सुख दुःख, मान अपमान, जय, पराजय, हानि लाभ में सम भाव रहकर उत्तम कर्म करना तप है। जब मानव का यह स्वभाव बन जाता है तब वह तपस्वी बन जाता है। ऐसे तपस्वी ही राष्ट्र की रक्षा करने वाले या उसको आगे बढ़ाने वाले होते हैं।

5- मानव का ज्ञान प्राप्ति लक्ष्य होना चाहिये। 'ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः' जो मनुष्य ज्ञानी नहीं है, समझदार नहीं है, जीवन के लक्ष्य से अनजान हैं उनमें तथा पशुओं में कोई अन्तर नहीं है। और भी कहा है—"नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिहविधते" संसार में ज्ञान से पवित्र कुछ भी नहीं है।

6- संगठन समाज को दृढ़ बनाता है। पतली पतली लकड़ियां या पतले पतले धागे इकट्ठे होकर बड़े भारी भार को उठाने में समर्थ होते हैं। समाज में या राज्य में या परिवार में जब तक संगठन नहीं होगा तब तक वह आगे न बढ़ सकेगा।

ये ऊपर लिखित गुण मानव समाज या देश या राष्ट्र की रक्षा करने वाले हैं।

३१

प्रभु भक्तों की पहचान

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि।
तितिक्षन्ते अभिशस्ति जनानां इन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः॥

यजु० ३४,१८

हे प्रभो! (इच्छन्ति त्वा) तुझे वे ही चाहते हैं जो (सोम्यासः सखायः) जो शान्त चित्त तथा संसार का भला चाहने वाले हैं (सोमं सुन्वन्ति, प्रयांसि दधति, जनानां अभिशस्ति तितिक्षन्ते) जो वीर्य रक्षक हैं, जो परिश्रमी हैं, जो जनता द्वारा दिये गए कष्ट को भी प्रेम से सहन करते हैं। (इन्द्र त्वदा कः चन हि प्रकेतः) हे प्रभो! निश्चय से तू बड़ा अद्भुत है, तेरे विषय में ठीक प्रकार से नहीं जाना जा सकता है।

1- जो मानव ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है उसे शान्त चित्त होना चाहिये। जिस प्रकार गधले जल में शकल दिखाई नहीं देती इसी प्रकार अशान्त चित्त में प्रभु के दर्शन नहीं होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2- जिसमें किसी व्यक्ति से जलन हो उसे भी प्रभु के दर्शन नहीं होते। यदि प्रभु दर्शन की अभिलाषा है तो प्राणिमात्र से प्रीति बढ़ा, मित्रता बढ़ा। कोई भी संसार में तुम्हारा शत्रु न हो उसी अवस्था में प्रभु के दर्शन होते हैं।

3- निर्बल इन्द्रिय वाला मानव सबल प्रभु के दर्शन नहीं कर सकता। सबल को मिलने के लिए मानव तू भी इन्द्रियों समेत स्वयं को सबल बना। सबल बनने के लिये वीर्य रक्षा की नितान्त आवश्यकता है। हीन वीर्य पुरुष, कामी पुरुष कभी भी महान् प्रभु के दर्शन नहीं कर सकता अतः वीर्य की रक्षा करके सबल बन।

4- प्रयत्नशील या पुरुषार्थी के लिये कोई भी वस्तु अलभ्य नहीं है। जो पुरुषार्थ तो करता नहीं केवल बातें बनाकर सफलता चाहता है उसके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता है। यदि प्रभु प्राप्ति की इच्छा है तो इस जीवन को परिश्रमी बना। कहा भी है—आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः" आलस्य वह वस्तु है जो अपने शरीर रूपी मन्दिर में रहकर इसी का नाश करता रहता है।

5- भले कार्य करने में स्वार्थी लोगों के कारण तुझे कष्ट भी उठाने पड़ेंगे, निन्दा, स्तुति भी तेरी होगी, स्वार्थी लोग तुझ पर दोषारोपण करने के लिये प्रयत्नशील होंगे, इत्यादि कष्टों को प्राप्त कर। यदि तू यह समझता है कि यह सब मेरी परीक्षा के लिये हैं, उन सब की परवाह न करके अपने काम में लगा रह। किसी की निन्दा न कर, तुझे सफलता मिलेगी यह निश्चय जान।

6- हे प्रभो ! तू कितना विचित्र है, तेरी सृष्टि भी कैसी विचित्र है। जिनका भला किया जाता है वे ही विद्रोही इस तेरे संसार में दिखाई देते हैं, जिनका बुरा किया जाता है वे मित्र बन जाते हैं। सज्जन दुःखी हैं, पापी आनन्द उड़ा रहे हैं। अपनी कुदरत की लीला को, खेल को तू ही जानता है हम अज्ञानी प्राणी आपकी लीला को कुछ नहीं जान सकते। हमारा ज्ञान तो समुद्र के जल के बिन्दु के समान भी नहीं है। अतः प्रभो तू बड़ा विचित्र है, विचित्र है यह तेरी रचना।

३२

जीवन नौका को पापाचार से बचा

अनड्वाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात्।
आरोहत सवितु र्नावमेतां षड्भिरुर्वीभिः अमतिं तरेम॥

अथर्व० १२,२,४८

(अनड्वाहं प्लवं अन्वारभध्वम्) भारीवाही बैल के समान इस जीवन रूपी नौका को आश्रय लो या इससे यात्रा प्रारम्भ करो। (सः वः दुरितात् अवधात् निर्वक्षत्) वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौका तुमको पाप से, निन्दा या कुवचन से पार उतारे अथवा बचावे (सवितु: एतां नाव आरोहत्) प्रभु से निर्मित इस जीवन नौका पर आरोहण करो (षड्भि: ऊर्भिः अमतितरेम) छ:ओ पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ऊपर, नीचे की दिशाओं से दुर्बुद्धि से पार उतरें।

1- जीवन को एक नौका के समान स्वीकार किया गया है। जिस प्रकार नौका पर सवार होके यात्री उससे यात्रा करना आरम्भ कर देता है उसी प्रकार इस जीवन नौका पर सवार होके जीवन को उत्तम बनाने के लिये यात्रा प्रारम्भ करो। शिथिल होके न बैठो। जो जीवन नौका पर सवार होके चुपचाप बैठे हैं उनको इस नौका से कोई लाभ नहीं है। यह जीवन नौका यात्रा के लिये है। यात्रा में सुन्दर दृश्य देखने के लिए है। इसकी सुन्दरता तभी तक रहती है जब तक इस नौका से उचित काम लिया जाता है।

2- यह जीवन नौका पाप से, निन्दा से, कुवचन से नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। ये दोष इस जीवन नौका में छिद्र कर देते हैं जिसके कारण यह नौका डूब जाती है।

जो पाप करता है वह डूब जाता है। जिस प्रकार अग्नि के सानिध्य से उष्णता आ जाती है इसी प्रकार पापियों के सहवास से मानवीय जीवन भी निर्बल हो जाता है। ये पाप इस जीवन नौका को सर्वत: सच्छिद्र कर देते हैं जिससे यह जीवन नौका देखते देखते डूब जाती है। दूसरों की निन्दा करना, दूसरों के लिये कुवचन बोलना भी इस जीवन नौका के शत्रु हैं। अत: जीवन नौका की रक्षा के लिये सदा निन्दा से दूर रहो तथा किसी के लिए कुवचनों का प्रयोग न करो।

3- एक बात का ध्यान रखो यह जीवन नौका प्रभु द्वारा विनिर्मित है इससे यह नौका उत्तम है। कारीगर को देखकर, वस्तु को देखकर उस वस्तु की वास्तविकता का ज्ञान होता है। जब इसका रचयिता बहुत ही अच्छा है, इसमें सामान भी उस कारीगर ने उत्तम लगाया है तब यह नौका निकृष्ट नहीं हो सकती। हमने ही अपनी मूर्खता से अपनी बे समझी से इसको बिगाड़ा है, इसके सुधार के लिये सतत प्रयत्नशील रह।

4- एक निश्चय रख पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ऊपर, नीचे किसी भी ओर तुझे गमन करना हो कुमति को सर्वथा नष्ट कर दे। जिस प्रकार पैनी छुरी से सब्जी आदि काटकर शाक सब्जी बनाई जाती है और असावधानी होने पर अंगुली आदि भी कट जाती है इसी प्रकार कुमति काटने वाली तथा सुमति सदा पालन पोषण करने वाली है। अत: सदा सुमति बना रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३३

चिन्तामुक्त रह तथा उत्तम कर्म कर

धृष्टि रस्यपाग्ने अग्निमामादं जहि निष्क्रव्यादं सेध देवयजंवह ।
ध्रुवमसि पृथिवीं दृंह ब्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि सजात वन्युदधामि
भ्रातृव्यस्य वधाय ।। यजु० १,१७

हे मानव ! (धृष्टिः असि) धैर्य वाला बन (अग्ने आम अदं अग्नि, क्रव्यअदं अग्नि जहि निःसेध) हे आगे बढ़ने की इच्छा वाले मानव ! तू कच्ची वस्तुओं को खाने वाली तथा कच्चे मांस को खाने वाली चिन्ता रूपी अग्नि को नष्ट कर तथा उसका निराकरण कर (देवयजंवह) देवयजन करता हुआ चल (ध्रुवं असि पृथिवीं दृंह) स्थिर होके उत्तम काम कर, पृथिवी रहकर अपने यश को फैला (भ्रातृव्यस्य वधाय) शत्रुता को दूर कर (ब्रह्मवनि क्षत्रवनि सजातवनि त्वा उपदधामि) तुझ मैं ब्रह्मसेवी, क्षत्रसेवी, प्रजासेवी बनाना चाहता हू ।

1- इस संसार में रहने के लिये सदा धैर्य का आश्रय ले वह तेरा मित्र से भी अधिक सहायक होगा। संकट में तेरी रक्षा करेगा।

2- चिन्ता को जीवन से समाप्त कर। चिन्ता निर्बल पुरुष किया करते हैं। सबल पुरुष चिन्ता नहीं चिन्तन करते हैं। तू सबल बनके ससार में विचरण कर।

3- देव यजन कर। देव यज्ञों से सुख तथा शान्ति की वर्षा होती है। माता, पिता, गुरु, उपदेशक, संन्यासी ये सब देव हैं जहां इनके उत्तम उपदेश होते हैं वे देवघर हैं। ऐसे घर सर्वत्र विस्तृत हों।

4- स्थिर होके सारे कार्य कर। ऐसा कार्य कर जिससे तेरा यश भूमण्डल पर फैले। बुरे कर्म मनुष्य के यश को घटाते हैं उत्तम कर्म से मनुष्य यशस्वी बनता है।

महान् पुरुष उत्तम कार्य करने से बनते हैं। सेवा का लक्ष्य बनाके काम को करता रह। सेवक की सेवा करने में आनन्द यथा प्रसन्नता होनी चाहिये यदि ऐसा नहीं तो सेवक नहीं बने हो।

5- जीवन में ब्रह्म सेवक बन, रक्षक बन तथा मानव जाति का सेवक बन।

मानव जीवन की सार्थकता तभी रहती है जब मानव जीवन में ब्रह्म की शिक्षा प्राप्त हो, ज्ञानोपार्जन हो सके, ब्राह्मणों की, असहयोगियों की रक्षा की जा सके। मानव मानव से प्रेम करे, संकट काल में एक दूसरे की सहायता करे, शत्रु का सर्वथा क्षय हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल, १९७२

समाज सन्देश

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां (रोहतक)
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

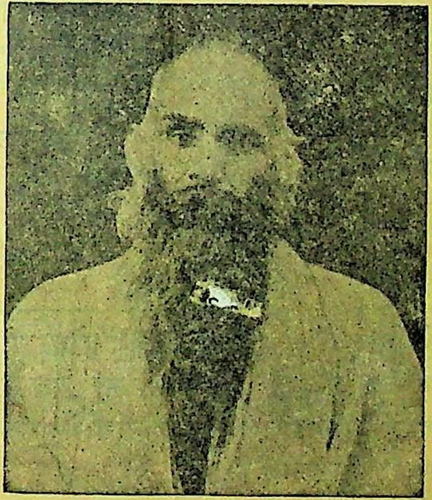

श्री भक्त फूल सिंह

ओ३म् । उप नः सवनागहि सोमस्य सोमपाः पिब ।
गोदा इद् रेवतो मदः ।। (ऋ० १, ४, २)

इन्द्र ! सोम के पीने वाले तुम इन हवनों में आओ ।
नियत समय पर आते हो प्रभु ! आज हमारे घर आओ ।।
धन वाले तुम यजमानों को गोधन दे खुश हो जाओ ।
दूध दही घी से घर भर कर कष्ट सभी हर ले जाओ ।।

—निधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

विषय		लेख		पृष्ठ
सम्पादकीय	...		...	१
शिष्टाचार	...		...	२
गुरुकुल भैंसवाल के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर संस्कृत सम्मेलन में पारित प्रस्ताव	...	अरविन्द कुमार	...	३
आह्वान	...	श्याम	...	४
गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवा कलां का संक्षिप्त विवरण	...	हरिदत्त विद्याप्रभाकर	...	५
लम्बे जलूसों से और गगनभेदी नारों से आर्य समाज कब तक जीता रहेगा	...	पंडित आनन्द प्रिय	...	६
जय बंगला देश	...	देवराज मलिक	...	९
प्रातः जागरण	...	ब्र० राजपाल 'वागीश'	...	१०
ईश वन्दना	...	ब्र० राजपाल 'वागीश'	...	१२
कलानोर की लड़ाई (किस्त दूसरी)	...		...	१३
बंगला देश	...	चन्द्र प्रकाश	...	१३

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा अखबार सम्बन्धा पत्र-व्यवहार का पता—

धर्म भानु

व्यवस्थापक समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल (रोहतक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ओ३म् ❀

व्यवस्थापक : श्री धर्मभानु

गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कलां (रोहतक)
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

* समाज सन्देश *

प्रकाशन तिथि : २५ मार्च, १९७२

सम्पादक :
आचार्य हरिश्चन्द्र

सहायक सम्पादिका :
आचार्या सुभाषिणी

वर्ष तेरहवाँ | अप्रैल १९७२ | अङ्क : पहला

सम्पादकीय

समाज सन्देश तेरहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। पिछले बारह वर्ष पूर्ण करना तथा नियमानुसार प्रकाशित होना इस महंगाई के युग में बहुत बड़ी बात है। पीछे समाज सन्देश नियमानुसार प्रकाशित नहीं हो सका। इसके दो कारण थे। एक प्रैस कर्मचारियों की परिस्थिति, दूसरा समाज सन्देश कार्यकर्ताओं का गुरुकुल भैंसवाल की स्वर्ण जयन्ती में व्यस्त रहना।

परमात्मा की कृपा से स्वर्ण जयन्ती निर्विघ्न सम्पन्न हो गई। तथा गुरुकुल भैंसवाल को स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में दो शानदार छात्रावास मिल गये। वहां अब शानदार स्नान गृह हैं। पीने के पानी की समस्या समाप्त हो चुकी है। शीघ्र ही वहाँ के छात्रों को राजेन्द्र तरण ताल तैयार मिलेगा।

प्रश्न समाज सन्देश के संचालन का है। वह चल रहा है। यद्यपि अर्थाभाव में समाचार पत्र अथवा पत्रिका का चलना कठिन है फिर भी हमारा प्रयत्न है कि जो काम शुरू हुआ है वह चलता रहे। क्योंकि नीतिकारों के मत के अनुसार काम को बिना विचारे आरम्भ न करना ही बुद्धिमत्ता है और यदि आरम्भ कर दिया जावे तो उस को पार ले जाना अत्यन्त आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज सन्देश के माध्यम से हम उन कुरीतियों तथा कुप्रथाओं का तो विरोध करते ही हैं, साथ-साथ उदीयमान लेखकों को भी प्रोत्साहन देते हैं कि वे आवें तथा ज्ञान गंगा में गोता लगाकर देख लें। हमने बहुत से लेखकों को यों हताश पाया है कि उनके लेखों को प्रकाशित करने वाला कोई साधन नहीं। कोई उपाय नहीं। उन्हें समाज सन्देश सहारा देगा, बढ़ावा देगा।

समाज सन्देश के पाठकों से हम इतना निवेदन तो करना चाहते हैं कि वे अधिक नहीं तो कम से कम अपने अतिरिक्त एक एक ग्राहक तैयार कर दें।

हम समाज सन्देश की शुभ कामनाओं सहित यह आशा करते हैं कि समाज सन्देश यों ही फलता फूलता रहेगा तथा आगे बढ़ता रहेगा।

—सम्पादक

शिष्टाचार

यदि पीना चाहते हो तो प्रेम रस पिओ
यदि पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।
यदि देना चाहते हो तो नीची निगाह कर दो, और भूल जाओ।
यदि छोड़ना चाहते हो तो पाप और अत्याचार छोड़ो।
यदि आप आना चाहते हैं तो कर्तव्य पालन के लिये आओ।
यदि तोलना चाहते हो तो अपनी शक्ति को तोलो।
यदि देखना चाहते हो तो स्वयं को देखो।
यदि सुनना चाहते हो तो ईश्वर की प्रसन्नता और दुखियों की बात सुनो।
यदि सीखना चाहते हो तो दूसरों की भलाई करना सीखो।
यदि हँसना चाहते हो तो अपनी मूर्खता और स्वार्थ पर हंसो।
यदि रोना चाहते हो तो अपनी स्वार्थता और उदासीनता पर रोओ।
यदि पाना चाहते हो तो अपने किये फल पाओ।
यदि लिखना चाहते हो तो स्वाधीनता, वीरता के लेख लिखो।
यदि जीना चाहते हो तो यश के लिये जीओ।
यदि मरना चाहते हो तो देश, धर्म और आन के लिए मरो।
यदि देना चाहते हो तो स्वभाव दो।
यदि जीतना चाहते हो तो तृष्णा को जीतो।
यदि खाना चाहते हो तो गुस्सा खाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल भैंसवाल के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर—
संस्कृत सम्मेलन में पारित प्रस्ताव

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल (रोहतक) की स्वर्ण जयन्ती २५, २६, २७ मार्च १९७२ को अत्यन्त धूमधाम के साथ मनाई गई। २५ मार्च को रात्रि को संस्कृत-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री प्रो० भारतभूषण जी विद्यालंकार प्राध्यापक वैदिक साहित्य विभाग गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने की। इस सम्मेलन में अनेक ब्रह्मचारियों के श्लोकोच्चारण, भाषण एवं सम्वाद के अतिरिक्त ख्यातिलब्ध विद्वानों ने सारगर्भित व्याख्यान दिये। इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित हुआ :—

१- भारत के प्रत्येक व्यक्ति को, जो संस्कृत नहीं जानता, संस्कृत सीखनी चाहिए। जो जानते हैं, उन्हें कम से कम दो व्यक्तियों को सिखानी चाहिए तथा कम से कम एक घंटा प्रतिदिन संस्कृत में ही बात-चीत करनी चाहिए।

२- सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा के अध्ययन का माध्यम संस्कृत ही होना चाहिए।

३- संस्कृत के लुप्त एवं अनुपलब्ध ग्रन्थों के प्रकाशन की व्यवस्था होनी चाहिए।

४- संस्कृत के लब्धकीर्ति पण्डितों को रिटायर्ड होने के उपरान्त नूतन ग्रन्थों के निर्माण एवं प्राचीन ग्रन्थों को सुलभ करने के लिए सरकार को उनका पूर्ण भार ग्रहण करना चाहिए तथा उन विद्यार्थियों के, जो संस्कृत विषय नहीं पढ़ते हैं, हिन्दी के कोर्स में एक छोटी-सी संस्कृत-पुस्तिका भी होनी चाहिए, जिससे कि उनके संस्कृत भाषा सम्बन्धी संस्कार जागृत रह सकें।

प्रेषक :—
अरविन्द कुमार 'द्वादश'
गुरुकुल भैंसवाल
जि० रोहतक (हरियाणा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आह्वान

—'श्याम'

भारत मां के वीर सपूतो,
वैरी ने ललकारा है।
आज मिटा दो उसकी हस्ती,
यह कर्त्तव्य तुम्हारा है।
फिर से राणा को आज बुला,
दुश्मन देखे चण्डी स्वरूप।
झाँसी की रानी उठे आज,
लहरे भैरव का भीम रूप।
उठो बचाओ बढ़ करके,
भारत माता की आन-बान।
तुम ही भारत के हो भविष्य,
तुम ही भारत के विजय गान।
तुम भगतसिंह, आज़ाद, दत्त,
तुम आज़ादी के परवाने।
तुम तिलक, गांधी, तुम सुभाष,
तुम अमर शौर्य के दीवाने।
क्या समझ रहा निक्सन माओ,
भुट्टो को आज बताना है।
फ़रमान, नियाज़ी गये जिधर,
उस राह उसे भी जाना है।
गाण्डीव आज फिर टंकारे,
फिरे परशु उठे कट जाएँ भाल।
अरि मुण्डों की दीवाल उठे,
शोणित से पदमा बने लाल।
शिशुपाल खड़ा गाली देता,
अब चक्र सुदर्शन उठा वीर।
हो खण्ड खण्ड पाषाण शिला,
हिल जाये धरा, अम्बर, समीर।
उठ, तरुण न कर तू अब प्रमाद,
मां के चरणों में शीश डाल।
नश्वर जीवन अर्पित करके,
अमरत्व तिलक ले लगा भाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां का
संक्षिप्त विवरण

—हरिदत्त विद्या प्रभाकर
११७-११८, मोडल बस्ती, दिल्ली

***

बात सन् १९१९ की है। मई मास की तपती धूप और सनसनाती लूओं से वायुमंडल अत्यन्त गर्म है। पक्षियों ने चहचाना छोड़ कर वृक्षों के पत्तों में आश्रय ले लिया है। पशु भी जलाशय के समीप पहुँच गये हैं। गर्मी की परवाह न करते हुए हरियाणा राज्य के जिला रोहतक के प्रमुख गांव भैंसवाल कलां से दो मील दक्षिण-पश्चिम की ओर भयंकर वन्य पशुओं तथा विषैले विषधरों से युक्त वन प्रदेश में हजारों व्यक्तियों का वृक्षों की छाया में बैठा जनसमूह बड़ी उत्सुकता से गुरुकुल (स्वामी श्रद्धानन्द) के दर्शनों के लिए आतुर था। ज्यों-ज्यों सूर्य आकाश में चढ़ता जा रहा था, त्यों-त्यों लोगों की भीड़ भी निरन्तर बढ़ती जा रही थी। दोपहर १२ बजे विशाल जन-समूह से घिरी, लम्बा कद, तमतमाता हुआ तेजस्वी मुखमंडल, आजानुबाहु, विशाल वक्षस्थल, गेरुए वस्त्र पहने, नंगे पांव पैदल ही आती हुई भव्य तपोमूर्ति को देख कर जन्ता हर्षोन्मत्त होकर जय-जय कार कर उठी। यही वह तपोमूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द थे, जो कुछ समय पूर्व तक भ्रष्ट, व्यसनी एवं रिश्वतखोरी आदि दुर्गुणों से पूर्ण जीवन बिताने वाले विख्यात पटवारी फूल सिंह (अब भक्त फूल सिंह) का निमन्त्रण प्राप्त कर हरियाणा की पवित्र भूमि को वैदिक आदर्शों का मूर्तरूप प्रदान करने हेतु गुरुकुल की स्थापना के लिए पधारे थे। वेद मन्त्रों की मधुर ध्वनि से गुंजरित तथा सुगन्धित पदार्थों की हुति से सुवासित वातावरण में स्वामी जी ने गुरुकुल की आधार-शिला रखी। गुरुकुल का नाम रखा गया "गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां" स्वामी जी की अपील तथा भक्तत फूल सिंह जी के अथक परिश्रम से १५० बीघा भूमि और २८ हजार रुपये एकत्रित हुए। प्रथम वर्ष में ५० ब्रह्मचारी गुरुकुल में प्रविष्ट हुए, इस अवसर पर चारों ओर के ग्रामीण दूध से भरे मटके लाये और दूध इतना आया कि उसे पीने वाला कोई न रहने पर गुरुकुल भूमि में बहाना पड़ा – जो यह प्रमाणित कर रहा था कि हरियाणा में दूध की नदियां बहती थीं।

गुरुकुल स्थापना के निश्चय की घटना भी बड़ी विस्मयकारी है। आर्य समाज पानीपत के वार्षिकोत्व पर दो व्यक्ति अपने साथी एक पटवारी के साथ आये। उस समय यज्ञ हो रहा था। यज्ञ की समाप्ति पए ब्रह्मा के आसन पर विराजमान पंडित जी ने यज्ञ की महिमा बताते हुए यज्ञोपवीत धारण करने का महत्व बताया। पटवारी के दोनों साथियों ने यज्ञोपवीत धारण किया और अपने साथी से भी यज्ञोपवीत लेने का आग्रह किया। साथी पटवारी ने जो अभी तक अनेक व्यसनों का अभ्यासी था, यज्ञोपवीत लेने में आनाकानी की, परन्तु साथियों ने जबर्दस्ती उसके गले में यज्ञोपवीत डाल ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया : इस पर पटवारी ने पंडित जी के चरणों में मस्तक झुका दिया और व्रत लिया। व्रत-पालन के लिए पटवारी ने दृढ़ संकल्प किया और सुप्तात्मा जाग उठी। धीरे-धीरे पटवारी के जीवन में परिवर्तन आया। पटवारी ने जब महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में—"जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य का पालन होता है वह देश बड़ा सोभाग्यवान होता है।" पढ़ा तो गुरुकुल खोलने का दृढ़ निश्चय मन में ठान लिया। उसी समय पटवारी ने त्याग-पत्र दे दिया। तभी से पटवारी फूल सिंह 'भक्त फूल सिंह' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। और भक्त जी के सहायक बने स्वर्गीय चौधरी स्वरूपलाल जी, जिन्होंने अंतिम समय तक आपका साथ निभाया और गुरुकुल की सेवा की।

गुरुकुल की स्थापना के समय गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक ब्रह्मचारी युधिष्ठिर (वर्तमान स्वामी व्रतानन्द जी) ने आचार्य का पद ग्रहण किया—सुयोग्य गुरुओं के सहयोग से गुरुकुल भली-भांति चलने लगा और भक्त जी गुरुकुल के लिए धन संग्रह आदि का कार्य करने लगे, परन्तु पीड़ित लोगों की कहानी सुन कर भक्त जी उनके दुःख मिटाने में तल्लीन हो गये और गुरुकुल की आर्थिक स्थिति डगमगाने लगी। इस बीच गुरुकुल से स्नातक निकलने शुरू हो गये थे और उन्होंने गुरुकुल संचालन का कार्य सम्भाल लिया था। भक्त जी की लगन अभी पूरी नहीं हुई थी। वे जहां बालकों के लिए गुरुकुल का होना आवश्यक समझते थे, वहां कन्याओं के लिए भी कन्या गुरुकुल अनिवार्य मानते थे। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए भक्त जी ने १९३- में खानपुर ग्राम के पास कन्या गुरुकुल की स्थापना की और सर्वप्रथम अपनी दोनों पुत्रियों को गुरुकुल में प्रविष्ठ किया। धीरे-धीरे यह गुरुकुल भी अग्रसर होता गया और आज यह गुरुकुल सारे हरियाणा में कन्याओं की सब से बड़ी शिक्षण संस्था है जिसमें एक हजार से अधिक कन्याएँ शिक्षा पा रही हैं। दोनों संस्थाओं का संचालन गुरुकुल महा-सभा कर रही है।

गुरुकुल भैंसवाल को स्थापित हुए ५३ वर्ष पूरे होने को हैं। इस बीच गुरुकुल को अनेक बार उत्थान-पतन देखने को मिले हैं। इस समय गुरुकुल अपनी उन्नति की चरम सीमा की ओर अग्रसर है। घास की झोंपड़ियों के स्थान पर अनेक भव्य भवन बन गये हैं। चारों ओर का वन्य प्रदेश लहलहाते खेतों में बदल गया है। रात्रि को विद्युत प्रकाश से दिग्दिगत जगमगा उठता है। प्रातः सायं ब्रह्मचारियों के वेदगान से आकाश गुंजायमान हो उठता है। कुरुकुल में लगभग साढ़े तीन सौ छात्र गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्यालंकार परीक्षा तक की शिक्षा निःशुल्क प्राप्त कर रहे हैं। ब्रह्मचारियों के लिए दूध उपलब्ध कराने के लिए एक सुव्यवस्थित गोशाला भी है जिसे सरकार से मान्यता एवं सहायता प्राप्त है। गुरुकुल के चारों ओर सिंचित भूमि है जिससे पुष्कल अन्न तथा ताजी शाक-सब्जियां प्राप्त होती हैं। इस समय गुरुकुल के कुलपति हरियाणा के शिक्षा-मन्त्री चौ० माडू सिंह जी व उपकुलपति आचार्य विष्णुमित्र जी विद्या प्रभाकर अथक परिश्रम कर गुरुकुल को अग्रणी बना रहे हैं। गुरुकुल के आचार्य देवता स्वरूप महामुनि जी यथा नाम तथा गुण की साक्षात् मूर्ति हैं। उनका सौम्य स्वभाव अनायास ही मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

यह है संक्षिप्त विवरण गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलाँ (जि० रोहतक) का जो अपना स्वर्ण जयन्ति महोत्सव २५ से २७ मार्च तक धूमधाम से मना रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लम्बे जलूसों से और गगनभेदी नारों से आर्य समाज कब तक जीता रहेगा

लेखक—आनन्द प्रिय पंडित
प्रधान, गुजरात प्रान्तीय आ० प्र० सभा, बड़ौदा

***

इस समय आर्य समाज अपनी शिक्षण संस्थाओं के ऊपर वार्षिक तीन करोड़ रुपये से अधिक रकम खर्च कर रहा है। महात्मा आनन्द स्वामी जी ने एक प्रवचन में कहा था कि डी० ए० वी० कॉलेज कमेटी ही पौन करोड़ रुपये अपनी संस्थाओं पर खर्च करती हैं भला इससे किस आर्य का हृदय आनन्द से विभोर न हो। अनेक गुरुकुल, कॉलेज, हाई स्कूल, विधवाश्रम, अनाथालय चलाने पर भी आज आर्य समाज को, आर्य संस्थाओं को एक बड़ी भारी कमी का अनुभव हो रहा है वह है आर्यसमाज के पास इस समय निष्टावान कार्यकर्ताओं का अभाव।

हमारी संस्थायें निष्टावान कार्यकर्ता उत्पन्न नहीं कर रहीं। एक कार्यकर्ता चला जाता है उसके रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं होती और एक समय अति प्रतिभाशाली संस्थायें श्रद्धा रहित कार्यकर्ताओं के हाथ में पड़ जाती हैं और अपना गौरव खो देती हैं। आर्यसमाज का भी यही हाल है। हमारा प्रचारतन्त्र खोखला हो गया है जिनको हम प्रकाश स्तम्भ के रूप में रखते हैं वे ही टिमटिमाते दिये की तरह थोड़ा प्रकाश देकर बुझ जाते हैं।

आर्य समाज ने प्रचार तथा संस्थाओं के लिए त्यागी, तपस्वी कार्यकर्ता उत्पन्न करने का आयोजन गम्भीरता पूर्वक किया ही नहीं। इसी कारण आर्यसमाज व्यवस्थित योजना के अभाव में दिन प्रतिदिन शिथिल होता जा रहा हैं। हमारी स्थिति "अपूज्य यत्र पूज्यते" जैसी हो रही है। आज जिस संगठित व्यवस्था से गुजरात में जैन स्वामी नारायण सम्प्रदाय के लोग काम करते हैं, वे दिन प्रतिदिन सफल हो रहे हैं।

हमने अफ्रीका का दो बार भ्रमण किया। प्रथम १९३४ में, द्वितीय १९४७ में। प्रथम प्रवास में हमने देखा कि पूर्व अफ्रीका में आर्य समाज की प्रतिष्ठा और प्रभाव सर्वसाधारण पर अत्यधिक था। दूसरे प्रवास में देखा कि आर्य समाज के मन्दिर और शिक्षिण संस्थाओं के भवन तो बड़े विशाल एवं गौरव उपजावे ऐसे थे परन्तु जनता पर स्वामी नारायण का प्रभाव था आर्य समाज का स्थान गौण हो गया।

गुजरात में गोंडल में स्वामी नारायण सम्प्रदाय के लोग एरोप्लेन में आये और लाखों रुपये दे गये। इनके विशाल कॉलेज, गुरुकुल, मन्दिर बड़े भव्य रूप में खड़े हो रहे हैं। पर आज टंकारा में यहां के कार्य के लिए आर्य जगत उपराम है।

(शेष पृष्ट 11 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ जय बंगला देश ❋

नव भास्वर सा उदित हुआ है,
बंगला देश यह दिव्य महान् ।
महानिशा को किया पार अब,
सुख सुमनों का हो गया भान ॥
तानाशाह उस याहिया खाँ को,
निर्दयता ही भाई थी ।
शोषण करके बग जनों का,
पुरखों की रीत निभाई थी ॥

लोग अवामी विजित हुई जब,
सत्ता संकट से घिर आई ।
बंगबन्धू को कैद कर लिया,
याहिया की बुद्धि शठियाई ॥
दमनचक्र चलपड़ा उन्हीं पर,
जो आज़ादी चाहते थे ।
घबरा कर प्रतिदिन भारत में,
लाखों दुखिया आते थे ॥

मानवता हित सबल हमने,
दिया हीन उस जनता को ।
हमने फिर संकेत किया था,
यू० एन० ओ०, अमरीका को ॥
मुक्ति वाहिनी शीघ्र बनी फिर,
पाक का मर्दन करने को ।
देख पराजय वह फिर अपनी,
स्वयं आ गया मरने को ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान बूझ कर उस गीदड़ ने,
सिंह को स्वयं जगाया है ।
अपनी त्रुटियों से ही उसने,
बंगला देश बनाया है ॥
बंग बहादुर हंसता - हंसता,
मृत्यु से भिड़ जाता है ।
बलिदान शहीदों का आखिर,
एक दिन तो रंग लाता है ।

मां का बेटा बहन का भाई,
वधुओं का श्रृंगार गया ।
शहीद देश का मातृवेदी पर,
अपना मस्तक वार गया ॥
नव प्रसून सा देश शीघ्र ही,
खूब फले और फूले ।
वसुधा पर ही स्वर्ग बसा—
फिर 'देव' कीर्ति को छूले ॥

—देवराज मलिक, बी० एड०
हिन्दी एम० ए० प्रथम वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातः जागरण

—ब्र० राजपाल 'वागीश' (गुरुकुल आर्य नगर)

***

जिस ईश्वर ने हमें इस संसार में उत्पन्न किया और जिसने हमें मनुष्य का जन्म दिया है। क्या आपने उस प्रभु का भी कभी चिन्तन किया है?.........सौ में से पच्चीस प्रतिशत मनुष्य ऐसे हैं जो उस ईश्वर का ध्यान अर्थात् उसका स्मरण करते हैं।

वेद हमें आज्ञा देता है कि:—

"प्रातः रत्नं प्रातरित्वा दधाति" अर्थात् जो मनुष्य प्रातःकाल ब्राह्मणमुहूर्त्त में उठता है वही मनुष्य ऐश्वर्य को धारण करता है। अतः हमें ब्रह्ममुहूर्त्त में उठना चाहिए और उस प्रभु का चिन्तन करना चाहिए, जो मनुष्य प्रातःकाल नहीं उठता है उसका आलस्य और प्रमाद बढ़ जाता है। प्रातःकाल उठने के अनेक लाभ हैं। प्रातःकाल की बेला में स्वास्थ्यप्रद वायु चलती है। उस वायु के सेवन से हम स्वस्थ रह सकते हैं और बल की भी वृद्धि होती है, बुद्धि तीव्र हो जाती है। जो मनुष्य प्रातःकाल की बेला उठता है, वही इनको प्राप्त करता है।

किसी कवि ने कहा है कि :—

हर रात के पिछले पहरे में, एक दौलत लुटती रहती है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है।।

यदि आप महान् और बुद्धिमान बनना चाहते हैं तो आप प्रातःकाल उठिए। परन्तु आज की अवस्था ही भिन्न है। जब प्रातःकाव सूर्य उदय होता है, तब माता अपने पुत्र से कहती है कि बेटा उठो सूर्य उदय हो गया है। तब पुत्र अपनी मां को कहता है कि माँ तुम भी बड़ी पगली हो कि यदि सूर्य रात के दो बजे निकल जाये तो क्या मैं भी उसी समय खड़ा हो जाऊँ। ये है आजकल के भारतीय बच्चों की आदत। हमें प्रातः उठना चाहिए, व्यायाम करना चाहिए, फिर स्नान, सन्ध्या, हवन, स्वाध्याय और अपना पाठ याद करना चाहिए। तभी सच्चा लाभ होगा।

मनुस्मृति में भी कहा है कि :—

ब्राह्मेमुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान वेदतत्त्वार्थमेव च।।

रात्रि के चौथे पहर अर्थात् चार घड़ी रात्रि रहे तब उस समय मनुष्य उठ करके आवश्यक कार्य करके धर्म, अर्थ, शरीर के रोगों का निवारण और उस परमात्मा का ध्यान करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद भी कहता है कि—'भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वप्नम् ।।' हे मनुष्यो ! प्रातःकाल जागना तुम्हारे कल्याण के लिए है और अधिक शयन करना तुम्हारे नाश के लिए है। संसार के लोगो ! यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो अति निद्रा, प्रमाद और आलस्य को छोड़ दें। यह एक अटल नियम है कि जो मनुष्य जागता है वही पाता है और जो अधिक सोता है वही गंवाता है।

हे संसार के लोगो ! जो कुछ हुआ सो हुआ अब भी चेतो और अजस्वी बनने का प्रयत्न करो। उठो जागो और अति श्रेष्ठ बनो। यदि इसी जीवन में जीवन को आदर्श, दिव्य, महान् और पवित्र न बनाया तो वह जीवन ही क्या ?

यदि तुमने इसी जीवन में कुछ कर लिया सो कर लिया फिर ऐसा सुनहरा अवसर मिलना अति दुर्लभ है। इस लिए जिस प्रभु ने तुम्हें इतना सुन्दर जीवन दिया है, उस प्रभु के प्रति हमारा भी कर्त्तव्य बन जाता है कि जो ईश्वर का ओंकार नाम है, सो पिता पुत्र के सम्बन्ध के समान है। ईश्वर के जितने नाम हैं, उनमें से ओंकार सब से उत्तम है। इसीलिए प्रातःकाल उठ करके इसी का जप अर्थात् स्मरण और उसी का अर्थविचार सदा करना चाहिए।

(पृष्ठ 7 का शेष)

यदि ये ही गतिविधि रही तो हम १९७५ में शताब्दी मनाकर चाहे हम दस मील लम्बा जलूस निकालें और जयकारों से आकाश गुंजायमान कर दें पर हमें दुःख के साथ स्वीकार करना पड़ेगा कि आर्य समाज का संगठन धीमे-धीमे शिथिल हो रहा है उसको लाभ नहीं होगा।

आज भारत सरकार श्री अरविन्द, श्री रविन्द्र नाथ ठाकुर, श्री स्वामी विवेकानन्द के स्मारकों पर रास्ट्र के कोष में से लाखों रुपया खर्च कर रही हैं। क्यों न आर्य जगत एक महान आन्दोलन कर टंकारा में एक संस्कृत युनिवर्सिटी महर्षि दयानन्द के नाम पर स्थापित करने के लिए केन्द्रीय सरकार को बाध्य करे।

इस कार्य को गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने उठाया है। हमें आशा है सारे विश्व में आर्य समाज तथा आर्य समाजें इस विचार का आन्दोलन कर केन्द्र सरकार को यह काम करने के लिए बाध्य करें।

अब जलूसों का, भाषणों का युग नहीं रहा सक्रिय आर्य समाज बना कर ही हम आर्य समाज की रक्षा कर सकते हैं। आशा है आर्य जगत टंकारा महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय बनाने में योगदान दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश वन्दना

—ब्र० राजपाल 'वागीश', गुरुकुल आर्य नगर, पो० कुरड़ो

***

तेरी शरण में आये प्रभो हम।
तेरी रचना का गुनगान करें हम॥

सन्ध्या, हवन हम कभी ना छोड़ें।
भक्ति से मुख हम कभी ना मोड़ें॥

हे सच्चिदानन्द! पिता तू ही है।
माता तू ही है, भ्राता तू ही है॥

हे सृष्टि कर्त्ता! दयालु तू ही है।
अपने भक्तों पर कृपालु तू ही है॥

तूने ही चाँद और सूरज बनाये।
पृथ्वी और आकाश सजाये॥

तेरा ही नाम हम सब मिलकर गाते।
ऋषि, मुनि तेरा योग लगाते॥

हे सच्चिदानन्द! दया करो तुम।
अपने वेद ज्ञान से भरपूर करो तुम॥

ज्ञान तेरा पाकर के यशस्वी कहलायें।
शक्ति हमें दो, तपस्वी बन जायें॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलानोर की लड़ाई

(किस्त दूसरी)

***

इस कर्ते को कलानोर का काला पूजा कहा जहा जाता था परन्तु कई विद्वानों का मत है कि वहां दुराचार होता था और दुराचारी टोला ही का अड्डा था हिन्दु देवियों का बलात् धर्म नष्ट किया जाता था। इससे हिन्दू समाज पर असन्तोष और घृणा फैल गई थी। कुछ विद्वानों का मत है कि यह कानूनन सारे हरियाणा में लागू नहीं था उसकी सीमा में ही लागू था परन्तु सारे देश का हिन्दु समाज अपने ऊपर इस अनुचित प्रथा को कलंक मानता था परन्तु प्रान्त भर में कोई ऐसा समूह संगठित नहीं था जो इस दुराचारी टोले का मुकाबला करने में समर्थ हो। एक बहादुर समुह जिसका वर्णन आगे आप पढ़ेंगे महाभारत काल से लेकर आज तक हर युग में जीवत युद्ध में रहा। यही दल प्रजातन्तर का उपासक और तानासाही हकूमत का मुकाबला करने वाला सिद्ध होता है जिसका वर्णन कई एक लोकल इतिहास में पाया जाता है जैसे पंडित जयचन्द विद्यालंकार द्वारा लिखी पुस्तक इतिहास प्रवेश पृष्ठ सख्या ११२, ११३ जिसे अग्रेज लेखक W कुर्क साहब के लिखे ट्राईबस एण्ड कास्ट ऑफ दि नार्थ वैस्टर्न एण्ड परोवीजन अवध के लेखक मिस्टर कर्क साहब आदि आदि के लेखों से ये दल भारतीय सस्कृति का पुजारी रहा है। इस समूह को हर युग की भाषा भेद से कई नामों में पुकारा गया है जैसे चीनी भाषा में युवाचियों युची, महाभारत काल में रसक और तुसार प्रभावशाली समूह माना गया है वैदिक काल में आर्य, बोध काल मे हिन्दु संस्कृति के उपासक, राजपूत काल में सुरोहा और लल, मुगल काल में मलीक की उपाधि हासिल हुई। मलीक का माना पिछड़ी ताकतों को एकत्रित करके उनके कष्टों को दूर करना और लड़ना।

इस युग में मलीक के माने हिन्दी में देवता, उर्दू भाषा में फरिस्ता, फारसी भाषा में मलीक सीधा होता है। इसी समुह में एक प्रभावशाली व्यक्ति गांव डबरपुर बाबा भिच्छाराम का जन्म हुआ जिसके पांच लड़के एक सपुत्री जिसका नाम रती कोर था का विवाह गांव गाँगटान माजरा डीघल में हुआ। आखिर बारात डबरपुर आई पीछे सामाजिक प्रथा के अनुसार रथ, घुड़-सवार, बैल आदि भरपूर बारात सजकर आई प्रथा के अनुसार बाबा बिच्छा राम ने पूर्ण दान-दहेज देकर बरात को बिदा कर दिया जब बह बरात वापिस लोट रही थी तो उपरोक्त रसम के अनुसार देवी रतीकोर से एक रात कलानोर में रहने को कहा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगला देश

—चन्द्र प्रकाश

आज विश्व का कोई भी ऐसा देश नहीं जो यह न जानता हो कि भारत न केवल एक शान्तिप्रिय देश है बल्कि भारत मानवता का एक उज्ज्वल प्रतीक है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब किसी देश पर संकट आया या जब कभी मानव जाति दुख से पीड़ित हुई तो भारत भी उनके दुःख में दुःखी हुआ और उनके दुःखों को दूर करने के लिये भारत ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज जब कि विश्व के प्रत्येक देश में भारत-पाक युद्ध की चर्चा हो रही है, क्या किसी देश ने भारत-पाक युद्ध के आधारभूत तत्वों की ओर भी दृष्टिपात किया है, कि यह युद्ध हुआ क्यों? इसका कारण क्या है? इस युद्ध का मुख्य कारण बंगला देश की दुःखी जनता है। जब बंगला देश के लोगों ने स्वतन्त्र स्वराज्य की मांग की तो उन लोगों पर जुल्म ढाये गये, उनके महान् नेता 'शेख मुजीबुर्रहमान' को बन्दी बना लिया गया, निहत्थे लोगों पर अत्याचार किये गये, मां बहनों की अस्मतें लूटी गईं, मासूम जनता का कत्ले आम किया गया, लोगों को घर से बेघर कर दिया गया। हैवानियत का एक नंगा खेल खेला जा रहा था। जिसे देखकर मन में विद्रोह की भावना का बढ़ना स्वाभाविक था। बंगला देश के लोगों में, इतने जुल्मों के पश्चात् भी, अपने देश को स्वतन्त्र कराने की भावना किसी प्रकार कम न हो सकी बल्कि इतने कष्ट झेलने के पश्चात् विद्रोह की भावना और बढ़ गई। तो क्या उस संकट के समय किसी देश ने बंगला देश के लोगों पर हो रहे अत्याचार को रोकने का प्रयत्न किया? नहीं, किसी ने भी ऐसा नहीं किया। सिवाय एक भारत के। केवल भारत ही एक ऐसा देश था जिसने उन दुःखी लोगों के आंसुओं को पोंछा और माताओं, बहनों को अपमान से बचाया। नब्बे लाख बंगला देश के निवासी अपने घरों को छोड़कर, अपने जिगर के टुकड़ों को सीने से लगाये हुए भारत की ओर शरण लेने भागे। क्यों? क्योंकि वे लोग जानते थे कि भारत ही एक ऐसा महान् देश है जो दुःखियों के आंसू पोंछ सकता है और जो घर से बेघर हुए लोगों को शरण दे सकता है। भारत ने बंगला देश से आये नब्बे लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरणार्थियों को शरण दी। उनके लिये प्रत्येक वस्तु रोटी, कपड़ा, रहने का स्थान आदि का प्रबन्ध किया। और उन्हें विश्वास दिलाया कि जल्द ही उनके देश को स्वतन्त्र कराकर उन्हें बड़ी इज्जत से उनके घरों में वापिस पहुंचा दिया जायेगा। भारत सदा से दुःखियों की सहायता करता आया है, कर रहा है और करता रहेगा। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि भारत जानता है कि दुःख क्या होता है।

लेकिन राष्ट्रपति जनरल याहिया खां के दिल में उन मासूमों पर, रोते बिलखते बच्चों पर जुल्म ढाते ज़रा भी तरस न आया। अगर उस जनरल की मां बहन पर इस प्रकार जुल्म किया जाता या उसकी आंखों के सामने उसकी बेटी की अस्मत लूटी जाती तो क्या वह चुप रह सकता था ? नहीं ! उसकी आंखें इस दृश्य को देखकर आग उगलने लगती और तब न जाने क्या हो जाता ! लेकिन वह मोटी बुद्धि का इन्सान इन सब बातों को सोचे तब न ! वह शायद यह नहीं जानता कि दुःख देना कितना आसान है और दुःख झेलना गितना कठिन। जब भारत ने नब्बे लाख व्यक्तियों के आंसुओं को पोंछा तो जनरल याहिया खां जल-भुन गया। वह कहने लगा कि यह हमारा आपसी झगड़ा है। इसमें भारत को दख़ल देने की कोई आवश्यकता नहीं। इसके अतिरिक्त जब भारत ने याहिया खां से नरमी का व्यवहार करने को कहा तो वह भारत को ही दोषी ठहराने लगा और भारत के बहुत से नगरों पर हवाई हमले कर दिये। लेकिन शायद वह भारतीय जवानों की ताकत का अन्दाज़ा न लगा सका। वह शायद यह भूल गया कि भारत अगर एक शान्तिप्रिय देश है तो वह अपनी सीमाओं की रक्षा करना भी जानता है। उसे शायद यह भी मालूम नहीं था कि भारत अपनी ओर देखने वालों की भारत आंखें निकालना भी जानता है और भारत अपनी ओर बढ़ते हुए हाथों को काटना भी जानता है। लेकिन याहिया खां तो दूसरे देशों की ताकत पर बोल रहा था। वह नहीं जानता था कि जब स्वयं में शक्ति न हो तो कोई सहायता नहीं करता।

भारत पर पाकिस्तान द्वारा किये गये आक्रमणों का भारतीय जवानों ने मुँह तोड़ जवाब दिया। दुश्मन के सैंकड़ों विमानों को भारतीय जवानों ने आंख झपकते ही नष्ट कर दिया। पाकिस्तान के उन पैटन टैंकों को, जिनपर याहिया को बहुत नाज़ था, भारतीय जवानों ने कच्ची मिट्टी से बने खिलौनों की भांति तोड़ दिया। उस समय जनरल याहिया खां को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये था जब उसके सैनिक जवानों ने, डर से, अपने आपको आत्म-समर्पण किया था। क्या इसी बहादुरी पर वह भारत पर हमला करने चला था। शायद वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी सन् १९६५ की मार को बहुत जल्द भूल गया था। याहिया को शायद इस बात की खबर नहीं थी कि भारतीय जवान एक बार जब सीना तानकर आगे बढ़ता है तो विजय प्राप्त करके ही वापिस लौटता है। भारतीय जवान फौलादी जवान है जो कभी मौत से नहीं घबराता। अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये वह अपने आप को बलिदान करने से नहीं हिचकिचाता। यह साहस जो भारतीय जवानों में पाया जाता है उनकी विजय का कारण बना। इस हमले का पश्चात्ताप तो याहिया खां को तब हुआ जब उसे अपने हाथ से बँगला देश खोना पड़ा। शायद इस मार के पश्चात् दुश्मन फिर कभी भारत की ओर देखने का दुस्साहस नहीं करेगा।

बँगला देश को आज़ाद करवाने के पश्चात् भारत ने फौरन लड़ाई बन्द करने की घोषणा की ? क्योंकि भारत जिन आदर्शों के लिये लड़ रहा था वे पूरे हो चुके हैं। जिन दुखियों के लिये लड़ रहा था उनके दुख दूर हो चुके थे। बंगला देश को स्वतन्त्र करा दिया गया था। बँगला देश में और भारत में आये ९० लाख शरणार्थियों में एक खुशी की लहर फैल गई थी। आज खुशी के कारण उनके मुखारविन्द से बार बार 'जय बँगला' और 'जय हिन्द' आदि शब्दों का उच्चारण हो रहा है।

भारत ने युद्ध विराम करके अपने आदर्शों का सबूत दे दिया। भारत ने यह दिखा दिया कि वह कभी किसी की भूमि पर कब्ज़ा नहीं करना चाहता, लेकिन घर से बेघर हुए लोगों को उनके घर पहुँचाना, दुःखी लोगों के दुःखों को दूर करना भारत अपना पहला कर्तव्य समझता है। यही है महान् भारत की संस्कृति, यही है महान् भारतवर्ष की संस्कृति, यही है उसके आदर्श और यही है भारत का गौरव।

"जय बँगला"—'जय भारत'!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Statement about ownership and other particulars about news paper 'Samaj Sandesh' to be published in the first issue every year after last day of February

FORM IV

(See Rule 8)

1.	Place of Publication	...	Gurukul Bhainswal Distt. Rohtak.
2.	Periodicity of its publication	...	Monthly
3.	Printer's Name	...	Dharam Bhanu
	Nationality	...	Indian
	Address	...	Gurukul Vidya Peeth Haryana, Bhainswal Kalan (Rohtak).
4.	Publisher's Name, Nationality, Address	...	Same as above in No. 3
5.	Editor's Name	...	Harish Chander Acharya
	Nationality	...	Indian
	Address	...	245, Model Town, Rohtak
6.	Name and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital		Mahasabha Gurukul Bhainswal Kalan (Rohtak)

I, DHARAM BHANU hereby declare that the particulars given above are correct to the best of my knowledge and belief.

(Sd.) **Dharam Bhanu**

Publisher,

'Samaj Sandesh'

Dated : 25-3-1972.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved for Libraries by D. P. I's Memo No. 3/44—[illegible] Dated 2-8-61

Approved by the Chairman. Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farmers and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश' –डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P 416

सदस्य संख्या

नाम श्री उपकुलपति महोदय,

स्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

पत्रालय P.O. गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार

जिला

* विज्ञापन की दरें *

टाइटल पेज एक चौथाई—	...	...	२० रुपये
बैक पेज आधा—	...	...	१५ रुपये
अन्दर का एक पृष्ठ—	...	...	१२ रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ—	...	...	६ रुपये

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक-मण्डल

व्यवस्थापक :
धर्मभानु जी

प्रधान सम्पादक :
आचार्य हरिश्चन्द्र

सह सम्पादक :
आचार्या सुभाषिणी

ओ३म्

समाज सन्देश

सामाजिक, सांस्कृतिक लेखों का संगम हिन्दी मासिक
गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

प्रकाशन तिथि : 25 नवम्बर, 1976

वर्ष 17 | अक्तूबर/नवम्बर/दिसम्बर, 1976 | अंक 7/8/9

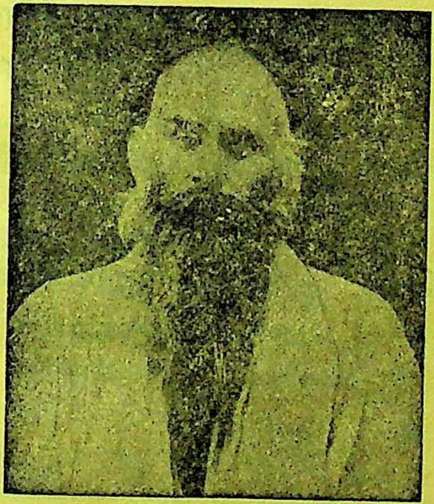

(स्वर्गीय श्री भक्त फूलसिंह जी)

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् ।
सुता विदथे अक्रमुः ।।७६६।।

मद के च्यावक सौम्य मधुर रस अभिषुत हैं विक्रय करते ।
यज्ञ सदन में धन यश वैभव अन्नादिक के मन भरते ।।
सब धनियों में श्रेष्ठ धनी जो वह भगवान मघवा प्रभु है ।
उसकी ही ये महिमा गावें जो जग में व्यापक विभु है ।।

—निधि

मूल्य : एक प्रति 90 पैसे | वार्षिक चन्दा 10 रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ विषय—सूची ❋

	विषय		लेखक		पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	...		...	1
2.	"आ तू हमारा चेला हो जा"	...	श्री सुखदेव शास्त्री	...	4
3.	हिंसा और अहिंसा	...	श्री रायचन्द जैन	...	6
4.	बच्चों के बीच बापू बच्चे बन जाते	...	सरोजनी टण्डन	...	7
5.	कठोपनिषद् स्वाध्याय	...	आचार्य विष्णुमित्र	...	13
6.	आओ, हम उसी का वरण करें	...	डा० चन्द्रदत्त कौशिक	...	27
7.	वन्दन है, अभिनन्दन उनका	...	डा० चन्द्रदत्त कौशिक	...	28
8.	हमारा राष्ट्रीय पर्व : 15 अगस्त	...	डा० चन्द्रदत्त कौशिक	...	30
9.	हार भी जीत है	...	डा० चन्द्रदत्त कौशिक	...	31
10.	Realization of God	...	श्री प्रेमचन्द	...	32
11.	बलिपशु टीपू	...	श्री प्रताप सिंह	...	34
12.	गुरुकुल समाचार	...		...	37
13.	'अनुभूति और अभिव्यक्ति	...	श्री विष्णुदेव प्रसाद	...	40
14.	मनुर्भव—I	...	श्री देवराज मलिक	...	42

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा समाज सन्देश सम्बन्धी पत्र व्यवहार का पता—

धीरेन्द्र कुमार विद्यालंकार

गुरुकुल भैंसवाल कलां, सोनीपत (हरियाणा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधानमन्त्री की विदेश यात्रा

हाल ही में श्रीमती गांधी ने तीन अफ्रीकी राष्ट्रों की यात्रा की है। यह यात्रा अपने आप में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। दो अफ्रीकी राष्ट्र जिम्बाब्वे (रोडेशिया) तथा नमीबिया आजादी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उन देशों पर गोरों का कब्जा है। भारतवर्ष ने हमेशा ही पराधीन देश को स्वतन्त्र कराने में पूर्ण सहयोग दिया है। प्रधानमन्त्री ने इन देशों की यात्रा में यह स्पष्ट कर दिया है कि भारतवर्ष स्वाधीनता के इच्छुक इन देशों को हर सम्भव मदद देगा। वे दिन दूर नहीं हैं कि वे अफ्रीकी राष्ट्र स्वाधीन होंगे। तन्जानिया के राष्ट्रपति न्येरेरे ने तो यहां तक कह दिया है कि यदि रोडेशिया के प्रधानमन्त्री इयान स्मिथ ने अपने हठ को नहीं छोड़ा तो उन देशों में एक महान् युद्ध छिड़ जाएगा।

प्रधानमन्त्री की यात्रा का महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी है जिम्बाब्वे सघर्ष के नेताओं में मतभेद हैं। उन्हें ऐक्य स्वरूप देने में प्रधानमन्त्री की उत्साहप्रद यात्रा सुपरिणाम देगी। इधर २९ अक्तूबर से जिनेवा कान्फ्रेंस हो रहा है। उसमें जिम्बाब्वे की बहुसंख्यक जनता को शासन देने के सम्बन्ध में विचार किया जायेगा। श्री स्मिथ का विचार है कि श्री किसिंजर–योजना के अनुसार सुरक्षा, व्यवस्था तथा कानून मामले गोरों के पास रहें तथा अन्य सभी मामले बहुसंख्यक जनता के प्रतिनिधियों के हाथों में दे दिए जायें। वे इस प्रकार की अन्तरिम सरकार बनाने पर अड़े हुए हैं। उनका तर्क है कि ये विभाग किसी भी नई सरकार, जिसे अनुभव प्राप्त नहीं है, देने का तात्पर्य है, वहां अव्यवस्था को जन्म देना। लेकिन एक अन्य सम्मेलन में अफ्रीकी नेताओं ने उनकी इस मांग को अस्वीकार करते हुए कहा कि सरकार के प्रतीक इन विभागों को पुनः गोरों के हाथ में दे देना स्वयं दूसरे के हाथों कठपुतली बन जाना है। इस मामले को लेकर अभी गतिरोध बना हुआ है। अंक पाठकों के हाथों जाते-जाते शायद समस्या कोई अन्य मोड़ ले लेगा।

चीन में माओ के बाद :-

गत 9 सितम्बर को माओ चल बसे। माओ के रहते ही पश्चिमी पत्रकारों ने "माओ के बाद कौन ?" यह प्रश्न उठाना प्रारम्भ कर दिया था। लेकिन इतना सत्य है कि आज चीन अपने जिस विकसित स्वरूप में विश्व में एक बड़ी ताकत के रूप में इज्जत प्राप्त देश है उसकी भूमिका बनाने वाले माओ थे। देश को इस कद्र विकास के मोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर उन्होंने ला खड़ा किया था कि देश स्वयं विकास करता गया। माओ चीन के एक लोक प्रिय नेता थे। सांस्कृतिक क्रान्ति के बाद उनके देश में बच्चा-बच्चा माओ की तस्वीर गले में बांधे चलता था। दुकानों, निजी मकानों, कार्यालयों तथा सभी सार्वजनिक स्थानों पर माओ के चित्र लगने लगे थे। वे चीन के सर्वेसर्वा थे। उन्होंने देश की ऐसी विदेश नीति व गृह नीति तैयार की थी कि अन्य विकसित देश भी उसे 'रहस्यमय' मानने लगे थे। दूसरे शब्दों में माओ आधुनिक चीन के निर्माता थे।

माओ के देहान्त के बाद चीन में एक विचित्र सत्ता संघर्ष छिड़ गया। यह सत्ता-संघर्ष भारतीय प्रधानमन्त्री के पद के लिए संघर्ष न था, यह संघर्ष अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए फोर्ड-कार्टर का सत्ता संघर्ष नहीं था। माओ के 'चेयरमेन' पद के उत्तराधिकार को प्राप्त करने के लिए पहले पहल नौ उम्मीदवार थे, लेकिन ज्यों-ज्यों स्थिति स्पष्ट होती गई तथा संघर्ष का दौर समाप्त होने चला तो स्पष्ट हुआ कि प्रधानमन्त्री श्री हुआ चेयरमैन बने है। हुआ ने चेयरमैन बनते ही अपने विपक्षी खेमे पर आक्रमण शुरु कर दिया। अगले दिन ही उग्रपंथी माओ की विधवा छियांग छिंग को अन्य तीन प्रमुख नेताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया। उसके बाद सैंकड़ों उग्रपंथी गिरफ्तार किये गये हैं। यहां उग्रपथ और उदार पन्थ में भेद समझ लेना आवश्यक है। प्रधानमन्त्री हुआ उदारवादी दल के नेता हैं तथा माओ की पत्नी श्रीमती चिंग उग्रपन्थी दल की नेता। उदारवादी चाहते हैं कि चीन सिद्धान्तों के मार्गों पर चलते हुए ही उदार दृष्टिकोण को अपना कर 'शत्रु' देशों के साथ मैत्री बनाकर देश को आर्थिक, सामाजिक रूप से समृद्ध करने हेतु दूसरे देशों से मुक्त व्यापार आदि करके अपनी नीति को कट्टर न रहने दें। उनकी नजर में उग्रपन्थी देश के विकास के दुश्मन हैं। उग्रपन्थी ठीक इसके विपरीत हैं। उनका कार्य करने का ढंग दूसरा है। वे किताबी साम्यवाद के सिद्धान्तों का अक्षरशः पालन करते हुए उसके दुश्मन को कुचल देना चाहते हैं। वे देश के विकास और समृद्धि को साम्यवाद के मूल सिद्धान्तों के सामने गौण समझते हैं। वैसे दोनों ही पन्थ चीनी कम्युनिज्म के अंग हैं।

हुआ को कम्युनिष्ट पार्टी की केन्द्रीय कार्यकारिणी ने चीन का चेयरमैन स्वीकार कर लिया है। इससे वहां पर बदलते हुए घटनाचक्र को स्थिरिता मिलेगी। यों माओ के देहान्त के पश्चात् तथा हुआ के पदारूढ़ होने के समय बराबर यह घोषणा की गई है कि आन्तरिक तथा विदेशी सभी विषयों पर माओ द्वारा प्रतिष्ठापित नीतियों का ही अनुसरण किया जायेगा। देश के नाम पहले प्रसारण में हुआ 24 अक्टूबर को अपनी नीतियों को विशद करेंगे।

उ० प्र० शासन और हिन्दी

अभी-अभी समाचार पत्रों में मोटी सुर्खियों के साथ एक समाचार छपा है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ० प्र० हाईकोर्ट ने हिन्दी की याचिका को उ० प्र० शासन की अड़ंगेबाजी के बावजूद वैध माना है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के खण्डपीठ में दो न्यायाधीश विद्वान् जज श्री एम. एन. शुक्ल और विद्वान् जज गोपीनाथ ने अपने निर्णय में कहा है कि उच्च न्यायालय ने धारा 348(2) के अन्तर्गत दिनांक 5 सितम्बर 1969 को एक अधिसूचना जारी की थी जिसमें हिन्दी में देवनागरी लिपि में रिट याचिका लिखने और उसे निर्णय करने के लिए दायर करने की वैधता में कोई सन्देह नहीं करना चाहिए।

मान्य जजों ने कहा है कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि न्यायालय अपने-अपने क्षेत्र के निवासियों के कल्याण के लिए कार्य करता है अतः सिद्धान्ततः न्यायालय की भाषा उसी क्षेत्र की भाषा होनी चाहिए। अदालत का निर्णय वास्तव में प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। आजकल न्यायालयों में जितने मुकद्दमें दायर होते हैं उनमें ग्रामीण अंचल के मुकद्दमें प्रमुखता रखते हैं। हिन्दी भाषी क्षेत्र के नगरों से आने वाले 95% मुकद्दमें ऐसे घरानों से आते हैं जो हिन्दी पढ़ लिख लेते हैं। तो फिर अदालतों की भाषा क्यों अंग्रेजी रहे। इसी सन्दर्भ में एक घटना याद आती है—किसी विशाल सभा में श्री मालवीय भाषण दे रहे थे। उनकी जिह्वा पर अंग्रेजी फर्राटे से गति कर रही थी। महात्मा गांधी भी उसी सभा में उपस्थित थे। मालवीय जी का भाषण समाप्त हुआ, गांधी जी खड़े हुए और श्रोताओं की ओर मुखातिब होकर बोले—"अँग्रेजी के इस भाषण को कितने लोगों ने समझा?" इने-गिने हाथ खड़े हुये। फिर न समझने वालों का क्रम आया तो चारों ओर हाथ ही हाथ दिखाई देने लगे।

न्यायालय जनता की सेवा के लिए हैं—उन्हें जनता से सम्पर्क का माध्यम ढूंढ़ना होगा और वह माध्यम वही होगा, जो उस क्षेत्र की भाषा है। फिर प्रजातन्त्र देश में न्यायालय की भाषा का क्षेत्रीयकरण अत्यावश्यक है।

यहां एक प्रश्न अचानक दिमाग में कौंध जाता है कि इतने बड़े हिन्दी राज्य के प्रशासन ने कोर्ट में हिन्दी के प्रयोग का विरोध क्यों किया? क्या प्रशासन अपनी कथनी और करनी में अन्तर प्रकट नहीं कर रहा है? जिस भाषा के प्रचार प्रसार के प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए दूर-दूर देशों से प्रतिनिधि आकर इकट्ठे होते हैं, जिस भाषा को सही मायनों में "राष्ट्रभाषा" का रूप देने के लिए केन्द्र जी तोड़ कोशिश कर रहा है—उस भाषा की कोर्ट में प्रयोग के लिए एक हिन्दी राज्य विरोध करें—आश्चर्य की बात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के पुण्य अवसर पर

"आ तू हमारा चेला हो जा"

—श्री सुखदेव शास्त्री,
प्रधान स्नातक संघ, गुरुकुल भैंसवाल

[प्रस्तुत लेख आर्यसमाज के महान् सेनानी ऋषि भक्त ने लिखा है। इस लेख में धर्म के सच्चे स्वरूप का प्रतिपादन अत्यन्त रोचक शब्दों में किया है। लेख में लेखकीय प्रतिभा पूर्ण रूप से विकसित हुई है। महर्षि दयानन्द के विचारों से पुष्ट यह लेख अज्ञानान्धकार में भटकते हुए ग्रामीण व नागरिकों का सही पथ प्रदर्शन करेगा। - सं०]

आजकल देश में चेला बनाने की प्रवृति पुन: जोर पकड़ती जा रही है। अनेक नए पन्थ, मत, गुरुडम, फिर सिर उठा रहे हैं। दीन-हीन भोले-भाले देशवासियों को धर्म का असली अर्थ प्रकट न करके धर्म के नाम पर उग रहे हैं। अरबों रुपये की सम्पत्ति बना रहे हैं। विदेशों की सैर, चेलियों की चंचलता से चलायमान हुए धर्म की नौका को बीच मझधार में डुबो रहे हैं। धर्म के सच्चे स्वरुप को समझ कर जनता के सामने सबसे पूर्व महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने ही प्रस्तुत किया है। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में इसी प्रकार के एक प्रकरण को 11वें समुल्लास में उठाया गया है।

महर्षि से किसी ने प्रश्न किया है—आप सब का खण्डन करते ही आते हो, परन्तु अपने २ धर्म में सब अच्छे हैं। खण्डन किसी का न करना चाहिए जो करते हो तो आप इन से विशेष क्या बतलाते हो। जो बतलाते हो तो क्या आपसे अधिक वा तुल्य कोई पुरुष न था और न है। ऐसा अभिमान करना आपको उचित नहीं, क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में एक एक से अधिक, तुल्य और न्यून बहुत हैं। किसी का घमण्ड करना उचित नहीं। महर्षि ने उत्तर दिया—धर्म सब का एक होता है वा अनेक। जो कहो अनेक होते हैं तो एक दूसरे के विरुद्ध होते हैं वा अविरुद्ध। जो कहो कि विरुद्ध होते हैं तो एक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना दूसरा धर्म नहीं हो सकता। और जो कहो अविरुद्ध हैं तो पृथक् २ होना व्यर्थ है। इसलिए धर्म और अधर्म एक ही हैं अनेक नहीं, यही हम विशेष कहते हैं कि जैसे सब सम्प्रदायों के उपदेशों को कोई राजा इकट्ठा करे तो एक सहस्र से कम नहीं होंगे परन्तु इन का मुख्य भाग देखो तो पुरानी, किरानी, जैनी और कुरानी चार ही हैं। क्यों कि इन चारों में सब सम्प्रदाय आ जाते हैं।

कोई राजा उन की सभा करके कोई जिज्ञासु होकर प्रथम वाममार्गी से पूछे हे महाराज! मैंने आजकल न कोई गुरु और न किसी धर्म का ग्रहण किया है। कहिये सब धर्मों में से उत्तम धर्म कौनसा है, जिसको मैं ग्रहण करूं। वाममार्गी ने कहा—हमारा है। जिज्ञासु ने कहा–ये नौ सौ निन्नानवे कैसे हैं? वाममार्गी ने कहा–सब झूठे और नरकगामी हैं। क्योंकि "कौलात् परतरं नहि। कुलार्णव २।८। इस वचन के प्रमाण से–हमारे धर्म से परे कोई धर्म नहीं। जिज्ञासु ने पूछा आप का क्या धर्म है। वाममार्गी ने उत्तर दिया–भगवती का मानना, मद्यमांस आदि पंचमकारों का सेवन और रुद्रयामल आदि चौसठ तन्त्रों का मानना इत्यादि। जो तू मुक्ति की इच्छा करता है तो हमारा चेला होजा। जिज्ञासु ने कहा–अच्छा, परन्तु और महात्माओं का भी दर्शन कर पूछ पाछ आऊं। पश्चात् जिसमें मेरी श्रद्धा और प्रीति होगी उसका चेला हो जाऊंगा। वाममार्गी ने कहा - अरे क्यों भ्रांति में पड़ा है। ये लोग तुझ को बहका कर अपने जाल में फंसा लेंगे। किसी के पास मत जावे, हमारे ही शरणागत हो जा, नहीं तो पछतावेगा।

देख! हमारे मत में भोग और मोक्ष दोनों हैं। जिज्ञासु ने फिर कहा - अच्छा देख तो आऊं।

आगे चलकर शैव के पास जा के पूछा तो ऐसा ही उत्तर उसने दिया। इतना विशेष कहा कि बिना शिव, रुद्राक्ष, भस्मधारण और लिंगार्चन के मुक्ति कभी नहीं होती। वह उसको छोड़—

नवीन वेदान्ती जी के पास गया। जिज्ञासु ने पूछा—कहो महाराज! आपका धर्म क्या है? वेदान्ती ने कहा—हम धर्माधर्म कुछ भी नहीं मानते, हम साक्षात् ब्रह्म हैं, हम में धर्माधर्म कहां है? यह जगत् सब मिथ्या है और जो ज्ञानी शुद्ध चेतन हुआ चाहे तो अपने को ब्रह्म मान, जीवभाव को छोड़ नित्यमुक्त हो जायेगा। जिज्ञासु ने कहा – जो तुम ब्रह्म नित्यमुक्त हो तो ब्रह्म के गुण, कर्म, स्वभाव तुम में क्यों नहीं। और शरीर में क्यों बन्धे हो? वेदान्ती ने कहा—तुझ को शरीर दीखते हैं, इसी से तू भ्रान्त है। हमको कुछ नहीं दीखता बिना ब्रह्म के। जिज्ञासु ने फिर पूछा—तुम देखने वाले कौन और किसको देखते हो? वेदान्ती ने कहा– देखने वाला ब्रह्म और ब्रह्म को ब्रह्म देखता है। जिज्ञासु ने पूछा—क्या दो ब्रह्म हैं? वेदान्ती ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा—नहीं अपने आप को देखता है। जिज्ञासु ने कहा—क्या कोई अपने कन्धे पर आप चढ़ सकता है ? तुम्हारी बात कुछ नहीं केवल पागलपने की है।

उसने आगे चलकर जैनियों के पास जा के पूछा—उन्होंने भी वैसा ही कहा, परन्तु इतना विशेष कहा कि "जिन धर्म के बिना सब धर्म खोटा, जगत् का कर्ता अनादि ईश्वर कोई नहीं, जगत् अनादि काल से जैसा का वैसा बना है और बना रहेगा। आ, तू हमारा चेला हो जा, क्योंकि हम सम्यक्त्वी अर्थात् सब प्रकार से अच्छे हैं, उत्तम बातों को मानते हैं। जैन मार्ग से भिन्न सब मिथ्यात्वी हैं।

आगे चलकर ईसाई से पूछा—उसने वाममार्गी के तुल्य सब जवाब सवाल किये। इतना विशेष बतलाया—"सब मनुष्य पापी हैं" अपने सामर्थ्य से पाप नहीं छूटता। बिना ईसा पर विश्वास के पवित्र होकर मुक्ति को नहीं पा सकता। ईसा ने सबके प्रायश्चित् के लिए अपने प्राण देकर दया प्रकाशित की है। तू हमारा ही चेला हो जा।

[क्रमशः]

❀ हिंसा और अहिंसा ❀

—रायचन्द जैन, रोहतक
B. A., B. T.
बाबरा मोहल्ला, रोहतक

★

आज के दिन
हिंसा से हिंसा
टकरा रही है।
बन नहीं पा रहा कुछ
लाखों जानें जा रही हैं।
ऐसे घिनौने युग में
हिंसा का सामना
हिंसा से नहीं
अहिंसा से करो।
अहिंसा के सिद्धान्तों पर
चलते हुए
न्याय के लिए लड़ो।
फिर तुम देखोगे
इस विश्व में
शान्ति की लहर उठेगी।
वह लहर,
जिसे पाने के लिए
जिसे अपनाने के लिए
हम शताब्दियों से
आतुर हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गान्धी जी के जन्म-दिवस पर विशेष

बच्चों के बीच बापू बच्चे बन जाते !

—सरोजनी टण्डन

★

गांधी जी हरिजनों को बहुत प्यार करते थे। उनके साथ किया जाने वाला छूतछात का बर्ताव उन्हें किसी भी कीमत पर सहन नहीं होता था। अपने अखबार का नाम भी उन्होंने 'हरिजन' ही रखा। हरिजन हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हैं, यह वह मानते थे। इसके लिए गांधी जी ने कई बार उपवास किये और अछूतों का उद्धार करने में उन्हें सफलता भी मिली।

एक बार उपवास तोड़ते समय एक हरिजन बालक डरते-डरते बापू के पास पहुंचा। उसने बड़े प्यार से कहा—'बापू मैं आपके लिये एक चीज लाया हूं।'

वहाँ खड़े दूसरे लोगों ने बालक को भगाना चाहा। लेकिन गाँधी जी ने बड़े प्यार से उसे अपने पास बिठाया। उसने अपनी जेब से दो सूखे सन्तरे निकाले। वे सन्तरे गांधी जी के आगे रख दिये। सब लोग उस बच्चे को बड़ी हैरानी से देख रहे थे।

गांधी जी ने बड़े प्रेम से उन सन्तरों को ले लिया। बच्चे को उन्होंने आशीर्वाद दिया। उन्हीं सूखे सन्तरों का बापू ने रस निकलवाया। उसी से अपना उपवास तोड़ा।

वह बालक गांधी जी का प्यार पाकर निहाल हो गया।

सवाल हल कर दिया

हरिजन के लिये बापू कोई लेख लिख रहे थे। एक भोला सा लड़का चुपचाप उनके पास आ कर खड़ा हो गया।

बापू ने देखा तो बड़े प्यार से बिठाकर पूछा—'क्या चाहिये तुम्हें ?'

बालक बोला—"बापू जी, एक गणित का सवाल है, मैंने बहुत कोशिश की, लेकिन मुझ से हल नहीं हुआ। मैंने और भी लोगों से पूछा। उन सबने मना कर दिया और कहा कि हमारे पास टाइम नहीं है। आप ही बता दीजिये न !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लाओ मुझे सवाल दिखाओ। तुम पहले ही मेरे पास आ जाते' बापू ने प्यार से कहा।

बापू अपना लेख बीच में छोड़ कर ही सवाल हल करने में लग गये। उन्होंने वह सवाल हल कर दिया। उस बालक को ठीक से समझा भी दिया।

गांधी जी कहते थे कि प्रेम जैसी पवित्र चीज दुनिया में कोई नहीं है। अपने प्रेम के घेरे को इतना ज्यादा बढ़ाना चाहिए कि जिस में सारी दुनिया ही आ जाये।

बापू हार गए भी

एक दिन बापू बच्चों के साथ घूमने निकले, घूमते-घूमते वे सब एक जेल के निकट पहुंच गए। जेल उन लोगों से कुछ ही दूरी पर रह गई थी। बच्चों को एक खेल सूझा, वे बापू से बोले—'देखें सामने वाली जेल की उस दीवार को सबसे पहले कौन छूता है।'

बापू बच्चों के भोलेपन पर मुग्ध होकर हंसने लगे; बच्चों का मन छोटा न हो इसलिए वह दौड़ के लिए खुशी-खुशी तैयार हो गये।

एक बच्चे ने दौड़ शुरु करने के लिए एक दो तीन करके ताली बजाई। दौड़ शुरु हो गई। बच्चे हवा की तरह दौड़ने लगे, बापू भला इतनी तेज कैसे दौड़ सकते थे। बच्चों ने पहले दीवार छू ली, गांधी जी तो अभी दौड़ ही रहे थे। बापू की हार और अपनी विजय पर बच्चे फूले न समा रहे थे। बापू की हार पर उन्होंने जोर-जोर से तालियां बजानी शुरु कर दीं। उन्हें चिढ़ाते हुये बोले—'बापू हार गए जी, हम जीत गए। बापू इतने बड़े जी हम इतने छोटे जी – फिर भी बापू हार गये, हम जीत गए।'

बच्चों की बात सुनकर बापू भी जोर-जोर से ताली बजाने लगे और उनके साथ-साथ ना लगे।

करोड़ों कुरते चाहियें

गांधी जी ने सारे देश में खादी का प्रचार किया। एक दिन सवेरे गांधी जी चरखा कात रहे थे। तभी उनके पास एक लड़का आया। वह गांधी जी के सामने बैठ गया। उनके काम को बड़े ध्यान से देखने लगा। उसने देखा कि बापू केवल एक छोटी सी धोती पहने हुये हैं। उसे बड़ा अजीब सा लगा।

उसने पूछ ही लिया—'बापू आप कुरता क्यों नहीं पहनते? आप का शरीर नंगा है। क्या आपके पास इतने भी पैसे नहीं कि एक कुरता अपने लिये बनवा लें?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापू ने प्यार से जवाब दिया—'मैं कुरता नहीं बनवा सकता।'

लड़के ने कहा—'अच्छा, अगर आप के पास नहीं है तो मैं आपके लिये एक कुरता ले आऊंगा।'

बापू बोले—'प्यारे बेटे, एक कुरते से क्या काम चलता है?' लड़के को सुनकर बड़ी हैरानी हुई। कहां तो बापू के पास एक भी नहीं है और कहां अब एक भी थोड़ा लग रहा है।

लड़के ने उत्तर दिया—'अच्छा, दो ले आऊंगा।'

'बच्चे! मेरा एक दो कुरते से काम नहीं चलेगा। मुझे तो करोड़ों कुरते चाहियें। हमारे देश में करोड़ों आदमी ऐसे हैं जो बहुत गरीब हैं। वे अपने पहनने के लिये एक भी कुरता नहीं बनवा सकते। जब तक उन्हें कुरता पहनने को नहीं मिलता, तब तक मैं कैसे पहन सकता हूं।'

बापू चिढ़ गए

साबरमती आश्रम की बात है। बापू घूमने जा रहे थे। बच्चों की टोली भी उनके साथ चल रही थी। रास्ते में बच्चे बापू से तरह-तरह के सवाल करते जाते। बापू उन सवालों का उत्तर देते जाते।

एक बच्चे ने प्रश्न किया—'बापू आप कहा करते हैं न कि अहिंसा का मतलब यही कि दूसरे को मत सताओ?'

बापू बोले—'हां, इसका यही अर्थ है; क्यों क्या बात है?'

बच्चे को शैतानी सूझी और वह हंसते हुये बोला—'आप हंसते-हंसते अक्सर हमारा गाल चूम लेते हैं, वह हिंसा है या अहिंसा।'

उस बालक की सुन कर बापू बड़े हैरान हुये। हंसते हुये उन्होंने फिर उसका गाल चूम लिया। फिर बोले—'तू तो बड़ा शैतान है रे।'

यह देख बच्चे ताली बजा कर हंसने लगे। जोर-जोर से वे कहने लगे—'बापू झेंप मिटा रहे हैं, बापू चिढ़ गये जी।'

गांधी जी भी बच्चों की हंसी में साथ देने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी-छोटी गलतियां बड़ी बन जाती हैं !

बापू ने अपने आश्रम के लड़के-लड़कियों के लिये एक नियम यह भी बना रखा था कि वे आश्रम से बाहर कभी भी कुछ भी खरीद कर न खायें-पीयें।

एक बार आश्रम की एक लड़की ने कहीं कुछ खरीद कर खा लिया। यह बात बापू को मालूम हुई। बापू ने उस लड़की से पूछताछ की। पहले तो वह असत्य बोली, फिर उसने अपनी गलती मान ली। बापू को इस बात का बड़ा अफसोस हुआ और सिर्फ इतनी-सी ही बात पर उन्होंने एक दिवस का उपवास रख लिया। बस, फिर क्या था ! आइन्दा सिर्फ इस लड़की ने ही नहीं, आश्रम के किसी भी दूसरे बच्चे ने आश्रम के नियमों का उल्लंघन न करने की कसम खा ली।

हमारा खेल खत्म हुआ

एक बार बापू और लड़कियों के बीच निम्नलिखित बातचीत हुई थी। ये लड़कियां साबरमती आश्रम में पढ़ने वाली छात्राएं थीं।

गांधी जी ने लड़कियों से सवाल किया—"सच-सच बताओ, तुम में से कोई भूठ बोलती है ?"

"जी हां !" कुछ लड़कियों ने एक साथ कहा—"हम उस समय भूठ बोलती हैं, जब किसी काम को करने से जी चुराना चाहती हैं।"

"समझो ! काम से जी चुराना अच्छी बात नहीं है।" यह नसीहत देने के बाद गांधी जी ने पूछा—"बोलो, कौन तुम में से भूठ बोलने में सबसे आगे है ?"

"जी मैं।" एक लड़की ने जरा धीरे से कहा।

गांधी जी बोले—"मगर भूठ बोलना बुरा है। जानती हो कि नहीं ? तुमको इस बात की कोशिश करनी चाहिये कि भूठ न बोलो।"

लड़की ने कहा—"जी, मैं कोशिश करती हूँ, मगर हमेशा चूक हो जाती है।"

"नहीं, तुम कोशिश नहीं करती।" बापू ने कहा।

"जी, मैं हमेशा पूरी कोशिश करती हूं। मगर लाचारी है। मुंह से भूठ निकल ही जाता है। मैं नहीं जानती कि इससे कैसे बचूँ ?"

"मैं उपाय बताऊं ?" गांधी जी ने उस लड़की के कन्धे पर अपना हाथ रख कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा—"सुनो, हर रोज सवेरे तुम सोकर उठो त राम का नाम लो और कहो— 'हे भगवान, आप मेरी मदद कीजिये कि मैं कभी झूठ न बोलूं। फिर जब रात को सोने जाओ, तब भी कहो—'हे भगवान ! मैं आज दिन भर में सत्य बोलने में इतनी बार चूकी। कृपा करके आप मेरी मदद कीजिये कि मैं सदा सत्य बोलूं। अब बताओ, तुम रोजाना ऐसा ही करोगी न ?"

"जी हां !" लड़की ने कहा—"मैं वादा करती हूँ।"

"बहुत अच्छा ! तुम अपनी प्रतिज्ञा याद रखना। रखोगी न ?" गांधी जी ने कहा—अच्छा, लड़कियो ! अब हमारा खेल खत्म हो गया। नमस्कार !"

एक बार आश्रम की एक लड़की को कहीं पड़ा हुआ एक रुपये का नोट मिल गया। वह झटपट भागी-भागी बापू के पास पहुँची। उस समय बापू आराम कर रहे थे। इससे उस छोटी लड़की को बाहर ही रोक दिया गया।

बच्चों के लिये बापू के मन में अपार प्यार और करुणा थी। बापू उस समय लेटे-लेटे एक पुस्तक पढ़ रहे थे। बापू ने सारी बात सुन ली। और उस लड़की को भीतर बुलाते हुए कहा—"उसे आने दो। और हां, छोटी लड़कियों को आने से कभी भी मत रोका करो। इससे उनका दिल दुखता है।"

और फिर सारी बात जानने के बाद बापू ने उस बालिका को खूब शाबाशी दी और रुपया हरिजन कोष में जमा करा दिया।

तुम अकेली ही जाओ

मनु गांधी रिश्ते में बापू की पोती लगती है। मनु को बापू बेहद चाहते थे। वह अपने को 'मनु की मां' कहा करते थे। सचमुच बापू ने मनु को एक आदर्श मां की भांति शिक्षा दी थी।

बापू स्नान के समय साबुन का कतई इस्तेमाल नहीं करते थे। स्नान के समय वह एक खुरदरे पत्थर से सारे बदन को रगड़ लिया करते थे। नोआखली में जब बापू पद-यात्रा कर रहे थे, उस समय भी यह खुरदरा पत्थर साथ में था।

एक बार ऐसा हुआ कि एक गांव से दूसरे गाँव बापू आये, तब मनु पत्थर पिछले गांव में ही भूल आई। बापू को जब यह बात पता चली, तब बड़े नाखुश हुये। बापू ने कहा—"मनु, फौरन अकेले जाओ और पत्थर को लेकर आओ।" कई स्वयंसेवकों ने मनु के साथ जाने का आग्रह किया, परन्तु गांधी जी ने मना कर दिया।

मनु अकेले जाने से पहले तो भयभीत हुई, पर फिर खोया हुआ साहस बटोरा और आदेशानुसार उस पत्थर को लेकर आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब बापू ने मनु को समझाया—"बेटी, कभी भी कोई वस्तु छोटी नहीं समझनी चाहिये। हर वस्तु बेहद सम्भाल कर रखनी चाहिये। और हां, लड़कियों को कहीं अकेले जाने में डरने की क्या बात ?"

होशियार हो जाएगी तब रामायण दूंगा

आश्रम की एक छोटी बालिका को बापू की एक छोटी सी लालटेन और रामायण बहुत अच्छी लगी। बापू से उसने अपनी इच्छा जाहिर की। बापू ने कहा—"बोल, तू दोहा पढ़कर सुनायेगी ?" लड़की ने सिर हिला दिया—"हां !" और बापू ने लड़की को लालटेन और रामायण खुशी-खुशी प्रदान कर दी।

वह लड़की बड़ी चतुर थी। उसको पढ़ना लिखना नहीं आता था, पर उसने कुछ दोहे और चौपाई सुन-सुन कर रट लिये थे और रामायण में उनकी जगह के बारे में पता लगा लिया था।

एक दिन बापू ने उस लड़की का इम्तहान लिया। लड़की ने बड़ी चालाकी के साथ सधी-बंधी जगह से पृष्ठ खोल कर दोहे-चौपाई सुना दिये।

बापू ने फौरन उसकी चालाकी ताड़ ली और वह हंसते हुये बोले—"जब तक तूने दोहे और चौपाई याद किए रामायण और लालटेन तेरे पास थे। अब मुझे लौटा दे। जब तू पढ़ लिखकर होशियार हो जायेगी, तब तुझे एक रामायण जरूर दूंगा।

यहूदी लड़की की भूल

एक बार एक जर्मन यहूदी लड़की गांधी के आश्रम में आई। उसके साथ में झबरे-झबरे बालों वाली एक कुतिया भी थी। कुतिया देखने में बहुत प्यारी लगती थी।

बापू ने जर्मन यहूदी लड़की से पूछा—"इसे क्यों लाई हो ? और लाई कैसे ?"

जर्मन यहूदी लड़की ने सच-सच बता दिया—"जी, मुझे यह कुतिया बड़ी प्यारी लगती है। इसी से मैं इसको चुपके से एक टोकरी में बन्द कर लाई हूं। रेल वालों को इस का जरा भी पता नहीं चला।"

जर्मन यहूदी लड़की की बात सुनकर बापू ने अफसोस भरे लहजे में कहा—"यह तो चोरी हुई। वैसे भी तुम्हें प्यार-दुलार करने की कोई चीज चाहिये, तो किसी पशु के बजाय किसी गरीब बच्चे की परवरिश करो।"

जर्मन यहूदी लड़की का सिर लज्जा से झुक गया। वह आंखों में आंसू भर कर बोली—"बापू, मुझ से भूल हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोपनिषद् स्वाध्याय

(कठोपनिषद्)

—आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

★

वागश्रवा नाम के मुनि को इच्छा हुई कि वह घर बार छोड़ कर प्रभु को प्राप्त करे। उसने अपना धन धान्य गरीबों को बांटा।

उसका नचिकेता नामक एक पुत्र था जो स्वभाव से बड़ा बुद्धिमान तथा धर्मात्मा था। वह पिता के द्वारा दिए जा रहे दान को देख रहा था। उस दान में उसके पिता ने प्रायः बूढी गायों का ही दान किया और अच्छी २ नचिकेता के लिए रख ली। ऐसे समय उसके धार्मिक मन में एक उधेड़बुन प्रारम्भ हो गई।

उसने अपने पिता जी से कहा कि हे पितः! आप बूढ़ी गायों को दान में न दें। इनको यहीं रहने दें। जब आप कल्याण की भावना से दान पुण्य कर रहे हैं तब इन बूढ़ी गायों का दान देना आपके लिए उपयुक्त नहीं है।

यह बात उसने बार २ कही। इस पर पिता जी कुछ न बोले। अपने पिता की इस वृत्ति को उस ने दूर करना चाहा परन्तु जब पिता जो ने कुछ भी उत्तर न दिया तो ब्रह्मचारी नचिकेता कहने लगे तो आप बतलाइए मुझे किसे दोगे।

पिता जी नचिकेता के बार २ कहने पर क्रुद्ध हुए तथा एकदम आवेश में आके बोले तुझे मैं मौत के लिए अर्पण करूंगा।

पिताजी इतना कहके कुछ न बोले परन्तु नचिकेता ने सोचा कि मेरे पिता जी सर्वस्व का त्याग कर वन को गमन कर रहे हैं। मैं उन का सर्वथा योग्य पुत्र हूं। उन्होंने मुझे इस प्रकार क्यों कहा। यदि मैं पिता जी की आज्ञा तथा इच्छा का पालन न करूंगा तो आयोग्य पुत्र माना जाऊंगा। अतः मुझे मृत्यु के लिए अर्पण होना चाहिए।

ऐसा सोच उसने अपने ये विचार समझदार व्यक्तियों के सम्मुख उपस्थित किये। विद्वानों ने उसे बतलाया कि इस काल में ब्रह्मवेत्ता मृत्यु या यम नाम का आचार्य है। उस के पास आपको जाना चाहिए। इस से आपकी इच्छा भी पूर्ण होगी तथा आप अपने पिता जी को आज्ञा का भी भली प्रकार पालन कर सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी बातों को स्वीकार कर बालक ब्रह्मचारी नचिकेता यमाचार्य के आश्रम में गये। यमाचार्य प्रचारार्थ कहीं बाहर गए हुए थे। यमाचार्य के परिवार उनकी धर्म पत्नी आदि ने बार २ कहा कि हे पुत्र! भोजन करो परन्तु ब्रह्मचारी नचिकेत्ता बोले जब तक गुरु के दर्शन न होंगे तब तक मैं भोजन नहीं करूंगा। ऐसा कह यमाचार्य के आश्रम के सम्मुख तीन दिन वह चुपचाप भूखा बैठा रहा। तीन दिन के उपरान्त यमाचार्य आश्रम में आए। आश्रम वासियों ने नचिकेता की सारी घटना यमाचार्य के सम्मुख उपस्थित की।

यमाचार्य तुरन्त ब्रह्मचारी के समीप पहुँचकर बोले कि हे ब्रह्मचारिन्! आपने मेरे आश्रम में रहके तीन दिन तक भोजन नहीं किया है। इससे मैं पाप का भागी बना हूं। मैं अपने पाप को दूर करने के लिए तथा तुम्हें प्रसन्न करने के लिए एक एक दिन के उपवास के बदले तीन वर देता हूँ। वे मुझ से तुम मांगो।

आचार्य के इस प्रकार कथन करने पर नचिकेता ने कहा—हे आचार्य! मैं अपने पिता जी से बिना आज्ञा लिये चुपचाप यहां आ गया हूं। हो सकता है इस से मेरे पिता जी मेरे विषय में चिन्ता करते होंगे कि न मालूम उनका पुत्र कहां चला गया है। इस से उन को चिन्ता होगी। अतः आप से मेरी यही प्रार्थना है तथा मैं आप से यही वर मांगता हूँ मेरे पिता जी मुझे सर्वथा संकट मुक्त मान मेरे विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता न करें।

यमाचार्य ने कहा कि हे पुत्र! अपने पिता के लिए तुम्हारी महान् भक्ति मैं देखता हूँ। मैं तुम को यह वर देता हूँ कि तुम्हारे पिता तुम्हारे विषय में कोई चिन्ता नहीं करेंगे। अब तू मुझ से दूसरा वर मांग।

यमाचार्य से दूसरा वर मांगते हुए नचिकेता ने कहा—मैंने सुना है स्वर्गलोक में किसी तरह का डर नहीं है। वहां पर मृत्यु नहीं होती। वहां रहने वाले व्यक्ति वृद्धावस्था को नहीं प्राप्त करते। भूख प्यास की घबराहट भी वहां नहीं है। वहां कोई दुःख नहीं। वहां तो आनन्द ही आनन्द है।

मुझे बतलाया गया है उस स्वर्ग को प्राप्त कराने वाली अग्नि का ज्ञान आपको है। मैं उस स्वर्ग प्रापक अग्नि का ज्ञान आप से प्राप्त करना चाहता हूँ।

नचिकेता की यह बात सुनकर यमाचार्य ने कहा कि हे ब्रह्मचारिन्! मैं उस अग्नि को जानता हूं। उस से अनन्त प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। वह अग्नि, गुहा में विद्यमान है। उनका जानना एक रहस्य को समझना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमाचार्य ने स्वर्गलोक की साधक उस अग्नि का उपदेश नचिकेता को दिया। आचार्य से सब उपदेश का श्रवण कर नचिकेता ने भी अपने आचार्य के सामने उस सुने हुए उपदेश को वैसा का वैसा ही सुना दिया। यमाचार्य ब्रह्मचारी नचिकेता की कुशाग्रबुद्धि से बहुत प्रभावित हुए।

यमाचार्य ने कहा कि मैं तुझे एक और वर देता हूं। यह अग्नि जो स्वर्ग साधक अग्नि है जिसका मैंने तुझे उपदेश दिया है यह तेरे नाम से ही अर्थात् आज से इस स्वर्गाग्नि को नाचिकेताग्नि कहा जावेगा। ऐसा कह आचार्य ने अपने वरद हाथों से उसे एक माला दी।

ऐसा कर यमाचार्य बोले—हे नचिकेता ! जो इस नाचिकेत अग्नि की ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वनस्थाश्रम में उपासना करेगा, वह तीनों सन्धियों में से गुजर कर, तीनों कर्मों को पूर्ण करके जन्म तथा मृत्यु से पार हो जावेगा।

स्वर्गीय अग्नि तीन प्रकार की है। यज्ञवेदी की सुन्दर ईंटों से चयन किया जावे। उसमें प्रतिदिन आहुति अर्पण मन्त्रों समेत हो। यह यज्ञ क्रिया या यह यज्ञाग्नि ब्रह्मचारी, गृहस्थी वानप्रस्थी, का जीवनाङ्ग हो। प्रत्येक ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, प्रतिदिन यज्ञ करे। उसमें सारा सारा परिवार सम्मिलित हो। उस अवसर पर प्रतिदिन उपदेश हों जिसमें ब्रह्म प्राप्ति का उपदेश हो। महान् बनने के साधनों का कथन हो। इस से तीनों आश्रम वासियों का विस्तार होता है। वास्तविक शिक्षा प्राप्त होने पर जन्म मृत्यु का कोई सुख दुःख नहीं होता है। उत्तम उपदेशों से जीवन के वास्तविक उद्देश्यों का ज्ञान होता है। जब यह पता लग जाता है कि शरीर नाशवान् है आत्मा तो अमर है तब जन्म, मृत्यु, वार्धक्य की ओर ध्यान जाता ही नहीं है। उसके सामने तो शुभ कर्म करना ही लक्ष्य रह जाता है।

दो वस्तुओं के परस्पर मिलने से अग्नि या गर्मी का उदय होता है वैसे ब्रह्मचर्य काल, गृहस्थ काल, वनस्थकाल ये अग्नि के रूप हैं। ब्रह्मचर्य काल में कामाग्नि का प्रशमन कर संयमाग्नि को प्रदीप्त किया जाता है। गृहस्थ काल में अपना भी पालन पोषण करना होता है। उसके साथ अपने परिवार तथा अन्य गन्यमान्य अतिथियों का भी भरण पोषण होता है। उत्तरदायित्व की अग्नि का इस आश्रम में उदय होता है। वानप्रस्थाश्रम में आत्माग्नि को प्रदीप्त किया जाता है।

यदि इन तीनों आश्रमों की अग्नि को यथावत् प्रदीप्त कर लिया जावे और इन आश्रमों की दैनिकचर्या का यथावत् पालन हो तो उससे स्वर्ग की विशेष सुख की प्राप्ति होती है। चिन्ता नहीं रहती है। चिन्ता ही बुढ़ापा है, चिन्ता ही मृत्यु है, चिन्ता ही रोग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थकाल के मेल के समय को एक सन्धि, इसी प्रकार गृहस्थ तथा वनस्थाश्रम के मेल के समय को दूसरी सन्धि, वनस्थ तथा संन्यास के मेल को तीसरी सन्धि कहते हैं। सन्धि के समय रगड़ होती है। रगड़ से अग्नि का उदय होता है। इन आश्रमों में भिन्न भिन्न प्रकार के कर्म अर्थात् तीन प्रकार के कर्म किये जाते हैं।

जो मानव तीन अग्नियों को प्रदीप्त कर, तीनों सन्धियों से गुजर कर तीनों प्रकार के कर्म करता है वह स्वर्ग को प्राप्त करता है अर्थात् विशेष सुख को प्राप्त करता है।

जब तक मानव तीनों आश्रमों को नियमपूर्वक पालन नहीं करता तब तक वह महान् नहीं बनता है। अकेला ब्रह्मचर्याश्रम भी अधूरा है, इसी प्रकार गृहस्थाश्रम तथा वनस्थाश्रम के विषय में भी समझिए। जब मनुष्य तीनों आश्रमों को नियमानुसार पार कर लेता है तब मानो उसने यज्ञ पूर्ण कर लिया है। वह महान् बन जाता है। तीनों आश्रमों में रहने से उसकी अनुभूतियां महान् हो जाती हैं। वह प्रत्येक आश्रम में कैसी कैसी कठिनतायें आती हैं, उन्हें कैसे किस युक्ति से पार किया जाता है, उसे इसका यथावत् ज्ञान हो जाता है।

इस प्रकार वह व्यक्ति चतुर्थाश्रम में सरलता से पहुँच जाता है। वह फिर भटकता नहीं है। जिसने इन आश्रमों को एक के बाद एक को पार नहीं किया वह मार्ग में भटक सकता है। वह पूर्णतया संसार के मार्ग से परिचित नहीं होता, अतः वह सांसारिक प्राणियों के लिए तथा अपने लिए भी बहुत लाभकारी सिद्ध नहीं हो सकता है। इस आश्रम व्यवस्था से ही वह परिवार की दृष्टि से, समाज की दृष्टि से महान् बन जाता है। इसी मार्ग से वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है। उन पर चढ़ने के लिए क्रमशः पैड़ियों का ही आश्रय लेना चाहिये। एकदम एक पैड़ी को छोड़कर अगली पैड़ी पर चढ़ने में प्रति समय खतरा बना रहता। इस मार्ग का सहारा पकड़ के ही महान् बनता है। समाजसेवक बनता है, प्रभु भक्त बनता है। यही महान् यज्ञ है। इसी से सुख तथा शान्ति मिलती है इसो से शोक, दुख, वार्धक्य आदि से निवृत्ति होती है।

इतना कहके यमाचार्य अपने प्रिय शिष्य नचिकेता को फिर बोले कि हे पुत्र! तू मुझ से तीसरा वर भी मांग ले जिस से मैं अपने वचन को पूरा कर सकूँ।

यमाचार्य के कथन को सुनकर ब्रह्मचारी नचिकेता प्रणत होके आचार्य से इस प्रकार कहने लगे—

हे गुरो! आप मुझे बतलाइये कि मृत्यु के अनन्तर इस मनुष्य की कोई सत्ता रहती है या नहीं। यह क्या खेल है। कृपा कर मेरी इस गुत्थी को भी आप ही सुलझावें।

आचार्य यम अपने शिष्य की परीक्षा करना चाहते हैं तथा जानना चाहते हैं कि यह सच्चा जिज्ञासु है या वैसे ही मुझ से बातें पूछने चला आया है। अतः वे उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कहते हैं– हे नचिकेता ! मुझ से तू यह मत पूछ कि मृत्यु के अनन्तर मनुष्य की सत्ता रहती है या नहीं। यह प्रश्न बड़ा जटिल है, कठिन है। मुझ से तू इसके स्थान पर और ही प्रश्न पूछ ले। मेरा तुझ से यह निवेदन है।

इस पर जिज्ञासु नचिकेता कहता है कि हे गुरो ! इस प्रश्न को औरों की तरह आपने भी जटिल कहा है, परन्तु मुझे तो आप जैसा सुलझा हुआ गुरु और नहीं दिखलाई देता, मैं भी आप के सामने पूर्ण रूपेण जिज्ञासु बन के उपस्थित हुआ हूँ अतः आप मेरी आत्म विषयक सन्देह निवृत्ति अवश्य करें।

यमाचार्य परखे हुए शिष्य की अधिक परख करने के लिये कहते हैं कि हे पुत्र ! सौ सौ वर्ष तक जीवित रहने वाले पुत्र तथा पौत्रों की मुझ से मांग करले। सुन्दर पशु, हाथी, घोड़े, अनन्त धन, विशाल पृथ्वी तथा राज्य भी मांगले पर इस प्रश्न को मुझ से मत पूछ। आगे आचार्य नचिकेता को और लोभ में डालकर उसकी परीक्षा करते हुए इस प्रकार बोले–दीर्घ जीवन मांग ले, मन की कामना को पूर्ण करने वाला वर मांग ले। मर्त्य लोक में जो वस्तुयें औरों के लिए अलभ्य हैं उनकी मांग कर लो। सुन्दर स्त्रियाँ भी मैं तुझे प्रदान कर सकता हूँ जिन से सांसारिक सुख का भोग कर सकेगा परन्तु मृत्यु के अनन्त के विषय में मुझ से प्रश्न न कर।

आचार्य के लुभावने विचारों को सुनकर भी अत्यन्त जिज्ञासु बन कर नचिकेता उनसे कहने लगा –

हे आचार्य ! जो सुख, समृद्धि आप ने मुझे प्रदान करने के लिए कही हैं वे सब अस्थिर हैं। वे आज हैं कल नहीं रहेंगी। इन से इन्द्रियां निस्तेज हो जाती हैं। यह जीवन है ही कितना। ये हाथी, घोड़े, धन, आदि जो आपने मुझे देने के लिए कहे आप इन्हें अपने पास ही रखें, मुझे इनकी बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त मनुष्य की धन से तृप्ति नहीं होती, जिस के पास हजार हैं वह लाख चाहता है, लाख वाला करोड़ की इच्छा करता है। इस प्रकार धनभिलाषा की कभी निवृति नहीं होती है। इस मरणधर्मा सामग्री से कभी भी अमृत अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। जिस की प्राप्ति के लिए यम नियम आदि योग के अङ्गों का पालन किया जाता है। उस अमृत वस्तु की प्राप्ति के लिये ही मैं आपकी शरण में आया हूँ।

आचार्य नचिकेता की जिज्ञासा को प्रबल समझ बहुत प्रसन्न हुए तथा उसके लिए अब उन्होंने वास्तविक उपदेश देना प्रारम्भ किया –

हे पुत्र ! तू श्रद्धान्वित होकर मुझ से जटिल प्रश्न को पूछने आया है। तू सांसारिक पदार्थों में नहीं फंसा है। तुझे इनकी वास्तविकता का ज्ञान हो गया है। फिर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तुझे वह बातें बतलाऊंगा जिस से तुझे लाभ होगा। तू उन बातों को ध्यान से सुन। जिनको सुनकर तुझे आनन्द की प्राप्ति होगी।

इस संसार में दो प्रकार के मार्ग हैं। एक श्रेय दूसरा प्रेय। इन दोनों से ही सारा संसार बन्धा हुआ है। इन दोनों मार्गों में जो श्रेय के मार्ग का वरण करता है उस का कल्याण होता हैं तथा जो प्रेय के मार्ग का वरण करता है वह इस संसार में फंस जाता है तथा यहां ही भटकता रहता है। साधारण बुद्धि के लोगों को कुशल मंगल तथा सुख चैन के लिए प्रेय मार्ग अच्छा लगता है। वे केवल शारीरिक सुख को ही सर्वोपरि मान कर इसके जाल में फंस जाते हैं। फिर उस से निकलना चाहने पर भी उस से निकल नहीं पाते हैं। तू इन कामनाओं के जाल में नहीं फंसा है जिन कामनाओं में यह सारा संसार फंस जाता है। विद्या तथा अविद्या इन दोनों के भिन्न भिन्न मार्ग हैं। श्रेय मार्ग विद्या का मार्ग है तथा प्रेय मार्ग अविद्या का है। संसार के भोगों में पड़े पुरुष अपने को धीर तथा पण्डित मानते हैं। जिस प्रकार अन्धे के पीछे अन्धा चलकर भटकता है इसी प्रकार संसार के भोगों में फंसकर भटक रहे हैं। जिस की बुद्धि का पूर्ण विकास नहीं हुआ वही विषय भोगों को आराध्य तथा सेवनीय मानता है।

यह आत्म ज्ञान बहुतों को सुनने को भी नहीं मिलता। बहुत से लोग इसे सुन कर भी इसकी गम्भीरता को समझ नहीं पाते। कोई विरला गुरु ही इस गुत्थी को सुलझा सकता है और विरला शिष्य ही इसे समझ सकता है।

उस आत्मा का परिणाम अणु है, सूक्ष्म है। वह परमात्मा सूक्ष्म अणु से भी सूक्ष्म है। वह अतर्क्य है। जो ज्ञान मैं तुझे दे रहा हूँ यह तर्क का विषय नहीं है। इस ब्रह्म ज्ञान को कोई योगी गुरु ही करा सकता है। तेरे जैसे सच्चे जिज्ञासु को ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

मैं यह निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि धन सम्पति अनित्य है, अध्रुव है। अध्रुव वस्तु से ध्रुव (ब्रह्म) की प्राप्ति नहीं हो सकती। मैंने तीनों नाचिकेताग्नियों का भली प्रकार सेवन किया है। मैं नियमपूर्वक ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनस्थ आश्रम को पार कर चुका हूं। अतः इसकी वास्तविकता मैंने प्राप्त करली है। चारों आश्रमों में रहके अनुभवाग्नि की प्राप्ति से ही इस की प्राप्ति होती है।

तूने लौकिक प्रशंसा की परवाह नहीं की है। तू लौकिक जय-जयकारों से प्रभावित होने वाला नहीं है। सांसारिक प्रतिष्ठा को तूने धीरता से त्याग दिया है। अतः तू ब्रह्म की शिक्षा का अधिकारी है। उसे मेरे मुख से सुन।

उस प्रभु के अलौकिक दर्शन कठिनता से होते हैं। वह गूढ से भी गूढ है। वह हृदय रूपी दुर्गम गुफा में छिपा बैठा है। वह सब से पुरातन है। उसे अध्यात्म योग से प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाता है। इन्द्रियों को विषय भोग से हटाके उनका आत्मा की ओर गमन ही आध्यातिम योग है। जब उस ब्रह्म को साक्षात्कार दर्शन हो जाते हैं तब मानव के हर्ष, शोक आदि सब विकार दूर हो जाते हैं। वह किसी प्रकार के भी द्वन्द्वों से ग्रस्त नहीं रहता। जिज्ञासु जन ब्रह्म के विषय में सुन कर मनन करे तदनन्तर निदिध्यासन के द्वारा उस ब्रह्म को साक्षात्कार प्राप्त करें। जब उस ब्रह्म की साक्षात्कार प्राप्ति हो जाती है तब सर्वत्र आनन्द ही आनन्द मिलता है। तेरा वह आनन्द का द्वार खुल गया है अतः तू बहुत भाग्यशाली है।

नचिकेता ने यमाचार्य से पुनः प्रश्न किया कि हे गुरो! जो ब्रह्म धर्माधर्म से कृताकृत से, भूत भविष्यत् से भिन्न है उस प्रभु का मुझे फिर उपदेश दीजिए।

यमाचार्य ने कहा—जिस शब्द का वेद मुहुर्मुहुः वर्णन करते हैं। जिसकी प्राप्ति के लिए कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का सेवन किया जाता है, वह ओ३म् है। ओ३म् इसको जानकर, हृदयंगम करने से ब्रह्म की मोक्ष की प्राप्ति होती है। ओ३म् के द्वारा ही ब्रह्म लोक की प्राप्ति होती है। इस प्रकार यमाचार्य ओ३म् अर्थात् ब्रह्म का वर्णन करके अपने जीव-आत्मा का वर्णन करते हैं। उन लोगों का उत्तर भी देते हैं जो यह कहते हैं कि शरीर सत्ता की समाप्ति पर कुछ भी शेष नहीं रहता। ऐसे जनों के ज्ञाननेत्र खोलते हुए यमाचार्य आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं—

वह आत्मा अमर है। उसे कोई मार नहीं सकता है। ब्रह्म ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। आत्मा सूक्ष्म है। पर आत्मा सूक्ष्म अणु से भी सूक्ष्म है। सूक्ष्म में स्थूल नहीं रह सकता है। परन्तु स्थूल में सूक्ष्म रह सकता है। वह परमात्मा आकाश की तरह सर्वत्र व्याप्त है। इतना होने पर भी महान् से भी महान् है। वह मानव की हृदय रूपी गुफा में वास करता है। उने दुनिया के गोरख धन्धे में फंसा व्यक्ति कभी नहीं देख पाता है। निष्काम भावना से कर्म करने वाला व्यक्ति ही उस प्रभु के दर्शन करता है। शोक मोह से दूर व्यक्ति ही उस प्रभु के दर्शन कर सकता है।

वह एक स्थान पर रहता हुआ भी सर्वत्र विद्यमान है। वह दूर से दूर पहुंचा हुआ है। यहां पर ब्रह्म तथा आत्मा का वर्णन है। ब्रह्म का शरीर ब्रह्माण्ड तथा आत्मा का रहने का स्थान शरीर है।

शरीरधारियों में आत्मा निवास करता है। ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा निवास करता है। जब आत्म दर्शन तथा प्रभु दर्शन हो जाता है तब सब प्रकार से शोक मोह तथा दुःख दूर हो जाते हैं।

आत्म ज्ञान या ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति बड़े बड़े भाषणों से नहीं होती। ये दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर्क वितर्क से प्राप्त नहीं होते। अधिक पढ़ने से भी इनकी प्राप्ति नहीं होती। जो प्रभु को या आत्मा को अर्पण हो जाता है उसे ही इन की प्राप्ति होती है अन्य को नहीं।

जो दुराचारी है, तर्क वितर्क में उलझा हुआ है, जिसका चित्त चंचल है उसे प्रभु के वा आत्मा के दर्शन नहीं होते। प्रभु के दर्शन तो प्रज्ञान द्वारा प्राप्त होते हैं।

प्रभु कहाँ है इस का वर्णन करते हुए यमाचार्य कहने लगे—हे पुत्र! सुन। संसार दो शक्तियों का परिणाम है। विधायक (बनाने वाली) तथा विनाशक (नष्ट करने वाली)। विधायक शक्ति के भी दो रूप हैं आध्यात्मिक तथा भौतिक। आध्यात्मिक विधायक शक्ति का नाम ब्रह्म है। भौतिक विधायक शक्ति का नाम क्षम है। जिस आत्मा के सामने संसार की दोनों प्रकार की विधायक शक्तियां ब्रह्म तथा क्षम ओदन (पके हुए चावल) की तरह है, जो इनको एक ग्रास में निगल सकता है, उसके विषय में जानकारी करना बड़ा कठिन है। एक विनाशक शक्ति है जिसका नाम मृत्यु है। जिस प्रकार ओदन में घृत पड़ने से उसे लोग बड़ी सरलता से खा जाते हैं, इस प्रकार जो मृत्यु को भी बड़े स्वाद से खा जाता है, उसके विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करना बड़ा कठिन है।

ब्रह्म विद्या को जानने वाले कहते हैं—पांच यज्ञों को करने वाले कर्म-काण्डियों और तीन नचिकेता अग्नियों का सेवन करने वाले ज्ञान काण्डियों में छाया तथा धूप जैसा सम्बन्ध है। कर्मकाण्डी छाया के समान तथा ज्ञानकाण्डी धूप के समान हैं। जो केवल बाहरी यज्ञों में लगा रहता है वह मानो छाया से चिपटा रहता है वह छाया धूप के कारण ही बनी हुई है। उसके हटते ही छाया भी हट जाती है। भिनाचिकेत अग्नियों का सेवन वस्तुत आतप या प्रकाश का सेवन है। कर्मकाण्डी तथा ज्ञानकाण्डी अपने अपने विचार से सत्य के अन्वेषण में संलग्न हैं। दोनों जिस जिस वस्तु को सत्य समझे हुए हैं, उसी के अन्वेषण में लगे हुए हैं। दोनों ही अत्युत्तम गुफा में प्रविष्ट हुआ अपने को मानते हैं परन्तु कर्मकाण्डियों और ज्ञानकाण्डियों में भेद छाया तथा आतप जैसा है।

जो लोग कर्मकाण्ड में लग कर ही ब्रह्म की तलाश करते हैं वे वास्तविक मार्ग पर नहीं हैं। वास्तविक मार्ग तो नाचिकेत अग्नि (ज्ञानकाण्ड) ही है। आत्मा रथ का स्वामी है, शरीर रथ है, बुद्धि सारथी है तथा मन लगाम है तू ऐसा जान। इन्द्रियां घोड़े हैं। जब आत्मा, इद्रियां, मन संयुक्त होकर कोई काम करते हैं तब उसे भोक्ता कहते हैं। विज्ञानी के बस में ही इन्द्रियां रहती हैं। जो विज्ञान रहित है उसका मन तथा बुद्धि अपवित्र विचारों से ग्रस्त रहते हैं। उसकी मालिक इन्द्रियां हो जाती हैं आत्मा नहीं। जिस का विज्ञान सारथी है, जो मन रूपी लगाम को अपने हाथ में रखता है, वह संसार रूपी मार्ग को पार कर जाता है। उसे प्रभु की प्राप्ति भी होती है। पिण्ड (शरीर) में इन्द्रियों की अपेक्षा उनके विषय रूप, रस, गन्ध, स्पर्श शब्द ये दूर हैं। इन्द्रियों का दर्शन तो हम उन नेत्रों से कर लेते हैं परन्तु इनके विषयों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन नहीं होता है। इन्द्रियां स्थूल हैं परन्तु इन के विषय सूक्ष्म हैं। विषयों की अपेक्षा मन सूक्ष्म है बुद्धि की अपेक्षा आत्मा परे है या श्रेष्ठ है। बाह्य जगत् के दो रूप हैं एक दीखने वाला जिसे व्यक्त कहते हैं या विकृत कहते हैं। दूसरा अदृश्य है जिसे अव्यक्त या प्रकृति कहते हैं। व्यक्त बाह्य जगत् की अपेक्षा अव्यक्त (प्रकृति) परे है और अव्यक्त (प्रकृति) की अपेक्षा परमात्मा और भी परे है। पुरुष से परे, श्रेष्ठ वस्तु कुछ भी नहीं है। जो संसार की सब से अन्तिम सीमा है। परमात्मा अन्तर्जगत तथा बाह्य जगत् में छिपा हुआ है वह सामने प्रकट नहीं होता है। तत्त्वदर्शी जन सूक्ष्म बुद्धि से उस परम प्रभु के दर्शन करते हैं। यहां पर यह सिद्ध हुआ इन्द्रियों के पीछे आत्मा छिपा हुआ है तथा प्रकृति के पीछे परमात्मा छिपा हुआ है उसका अन्वेषण करना चाहिए।

ज्ञानी पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह वाणी आदि इन्द्रियों तथा मन को एकाग्र करे। उन सबको ज्ञानात्मा के साथ जोड़े। ज्ञानात्मा को महानात्मा के साथ जोड़े। महानात्मा को शान्तात्मा के साथ जोड़े। अज्ञान को दूर कर इन्द्रिय तथा मन को ज्ञान के साथ संयुक्त करे। अज्ञान तथा अविद्या एक ही वस्तु है। प्रेम मार्ग भी उसको कहते हैं। ज्ञान तथा विद्या एक ही वस्तु हैं इसे श्रेय मार्ग भी कहते हैं। उन्नति के मार्ग पर चलने के लिए आवश्यक है ज्ञान के साथ आत्मा का सम्बन्ध करे। अतः सिद्ध हुआ प्रथम ज्ञानात्मा बने, तदनन्तर महानात्मा बने और इसके पश्चात् ही शान्तात्मा बनता है। आत्मा के विकास के ये मार्ग हैं।

जो शान्तात्मा होना चाहता है वह वरदान प्राप्त महात्माओं की शरण में जावे। उनसे ब्रह्म विद्या को ग्रहण करे। इस मार्ग को पार करना तेज किये हुये छुरे की तरह है। अर्थात् बड़ा कठिन है। संसार के लुभावने दृश्य मानव को चकाचौंध कर देते हैं। वह उनकी चमक में मार्ग भ्रष्ट हो जाता है।

वह ब्रह्म शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, जन्म, नाश आदि से रहित है। वह नित्य है, अनादि है, अनन्त है, महान् है, सबसे परे है, निश्चल है, एक रस है। जब मनुष्य उस प्रभु के इस रूप को जान लेता है तब जन्म मरण के चक्र से छूट जाता है।

परमात्मा ने इन्द्रियों को बहिर्मुखी बनाया है अतः मनुष्य बाहर की ओर ही देखता है। अन्दर आत्मा की ओर नहीं देखता है। अमृत की इच्छा रखने वाला कोई धीर पुरुष ही विषयों से इन्द्रियों को हटा कर अन्दर मुड़ कर आत्मा की ओर देखता है।

कामनाओं के वशीभूत हुये साधारण बुद्धि वाले मनुष्य विषयों की प्राप्ति के लिए मारे-मारे फिरते हैं परन्तु उनको वे प्राप्त नहीं होतीं। इसके विपरीत उनके चारों ओर मृत्यु का जाल फैल जाता है। धीर पुरुष अमृत की इच्छा करते हैं वे अस्थिर वस्तुओं से स्थिर (ब्रह्म) की याचना नहीं करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श, मैथुन इनकी स्वतन्त्र कोई सत्ता नहीं है। यदि प्रभु अपनी शक्ति इन से खींचले तो इनका तो ज्ञान भी नहीं हो सकता है।

जिस प्रकार सोने के बाद, जागने के बाद अपने को समझता है कि मैं वही आत्मा हूं, इन दोनों छोरों को जैसे मनुष्य देखता है, इसी से आत्मा की महत्ता प्रकट होती है। जो आत्मा की महत्ता को जान लेता है वह कभी भी शोक सागर में निमग्न नहीं होता है।

यह जीवात्मा मधु को चखता है। मिठास को ही पसन्द करता है। परन्तु विषयों की मिठास के पीछे कटुता है। ब्रह्म की मिठास अति मधुर है, मधुरतम है। जीवात्मा इसको जब यह निकट से जान लेता है तब इस अवस्था में वह भूत भविष्यत् का स्वामी हो जाता है। इससे उसे आत्म ग्लानि नहीं होती। वह जान लेता है कि वास्तविक शक्ति आत्मा की है।

इस प्रकार आत्मा का वर्णन करके फिर परमात्मा का वर्णन किया जाता है। संसार की रचना तप से हुई। प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में तप की आवश्यकता होती है। सरलता से कोई भी कार्य नहीं होता है। क्रिया के उग्ररूप का नाम ही तप है। सृष्टि की रचना भी क्रिया से ही हुई है। तीव्र क्रिया का नाम तप है। ब्रह्म तप से भी पूर्व था। क्योंकि उसी ने तो क्रिया अर्थात् तप किया। तप के बाद सृष्टि बनी। पहले वायवीय अवस्था थी। तदनन्तर आग्नेय अवस्था आयी। इन दोनों अवस्थाओं में जीवन तत्त्व नहीं है। तदनन्तर जलीय अवस्था आई, उस में जीवन तत्त्व रह सकता था। तप से जड़ जगत् अर्थात् वायवीय और आग्नेय जगत् का विकास हुआ। विकास होते-होते चेतन जगत् के उत्पन्न होने का समय आया। वह ब्रह्म उस जड़ जगत् तथा चेतन जगत् से भी पूर्व था। वह ब्रह्म पञ्चभूतों के साथ गुफा में घुसा बैठा था। उनही की उसने अपने छिपने के लिए आड़ ली हुई है। जो इस सारे खेल को इस प्रकार मान लेता है तो वह एकदम कह उठता है कि यह रहा वह ब्रह्म जिसकी मैं तलाश कर रहा था।

जैसे अरणियों में अग्नि होती है परन्तु दिखलाई नहीं देती। जैसे गर्भिणी का गर्भ सुरक्षित रहता है परन्तु दिखलाई नहीं देता परन्तु गर्भिणी का ध्यान सदा उसी की ओर रहता है। इसी प्रकार ज्ञानी जन प्रतिदिन स्तुति के योग्य ब्रह्माग्नि को इन पञ्च-महाभूतों की रगड़ से ही पैदा करते हैं। सदा उसी की ओर ध्यान लगाये रहते हैं। वे सब कुछ उसी ब्रह्म के अर्पण कर देते हैं। तब उन्हें ब्रह्म के दर्शन होते हैं। तब वे कह उठते हैं कि यह रहा वह ब्रह्म। सूर्य का उदय होना तथा अस्त होना उसी की सामर्थ्य से है। सब देवगण उसी ब्रह्म के आगे सिर झुकाते हैं। उसी के लिए अर्पित हैं। उस ब्रह्म से बढ़ कर कोई नहीं है। वही ब्रह्म है।

सारे संसार में एक ही ब्रह्म की शक्ति काम कर रही है। सर्वत्र ब्रह्म की ही व्यवस्था है जो ऐसा जानता है वह पूर्व ज्ञानी है परन्तु जो भिन्न-भिन्न शासकों की कल्पना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है वह भूल है। प्रभु के शासन में सर्वत्र एकता है उसमें नानात्व के भाव कहीं नहीं हैं। जो ऐसा मानता है वह मृत्यु के मुख से सदा दूर रहता है।

मन के द्वारा ही एक तत्व (ब्रह्म) के दर्शन होते हैं इन्द्रियों द्वारा नहीं। इन्द्रियों के द्वारा जो अनेकता दिखलाई देती है वह वास्तविक नहीं है। एकता का दर्शन जीवन तथा अनेकता का दर्शन मृत्यु है।

आत्मा के मध्य में परमात्मा स्थित है। ब्रह्म महतो महीयान है। जिस प्रकार छोटा बालक अपने माता पिता की अंगुलि पकड़के चलता है इसी प्रकार साधक को भी चाहिए कि वह प्रभु का अंगूठा पकड़के चलता हुआ सा अपने को माने। जिसका अंगूठा पकड़ लिया जाता है वह उसको अवश्य ही पार ले जाता है।

वही ब्रह्म सर्वत्र है, कण कण में है। थोड़ा सा भी अंगूठा मात्र भी उसका ज्ञान हो जाता है तब वह अंगूठे के पकड़ने वाले को पार उतार देता है। वह निर्धूम शुभ्र अग्नि के समान प्रकाशित है उस को जानो।

जिस प्रकार पर्वत के ऊपर वर्षा हुआ जल भिन्न-भिन्न नालों द्वारा भिन्न-भिन्न नाम से पुकारा जाता है। वस्तुतः वह एक ही है। इसी प्रकार इन्द्रियों के भिन्न-भिन्न धर्मों को देखकर मनुष्य समझता है कि संसार में एकता नहीं है, अनेकता है। अनेकताओं को प्राप्त करने के लिये दौड़ता रहता है। दौड़ने के अतिरिक्त उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता, इसी प्रकार इसको जानो।

जैसे शुद्ध जल को शुद्ध जल में डाल देने से वह जल शुद्ध ही रहता है यदि अशुद्ध जल में शुद्ध जल डाल दिया जावे तो वह भी अपवित्र हो जाता है, इसी प्रकार शुद्ध आत्मा जब शुद्ध परमात्मा से मिल जाता है तो वह शुद्धतम हो जाता है। यदि अशुद्ध संसार से वह मिल जाता है तो आत्मा भी अशुद्ध अर्थात् मलिन हो जाता है। हे नचिकेता ! आत्मा को तू ऐसा ही जान तथा मान।

जो पुरुष इस शरीर को एक नगर मानता है, जिस नगर में दो आंख, एक नाक, दो कान, एक मुख, एक तालु, एक नाभि, एक मल द्वार ये ग्यारह द्वार हैं। इन द्वारों से विषयों की ओर भी गमन हो सकता है तथा अन्दर आत्मा की ओर भी गमन हो सकता है। जो मनुष्य इन द्वारों से आत्मा की ओर गमन करता है, ऐसा पुरुष जब शरीर का त्याग करता है वह सदा शोक तथा दुःख से दूर होके मुक्त हो जाता है। आत्मा का स्वाभाविक यही रूप है।

जो जीवात्मा अपने को हंस के रूप के समान धवल शुद्ध, पवित्र आचार विचार वाला बना लेता है, अन्तरिक्ष में रहने वाले वसुओं के समान जो हृदयरूपी अन्तरिक्ष में ध्यान रखता है, ध्यान लगाता है, वेदी पर बैठने वाले यजमान के समान अपने जीवन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु के अर्पित करता है, अतिथि के समान अनासक्त रहके इस संसार में रहता है, नर देह को उत्तम देह बनाके रहता है, जिसके जीवन में उत्तमता रहती है, जो ऋत देह में रहता है, जिसका जीवन सत्य से पूर्ण है, जो आकाश की ऊंचाई की तरह ऊंचे विचारों में मग्न रहता है वह पुरुष ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है।

मानव प्राण को ही जीवन समझते हैं परन्तु प्राण का संचालक वह आत्मा ही है। प्राण अपान में गति देने वाला वह आत्मा ही है। जब शरीर में रहने वाला आत्मा शरीर से निकलने लगता है तब इस शरीर में कुछ भी शेष नहीं रहता है। इसमें कोई भी शक्ति शेष नहीं रहती है।

नचिकेता को आचार्य यम फिर कहने लगे -- हे पुत्र ! सुन मरने के बाद आत्मा की क्या गति होती है यह सब मैं तुझे बतलाऊंगा।

जिसका जैसा कर्म होता है. जिसका जैसा ज्ञान होता है उसके अनुसार जीव विभिन्न-विभिन्न योनि में जाकर शरीर धारण कर लेते हैं, कुछ स्थाणु योनि में चले जाते हैं। शास्त्रानुसार जीवात्मा शरीर को छोड़कर वायु, अग्नि, जल में या इनके परमाणुओं में होके पार्थिव शरीर को प्राप्त करता है। यह गति प्रत्येक शरीर को धारण करने वाले की है। इससे आगे अपने स्वभावानुसार, कर्मानुसार, भोगानुसार अपनी-अपनी योनियों को जीवात्मा प्राप्त करता है।

पुनः यमाचार्य परमात्मा के विषय में नचिकेता को उपदेश देने लगे—सबके शयन करने पर ब्रह्म जागता रहता है। वस्तु का निर्माण जिस प्रकार होना चाहिये उसे वह वैसे ही बनाता है। वह ब्रह्म शुक्र, शुद्ध स्वरूप है, अमर है, उससे बढ़कर कुछ भी नहीं है।

जैसे अग्नि प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है। अग्नि ने अपना रूप भी उस-उस वस्तु के समान बनाया हुआ है। इसी प्रकार सब प्राणियों में तद्रूप दीखता हुआ परमात्मा निवास करता है। इसी प्रकार वायु के विषय में भी समझें। वह परमात्मा सब का नियन्त्रण किये हुए है। सृष्टि की रचना अनेक प्रकार से वह करता है। उस प्रमात्मा को आत्मा में स्थित करके जो मनुष्य वहां पर उसके दर्शन कर लेते हैं उनही को स्थिर आनन्द की प्राप्ति होती है।

उस ब्रह्म के विषय में यह कहना कठिन है कि 'यह रहा वह ब्रह्म'। वह हृदय मन्दिर में ही प्रकाशित होता है।

उसके प्रकाश के सामने सूर्य का प्रकाश भी फीका है। चन्द्र तथा तारों की तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां कोई गिनती नहीं है। अग्नि की तो वहां गिनती ही क्या होनी थी। सब प्रकाशमान लोक उसी की सत्ता से प्रकाशित हैं।

यह मनुष्य का शरीर अपूवत्य है जो कल ठहरने वाला नहीं है, जो स्थिर नहीं है। यह उलटा लटका हुआ वृक्ष है, जैसे वृक्ष की जड़ नीचे है। इसी प्रकार मनुष्य के सिर को नीचे होने से दोनों लटके हुए हाथ संथा जटायें जड़ के समान प्रतीत होता है। अतः सिर इसकी जड़ के समान है। हाथ तथा पैर वृक्ष की शाखा की तरह फैले हुए हैं। अतः इस शरीर से मोह मत कर। जिस प्रकार वृक्ष नाशवान् है इसी प्रकार शरीर भी नाशवान् है। इसमें मोह न कर अतः आत्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए वही ब्रह्म शुक्र है अमृत है इससे बढ़ कर कुछ नहीं है।

इस संसार का निर्माता कोई है। इस संसार में गति दिखाई देती है। शरीर में जीवन गति, तथा जगत् में भौतिक गति विद्यमान है। यह सब गति प्राण के कारण है। प्राण भी स्वयं गतिशील नहीं है। इस में भी कोई गति उत्पन्न करता है। इस प्राण को गति देने वाली कोई भयङ्कर शक्ति वज्र लिये खड़ी है। इस प्रकार जो ब्रह्म की सत्ता स्वीकार करते हैं वे अमृत हो जाते हैं।

उसी परमात्मा के भय से अग्नि तथा सूर्य तपते हैं, इन्द्र, वायु भय से काम करते हैं मृत्यु भी उसी के भय से भयभीत हैं। वही ब्रह्म है। शरीर के छोड़ने से पूर्व ही जो ब्रह्म को जान लेता है उसका ही जन्म सफल है

इस ब्रह्म को दिखलाने वाले पितर, ज्ञानी, ध्यानी हैं, आत्मतत्वदर्शी पुरुष हैं। आत्मा कभी उत्पन्न नहीं होता है। इन्द्रियां आत्मा से पृथक् हैं। इन्द्रियां उत्पन्न होती हैं और नष्ट होती हैं इस प्रकार आत्मा कभी उत्पन्न तथा नष्ट नहीं होता। जो शरीर तथा इन्द्रियों से पृथक् अपने आत्मा को मानता है वह अमृत अमर हो जाता है।

इन्द्रियों से मन उत्तम है, मन से बुद्धि उत्तम है, बुद्धि से महत् तत्त्व त्तउम महत् तत्त्व से प्रकृति सूक्ष्म है। प्रकृति से ब्रह्म उत्तम है। वह अलिङ्ग है। उस ब्रह्म को जान कर मनुष्य अमृत्व को प्राप्त कर लेता है।

आंखों से ब्रह्म का रूप दिखाई नहीं देता है। आंख उसके रूप पर टिकना नहीं चाहती हैं, परन्तु जिस पर वे टिकती हैं वह ब्रह्म नहीं है। ब्रह्म का दर्शन आंख से तथा हाथ आदि से नहीं होता है। हृदय में मन से ही उस ब्रह्म को पकड़ पाते हैं।

जब पांचों इन्द्रियां मन के साथ स्थिर हो जाती हैं, मन निश्चल हो बुद्धि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ आ मिलता है उस अवस्था को परम गति कहते हैं। इन्द्रियों की स्थिर धारणा को योग कहते हैं। जिसकी इन्द्रियां स्थिर हो जाती हैं वह प्रमादहीन हो जाता है। योग प्रभव तथा अप्यय है। शुभ संस्कारों की उत्पत्ति को प्रभव कहते हैं अशुभ संस्कारों का नाश अप्यय कहाता है। यह योग से ही होता है।

वह है या नहीं है—इन दोनों की वास्तविक विवेचना करके 'वह है'—यह कह कर उसे पाया जाता है। जिसने यह मान लिया कि 'ईश्वर है' उसका विचार श्रेष्ठ है।

जिसके हृदय की सब कामनायें छूट जाती हैं वह अमृत हो जाता है। वह ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

ब्रह्म की प्राप्ति पर हृदय की गांठ टूट जाती है। वह अमृत हो जाता है।

हृदय की एक सौ एक नाड़ियां हैं उनमें से एक मूर्धा सिर की ओर निकल गई है। मृत्यु के समय उस नाडी से जो ऊपर को उत्क्रमरण करता है वह अमृतत्व को प्राप्त करता है, शेष सौ नाड़ियां साधारण व्यक्तियों के उत्क्रमरण के समय काम आती हैं। ब्रह्मनिष्ठ व्यक्ति के प्राण मूर्धा से निकलते हैं, दूसरों के अन्य मार्ग से जाते हैं।

प्राणिमात्र के हृदय में आत्मा है, उस आत्मा के भीतर ब्रह्म छिपा बैठा है। वह अंगूठा मात्र है। मानो वह ब्रह्म अंगूठा रूप बन कर आत्मा में बैठा ह। उस अगूठे को पकड़ कर पूर्ण ब्रह्म को प्राप्त करो। तब कह उठोगे यही ब्रह्म है जिसकी मुझे तलाश है।

इस प्रकार यह नचिकेतोपख्यान जीवन को निर्मल बनाने वाला है। मृत्यु भय से रहित करने वाला है। जो इस उपदेश का श्रवण कर इस पर आचरण करता है वही महान् पुरुष बनता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ, हम उसी का वरण करें

सुविचारों के समतल पर जब हम लड़खड़ाते हैं,
सही परख के अभाव में, जब हम चूक जाते हैं।
मान्यता देते हैं—नकल को असल की,
कर बैठते हैं जो नहीं करना चाहिए था !
क्या किया वापिस आता है ?
पछताने के अलावा क्या रहता है ?
रास्ता दिखाती हैं— दिव्य ज्योतियां,
आंखों के रहते भी, जो अन्धे होते हैं !
प्रकाश को प्रकाश न मानकर, जो भूल करते हैं,
वे सदा दूसरों के स्वत्व को हरते हैं।
परम्पराओं की झूठी लीक पर चलकर,
कोई पनपा है कभी ?
कोई भी 'युग पुरुष' कुछ नया नहीं कहता,
संस्कार करके युग के अनुरूप,
कंचुकी हटाता, प्रेरणा देता है,
चलने की उस अमर लीक पर—
जो सुखद सर्व ग्राह्य हो !
स्वत्व परत्व की खाई को ढ़ाक कर,
जब हम आगे बढ़ेंगे,
दिव्यलोक हमारा स्वागत करेगा।
आओ, हम उसी का वरण करें—
जो 'सच्चिदानन्द' है !!

★
डॉ० चन्द्रदत्त कौशिक
रीडर,
आयुर्वेदिक कालेज,
कन्या गुरुकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दन है, अभिनन्दन उनका

—डॉ० चन्द्रदत्त कौशिक
डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट
आतुरालय आयुर्वेदिक कालेज,
खानपुर कलां

★

'फूल' का अवसान हुआ,
अन्धकार छा गया,
तिमिर को चीरकर—
नव प्रभात हो गया !
यही गति है काल चक्र की,
अन्धेरे के बाद उजाला होता है !
उजाले की किरण चमकी,
किसी ने सहारा दिया,
स्वयं पीछे रहकर, उसको आगे किया,
जिस से बन सकी वह,
जो कल नहीं था आज !
डालते बन्धन जो आज पगों में,
जो आगे बढ़ने की राह में थे,
रुक जाते बढ़ न पाते,
अन्धकार-अन्धकार रह जाता,
लक्ष्य का अवसान हो जाता !
ऐसा हुआ नहीं,
प्रकाश को गति मिली,
मध्याह्न हो गया !!
गति प्रदाता कौन है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ज्ञात है ?
पं० 'अभिमन्यु देव' जी—
जो 'विजय' के तात हैं।
आज की सुभाषिणी, 'सुभाषिणी' होती कहां ?
'पद्मश्री' से विभूषित, यह बहिन फिर होती कहां ?
जो न मिलती गति, शक्ति, मार्ग प्रदर्शन तथा
दूर होती फिर भला क्या, 'फूल' की मानस व्यथा ?
उस व्यथा को मेटने में, जिनका अलौकिक हाथ है,
कल्याणकारी मार्ग में, जिनका सदा से साथ है।
मूक दृष्टा पर जो सृष्टा, बन गये आदर्श से,
हैं लाभ पहूँचा रहे जो, आत्म-सुचिन्त्य-विमर्श से।
आज गौरव की गरिमा, छा रही देखो-अहा !
प० 'अभिमन्यु 'देव' से, जहां पर मनीषी हों वहाँ !!
भारत महि पर जन्म लेवें देव' से ही सर्वदा,
भास्कर बन ज्योति देवें, जो अलौकिक सर्वदा।
वन्दना होती रहेगी, उनके प्रभव प्रकाश को,
गति प्रदाता बन-बनें जो, गाथा परम विकास की !!
पूजा जिनकी पूजा करती,
कैसे पूजे हम उन को ?
वन्दन है अभिनन्दन उनका
वन्दन अभिनन्दन है उनका !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा राष्ट्रीय पर्व :

१५ अगस्त

— डॉ० चन्द्रदत्त कौशिक
कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

★

स्वतन्त्रता की वेदी पर, जीवन का अर्घ चढ़ाया है ।
जिन वीर सपूतों ने भारत के, माँ का मान बढ़ाया है ॥
भूखे रह कर तिल-तिल गलकर, जो मिटे आन पर भारत की ।
कष्टों को गौरव मान मिटे जो, शान-बान पर भारत की ॥
आज उन्हीं की अमर कहानी, हम दोहराने आए हैं ।
उनके बलिदान की वेदी पर, पुष्प चढ़ाने आए हैं ॥
भारत माँ की लाज, हमारी लाज सदा अपनी होगी ।
भारत के हित भारत की, बस बात सदा अपनी होगी ॥
वैरी कभी न हावी होगा, न बांध सकेगा निज बन्धन ।
न भारतवासी जान सकेंगे, कैसी बेड़ी कैसा बन्धन ॥
सदा स्वतन्त्रता के आंगन में, हम साँस सदा अपनी लेंगे ।
जो आंख उठायेगा हम पर, हम आंख उसको फोड़ देंगे ॥
पन्दरह अगस्त की वेला पर, हम यही प्रतिज्ञा लेते हैं ।
भारत की सुख-स्मृद्धि पर, हम अपना जीवन देते हैं ॥
जीवन के हर आँगन में, हम स्वावलम्बी निर्भय होंगे ।
भारत को भारत मान सदा, हम प्राण सदा उस पर देंगे ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार भी जीत है

—डॉ० चन्द्रदत्त कौशिक
रीडर, आयुर्वेदिक कालेज,
कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

★

परीक्षाफल निकला है,
कोई पास है कोई फेल
यही है जीवन का खेल !
खेल में हार-जीत है,
हार भी जीत है,
विचार कर देख—
कहाँ पर भूल है ?
दुख का वही मूल है !
भूल के सुधार का
सूझ से काम का
हार एक आह्वानहै !
दुख न मान
हिम्मत न हार
भूल को सुधार
जीत तुम्हारी है,
हां, सफलता तुम्हारी है !
सौभाग्य के द्वार से—
वापिस न लौट,
हार है कसोटी
खरा या खोट ?
खोट को त्याग—
कंचन-कंचन बनता है !
तपता है तीव्राग्नि में
चोटें सहता है,
बनता है फिर—
उसका स्वरूप !
लगन के तीर से,
पावन धीर से—
लक्ष्य को बेंध,
पुन: खेल,
जीत तुम्हारी है !!
हार भी जीत है,
हाँ, जीत तुम्हारी है !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REALIZATION OF GOD

—PREM CHAND
M A., B.Ed.

★

It is the burning topic of the day about the existence of God. Some believe in God and others not. But every body realises it that there is any power who rules this world and that may not be other than the Almighty God.

It is the scientific and industrial age. Some scientists do not have faith in Omnipotent and there are few others also who have strong belief. People are also confused whether they should pray to the Omnipresent or not. Things go on without praying to God. It is a puzzling and riddling question.

It is generally seen that those who do not have prayers, they are well off and there are others who pray to All-Powerful. But it is a fact those who are rich they are never found to be happy. They can never be carefree and without worries.

Every body wants happiness and cheerful life. But it is not attained. We see that every body is in trouble now a days. The cause of trouble we create overselves for our desires are never fulfiled We have no time except money making.

There are many others who say that "Eat, drink and be merry." This is a foolish dictum quoted by them. God is not shown like wind but realised as wind is realised.

There are some questions about the realisation of God which would be helpful in it as "God is realised in one's own heart." We say that God is every where and even in heart. God is shapeless and colourless.

Swami Vivekanand once went to America and he said about the existence of God. "So long as there is question

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

of life and death, so long as there is weakness in the human heart, till then there must be faith in God.

Once a great scientist also said, "We must invent God if there is no God, for, fear of God at least keeps a man away from sin." It is quite appropriate. We see that when we think that we can do any thing which we like, we commit so many blunders. But when we are under supervision of any one then we take care. We can take up the case of students. When they are under supervision of teachers they are very careful and attentive and when they are free, they can not keep themselves under control and discipline.

There is a folk saying in India "It is not difficult to realise God. We merely need up-rooting from one place to another." Do not find fault with others, let us find fault with overselves. "O Physician, heal thyself" is the wise old saying. In Rigveda it is also said that as follows :—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्य
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥
(ऋ. १-१६४-२०

Constant and continuous realization of Ever-Presence of God in our hearts is the surest deterrent (discouragement) from evil. In vedic religious books human life is compared to a tree. Two birds (one God and one soul) are sitting on the branches of the tree) God bird is sitting above where as soul bird is sitting below. God bird does not do any thing. He only sits and looks on. The soul bird does all eating of fruits. God bird only sees his actions. In brief we can say that soul is doer where as God is spectator of his deeds and final authority for judgment of right or wrong doing of soul.

When we do any misdeed it is not voice of mind or soul, but, it is voice of God, who lives in our hearts. O man, try to heed that voice of God and all would be well with you.

If we do not have in God, that means we have more faith in the world. If a man has no faith in God, he considers the things of the world real. May God gift us with a power that we may be devotee to him and lead a pious and happy life.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलिपशु टीपू

लेखक श्री प्रतापसिंह
कुल सचिव, कार्यालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार

★

प्रति वर्ष गर्मियों में हमारा जंगलों में रात बिताने का कार्यक्रम बड़े उत्साह से चलता है। साथियों की कमी नहीं रहती। किन्तु उस वर्ष साथी जुटाने में कठिनाई हो रही थी। अन्त में एक उपाय सूझ गया। मैंने घोषणा कर दी कि इस बार मैं सबको निश्चय ही तेंदुआ दिखाऊंगा। एक कुत्ते को साथ ले जाने के लिये मैंने तैयार कर लिया था। उसका नाम टीपू था।

गौरीवन का कार्यक्रम बना। यह जंगल बहुत घना और हाथी, शेर, तेंदुआ, अजगर आदि से भरा हुआ है। एक बार पं० हरिवंश जी वेदालंकार के साथ जाते हुये हम ने एक १५ फुट के अजगर की पूँछ पकड़ कर खींची थी—बाद में वह छूट कर भाग गया। यह जंगल हरिद्वार से सात मील दूर गंगा के दूसरे तट पर है।

निश्चित दिन हम पैदल गौरीवन पहुंचे। मेरी गुप्त योजना यह थी कि हम मचान पर बैठेंगे और कुत्ते को नीचे बाँध देंगे, जहाँ तेंदुआ अवश्य आयेगा। मचान के लिये लगभग आधा मील जंगल के अन्दर जाकर हम ने दो चार डण्डे ही काटे थे कि किसी ने हमें ललकारा—"कौन है?" हम इस जगह को घोर एकान्त और मनुष्य की पहुंच से बहुत दूर समझे बैठे थे पर देखा तो न जाने कहां से एक फोरेस्ट गार्ड आ टपका। अवश्य वह कुल्हाड़ी की आवाज सुनकर आया था। समझ गए कि लकड़ी काटने पर आपत्ति करेगा। उत्तर भी सोच लिया—'गंगा के किनारे स्काऊट कैम्प लगा है, खूंटियां काट रहे हैं।" पर वह कुछ और ही कह रहा था—"यहां पर खूनी हाथी आता है, जल्दी से निकल जाओ।

हम ने उसका विश्वास नहीं किया। सोचा, हमें रोकने के लिये बहाना गढ़ा गया है। जैसे ही उस की पीठ फिरी कि हम जंगल में और अन्दर घुस गए। कुत्ता डरा हुआ सा बराबर हमारे बीच में रहने का प्रयत्न कर रहा था।

थोड़ा समय बीता ही था कि डरावनी तथा विकट चिंघाड़ बहुत निकट से सुनाई दी। खूनी हाथी हम पर झपट पड़ा था। सब को काठ मार गया था। विवश निर्जीव से खड़े रह गए हम। सोच भी न पाए थे कि क्या करें, तब तक एक दन्ता हाथी झपटता हुआ सामने आ गया। फोरेस्ट गार्ड की सलाह न मानने का पश्चाताप अब बड़ी तीव्रता से अनुभव होने लगा। पर अब क्या हो?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते देखते हाथी सिर पर आ पहुंचा। हम भय से जड़ बने रहे। न भागते ही बना न पेड़ पर चढ़ते।

जब हाथी ने हमें भागते न देखा जैसा कि देखने का उसे अभ्यास हो रहा होगा तब वह ठहर गया, पर, यह न समझें वह हमें छोड़ना चाहता था। हमारी किंकर्त्तव्यविमूढ़ता ने उस मत्त-गयंद की प्रगति पर एक ब्रेक सा लगा दिया।

हमारे पास तीन कुल्हाड़ियाँ थीं। यदि साहस होता तो साल वृक्ष के तनों के पीछे छिप कर हम उसका कुछ मुकाबला कर सकते थे। और कुछ नहीं तो हल्ला तो मचा ही सकते थे, किन्तु इस अत्यन्त आकस्मिक आक्रमण से हम हक्के बक्के रह गए।

जितना आकस्मिक उसका आक्रमण था उतना ही अप्रत्याशित हमारी मुक्ति भी। अचानक एक तेज आवाज से वह सलवान रूपी विशाल भवन गुञ्जायमान हो उठा। हमारा टीपू कुछ कदम हाथी की तरफ बढ़ कर सम्पूर्ण उग्रता के साथ गुर्राने और भूँकने लगा। अब तक उसकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं गया था। हाथी में बेचैनी के कुछ लक्षण दिखाई दिये। उसने एक कदम कुत्ते की तरफ बढ़ाया, जिस पर कुत्ते ने अगल बगल झपटना शुरु कर दिया। सुनसान जंगल में वह आवाज हथोड़े के प्रहार का सा प्रहार कर रही थी। अपने पजों से मिट्टी खरोंच कर उसने खूब धूल उड़ाई और उसकी वक्र सोंटीनुमा पूंछ खूब ऊंची उठी विजयपताका की तरह लहरा रही थी।

अब तक हमारी जड़ता भी दूर हो चुकी थी। समवेत शोर मचाते, कुल्हाड़ियाँ घुमाते हम हाथी की तरफ बढ़े। साहस का यह प्रदर्शन खूब सफल रहा। हाथी ने सूण्ड तथा पूंछ ऊपर की, और मुड़ कर भाग खड़ा हुआ। उसे भागते देख कर टीपू ने उसे और खदेड़ा।

हम इस कुत्ते के कितने कृतज्ञ थे यह वर्णनातीत है। तेंदुए के लिए बलिपशु के रूप में लाये गये इस प्राणी ने पांच प्राणों की रक्षा की। भावुकता के प्रवाह में कोई उसे गले लगाने लगा। और कोई गोद में उठाने लगा। अब यह किसी भी प्रकार सम्भव न रहा कि हम मचान पर बैठते और उसे नीचे छोड़ देते। बलिपशु अब देवता तुल्य हो गया था। उसे मचान पर चढ़ाना या वहाँ रात भर बिठाये रखना टेढ़ी खीर थी, अतः मचान का प्रस्ताव रद्द हो गया और जिन डण्डों के पीछे हम मृत्यु के मुख में पहुंचे थे, उन्हें झाड़ियों में फेंक दिया गया।

कुत्त के इस व्यवहार में असामान्य कुछ भी नहीं था। यह शाकाहारी जन्तु पर माँसाहारी जन्तु का रोब था। गाय, भैंस, घोड़े आदि से कुत्ते प्राय भिड़ जाते हैं। फिर हमारे ठहरे रहने से उसका साहस और भी बढ़ गया था। पर इस घटना से कोई नियम नहीं बनता। हर कुत्ता हर हाथी को भगा सकता है—यह धारणा अपने मन से निकाल देनी चाहिये। व्यक्तिगत भिन्नताओं का नियम सभी जगह लागू होता है।

अब सुरक्षित रात बिताने के स्थान की खोज शुरु हुई। मैदान में हाथी का डर था। कोई अलग खड़ी ऊंची चोटी या टीला नहीं मिला। अन्त में एक जगह चुनी। बीस फ़ुट ऊंची, खड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ी के बीच लगभग चौदह फुट पर छज्जे के समान थोड़ी-सी समतल जगह थी। पहाड़ी के ऊपर रस्सा लटका कर वहाँ उतरे। पांच व्यक्तियों के लिये मुश्किल से बैठने की जगह थी। नीचे देखकर भय लगता, गिरे तो हाथ पैर टूटने का खतरा। पर यह खतरनाक जगह खतरे से बचाने वाली भी थी। कुत्ते सहित हम वहाँ पर डटे। अभी कुछ घंटे पूर्व की घटना का गहरा प्रभाव हम पर था।

सूर्य छिपने से आधा घंटा बाद चांद निकला, पर पहाड़ी की ओट में होने के कारण सामने वाला मैदान अभी अंधेरे में था। तब तक कहीं से कुछ बादल के टुकड़े आकाश में आ गए और अंधेरे तथा चांदनी की आँख मिचौनी होने लगी। कुछ देर में बिल्कुल अन्धेरा ही हो गया। खैर, दिखाई न दे तो सही, आवाजें तो सुनाई देंगी। आवाजें भी काफी मनोरजक होती हैं। पर यह भी न होना था। हवा के झोंके चलने लगे। और वृक्षों में हवा की साँय-साँय के अतिरिक्त कुछ सुनाई ही नहीं देता था। आधी रात के बाद हवा रुकी और चांदनी फिर निकल आई। आहट आने लगी जो रुक रुक कर आ रही थी। हल्की सी बदबू भी आ रही थी। टीपू बेचैन होकर चूँ चूँ करता रिरियाने लगा। ऊपर न मालूम शेर था या चीता। यदि हम पर कूदा तो अंग भंग या मृत्यु निश्चित थी। एक बार हम ने उसे भगाने के लिये शोर मचाया। उत्तर में हल्की गुर्राहट सुनाई दी। लेकिन अजानी।

डर कर हम फिर नहीं चिल्लाए। हाँ एक साथी ने अपना तीन डिब्बों वाला कटोरदान ऊपर फेंका—सम्भव राक्षस अतिथि डर कर भाग जाए। उधर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। विवश, भयपूर्ण कल्पनायें करते रात बीती, जो कालरात्रि के समान अनन्त डरावनी प्रतीत हो रही थी।

हल्का-सा प्रकाश फैलते ही हम ऊपर चढ़े, कुत्ते को भी ऊपर चढ़ाया। बदबू अब भी थी, पर दिन के प्रकाश में सारे भय हवा हो चुके थे। कटोरदान के डब्बे खोज कर रास्ते से पहाड़ी के नीचे आए तो कुत्ता साथ न था। पहले तो हम ने खूब पुकारा। जब वह नहीं आया, तब हम वापस लौट कर रात वाले स्थान पर गए। उसे जंगल निगल गया लगता था। तभी एक लंगूर बोल पड़ा—"खर्रर्रप! खकोर्रर्रप!!" बेचैनी तथा आतंक से भरी यह चेतावनी निर्भ्रान्त थी। कुछ आगे बढ़ते ही देखा तो टीपू एक झाड़ी के नीचे मरा पड़ा था उस के गले पर घाव था।

सब से अधिक मेरा मन धिक्कार रहा था। मेरी कपट योजना अन्त में मुझे ही धोखा दे गई। हम सब के हृदय ग्लानि, पश्चात्ताप तथा दुख से भरे हुए थे। महाभारत-युग के उस श्वान ने मात्र एक युधिष्ठिर को सशरीर स्वर्ग पहुंचाया था, लेकिन कलियुगी बलिपशु टीपू ने हम पाँच व्यक्तियों को मृत्यु-लोक में रख स्वय स्वर्ग जाने का जो कष्ट उठाया उसका वर्णन किसी वेदव्यास के लिए ही सम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल समाचार

[गुरुकुल भैंसवाल कलां]

ऋतु रंग

इस वर्ष वर्षा ने चारों ओर ऐसी तबाही मचाई है कि लिखते हुए भी लिखने का साहस नहीं होता। वर्षा सम्बन्धी प्रत्येक साहित्यिक पंक्तियां भूली चली गई हैं। चारों ओर जलमग्न पृथ्वी किसान के प्रति दयाश्रु से लिए बैठी है। किसान का इस वक्त का सेवक पश्चिमी वायु भी बहुत विलम्ब करके आया है। सूर्य का ताप तीव्रता पर है मानो पृथ्वी रूपा स्त्री के पानी सुखाने की चुनौती को उसने अपने पुरुषत्व को चुनौती माना हो। देखें—कब वह अपने मिशन में सफल हो पाता है। मुझे तो इस समय कुछ दिन पूर्व की जलमग्नता को स्मरण करने का अवकाश मिल गया है। धान तथा गन्ने के खेतों में पानी चार-चार फुट खड़ा हो गया था। एक दिन पम्पिंग सैट, ट्यूबवैल अपनी ड्यूटी पर लगे रहते तो दूसरे दिन फिर गुरुकुल की चार दीवारी को टक्कर मारती पानी की लहरें दिल में निराशा पैदा कर देती थी। फिर भी गुरुकुल के अधिकारी निराशा को क्षणिक बनाए रहे। उन्होंने प्रकृति के कोप को सहा। आजकल भी दिन रात्रि लगातार एक पम्पिंग सैट तथा एक ट्यूबवैल पानी निकालने में लगा है। (18-9-76)। इस बार खेती का बहुत नुकसान हुआ है।

स्वाधीनता-दिवस समारोह

वह प्रातः कितनी रंगीन व मार्मिक वातावरण को पैदा करने वाली प्रातः थी, जिस प्रातः गुरुकुल परिवार ने भारतवर्ष के गौरव तिरंगे झण्डे को फहराया। राष्ट्रीय ध्वजोत्तोलन की रस्म प्राचार्य श्री महामुनि जी ने अदा की। एक अमिट याद उस तथ्य कथ्य की जो क्रान्तिकारियों ने अपने खून से लिख छोड़ी थी—इस अवसर पर देश भक्ति की भावना आग में घी का काम कर रही थी। कितने कष्ट सहन करके नेहरु, गांधी, सुभाष, बिस्मिल ने भारतीयों को यह आजादी का हीरा भेंट किया था। इस अवसर पर हुई सभा में वक्ताओं ने रोंगटे खड़े कर देने वाले संस्मरण, क्रांति-घटनायें, आन्दोलनों की कहानी के विवरणों को चित्रित किया। मैं सोच रहा था कि देश भक्ति पर उत्साह से बोलने वाले, जोश भर के देश भक्ति-गीत गाने वाले बच्चों को देखकर स्वर्गगत आत्मायें कितना सन्तोष व आनन्द प्राप्त कर रहीं थीं। अनेक वक्ता तो बोलते हुए भाव विह्वल हो चले थे। ब्रह्मचारी देश के अनन्य सेवकों में, कट्टर भक्तों में आगे होने को छटपटा रहे थे और वयोवृद्ध उन्हें सबल प्रेरणा दे रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोहत्या–निषेध पर हर्ष

गुरुकुल की सन्तानें हमेशा गोहत्या के विरोध करने वाले ग्रान्दोलनों में ग्रग्रणी रहा है। गुरुकुल वासियों को गर्व हुग्रा था जब विनोबा भावे ने गोवध–निषेध को सम्मुख रख कर ग्रपनी इस मांग को क्रियान्वित करने हेतु ग्रामरण ग्रनशन की घोषणा की थी। सरकार इससे प्रेरित हुई तथा उनकी भावनाग्रों का ग्रादर करते हुए उसने घोषणा की कि वह गोहत्या पर निषेध लगा रही है। विभिन्न राज्य सरकारों ने एतद् सम्बन्धी कानूनों के लागू करने की घोषणा करनी शुरु कर दी। केन्द्र सरकार की सम्पूर्ण रूप से गोवध–निषेध–योजना पर क्रियान्वित के ग्राश्वासन पर बिनोबा जी का वह व्रत का ग्रन्धकारमय दिन ग्राने से पहले ही समाप्त हो गया। गुरुकुल में इसी प्रसन्नता में एक सभा का ग्रायोजन किया गया। उसमें गुरुकुल की ग्रोर से हर्ष प्रकट किया गया है।

खेल व्यायाम का समां—

एक नजारा जो छुपाया नहीं जा सकेगा। वर्षा ऋतु ग्रपने बोरिया-बि तर सहित चली गई लेकिन ग्रपने प्रति विद्रोह को ग्रपने पीछे छोड़ गई। छात्रों में वर्षा ऋतु के दौरान व्यायाम व खेलों के प्रति कोपमिश्रित उदासीनता छाई हुई थी। ज्यों ही वर्षा ऋतु गई, छात्रों में एक नव-जीवन का संचार हुग्रा। प्रातः चार बजे सड़कों पर, गुरुकुल के प्रांगण में व्यायाम में संलग्न छात्रों को देखने में एक तृप्ति सी होने लगी है। नयनों ने ग्रपनी सत्ता का उपयोग कर लिया है ऐसा सन्तोष जाने क्यों मन स्वीकार कर रहा है। सायं भी खेलों में सलग्न विद्यार्थी छात्रावासों में पड़े इक्का-दुक्का छात्र को उपेक्षा भरी दृष्टि से देखते हैं।

दैनिकचर्या-समय-परिवर्तन—

गुरुकुल में शीत ऋतु के ग्रागमन को ध्यान में रखते हुए दैनिक चर्या के समय में परिवर्तन किया गया है। विद्यालय ग्रब प्रातः की बजाय दस बजे प्रारम्भ होता है।

गुरुकुल को गर्व—

हरियाणे में बाढ़ का प्रकोप इस वर्ष बहुत तीव्र रहा। ग्राज भी सड़कों पर चार-२ फुट पानी खड़ा है। गांव पानी के बीच टापू से नजर ग्राते हैं। बाढ़ग्रस्थ जनता में बीमारियां, भूखमरी की समस्यायें उपस्थित न हों – इस के लिये चारों तरफ प्रयास हो रहा है। गुरुकुल ऐसे कार्यों—ग्रवसरों पर पीछे कभी न रहा है। उसने बाढ़पीड़ित-सहायता-कोष में हजारों रुपया दान दिया है। ग्रपने देशवासी भाइयों की सेवा कर के गुरुकुल वासियों में गर्व की एक चमक पैदा हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे गर्व की बात यह है कि इस गुरुकुल कांगड़ी वश्वविद्यालय में हमारे यहां से गए एक छात्र ने छात्रवृत्ति प्राप्त की है। विद्यालंकार प्रथम वर्ष के श्री बसन्तराव यहां से विद्याविनोद (इन्टर) कर के गये थे। यह छात्रवृत्ति कक्षा के योग्यतम छात्र को विश्वविद्यालय की ओर से मिलती है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में भी हमारे छात्रों ने धूम मचा रखी है। वहां पर गए छात्र (जैसे पिछले वर्ष श्री अरविन्दकुमार तथा इस वर्ष संस्कृत विभाग में भीम सिंह तथा हिन्दी विभाग में वाचस्पति) राजकीय छात्रवृत्तिय का अधिकार प्राप्त किये हुए हैं। हिमाचल प्रदेश विश्ववि ालय में यहां के स्नातक श्री राजेन्द्र को एम. फिल. में सरलता से प्रवेश मिल गया है। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार हिन्दी विभाग में बाहर से आने वालों में से केवल दो को ही प्रवेश देना है। इस समाचार ने गुरुकुल भैंसवाल के नाम को रोशन किया है। यहां की अध्ययन पद्धति का अन्य सभी संस्थाओं से श्रेष्ठ होने का पक्का दावा है। गुरुकुल से सम्बद्ध प्रत्येक व्यक्ति को इस पर गर्व है।

गुरुकुल का अवकाश—

गुरुकुल भैंसवाल कलां का शरदुकालिक अवकाश १३ अक्टूबर से १६ अक्टूबर तक का था। निकट भविष्य में ही षाण्मासिक परीक्षायें हो जायेंगी।

एक मुक्तक

●

आफिस के बाहर लिखा था—बिना इजाजत अन्दर "मत" आयें
कृपया पास से गुजरने वाले सभी भाई और बहन इसे पढ़ते जायें
किसी ने की दिल्लगी "म" में लगा दी बड़े "ऊ" की मात्रा
अब स्वर्ण अक्षरों में लिखा था बिना इजाजत अन्दर "मूत" आयें।

—रायचन्द जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अनुभूति और अभिव्यक्ति'

--श्री विष्णुदेव प्रसाद विद्यालंकार
एम०ए० I (हिन्दी)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

★

हम प्रतिदिन किसी न किसी नई वस्तु के सम्पर्क में आते हैं; उसकी अनुभूति करते हैं; तथा उसकी अभिव्यक्ति भी करते हैं। मनुष्य के प्रतिदिन के जीवन में ये दोनों क्रियायें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से देखी जाती है। दोनों का मानव जीवन के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु के रूप, रस एवं स्पर्श आदि गुणों को ग्रहण कर जिस निष्कर्ष पर पहुँचता है उसे अनुभूति कहते हैं; तथा उस निष्कर्ष को जब वाणी के द्वारा उसके मंगल एवं अमंगल स्वरूप को व्यक्त करता है, तो उसे अभिव्यक्ति कहते हैं।

अभिव्यक्ति का जो धरातल है, वह ज्ञान और कर्म है। वस्तुतः ज्ञान और कर्म के बिना जो अभिव्यक्ति होती है, वह तथाकथित स्वर्ग और नरक के अस्तित्व की सी होती है। इसे सर्वांश रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह तो एक धार्मिक मान्यताओं के आधार पर कल्पित अभिव्यक्ति है न कि अनुभूत। आज के वैज्ञानिक युग में सिर्फ सिद्धांत या तर्क को ही नहीं, अपितु व्यवहारिक रूप को ही सत्य माना जाता है। आज हम इस मन्त्र का जाप कर रहे हैं कि वेद में विज्ञान भरा पड़ा है, इसमें विमान, राकेट एवं अन्य आधुनिक प्रक्षेपास्त्रों के बनाने की भी प्रक्रिया निहित है। किन्तु हम लोगों का यह नारा अरण्यरुदन के समान है। आज हम जब तक किसी भी वस्तु का साकार रूप प्रस्तुत नहीं करते तब तक बुद्धिजीवी वर्ग इस सिद्धान्त से सहमत नहीं होगा।

आज बड़े-बड़े धार्मिक मंचों पर आसीन होकर लोक-परलोक, स्वर्ग-नरक, मोक्ष-बन्धन एवं तज्जनित सुख-दुःख, पाप-पुण्य के लम्बे-लम्बे व्याख्यानों का सेतु बांध देते हैं। लेकिन यदि उन उपदेष्टाओं के जीवन में उस क्रिया को देखा जाय तो न ही उसका जीवन साधना पक्ष से गुजरता है और न ही कोई स्वानुभूति है अपितु इसके विपरीत उसका जीवन साधना विहीन एवं हृदय में असंख्य काले घट सुरक्षित हैं। उनका क्रियात्मक रूप सैद्धांतिक रूप से नितान्त अलग दिखाई पड़ता है। ऐसे लोग विशाल भीड़ में धारावाहिक एवं शास्त्रीय ज्ञान के आधार पर अपनी वक्तृता का भले ही कुछ क्षणों के लिए छाप छोड़ देते हैं, किन्तु उसके क्रिया पक्ष को सिद्धान्त से विपरीत पाने से शनैः-२ आस्था मिटती जाती है। अतः जो अभिव्यक्ति अनुभूति के धरातल से नहीं होती है, वह अनुकरणीय एवं स्थायी नहीं होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूति के लिये कर्म अपेक्षित है। साथ ही उसके लिए समय एवं साधना की आवश्यकता होती है। पठन-पाठन या श्रवण परम्परा से हम अभिव्यक्ति करते हैं; एक तो हमारी अन्तरात्मा स्वीकार नहीं करती है, दूसरा श्रोताओं पर भी स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसा कि ऊपर सङ्केत किया गया है कि अभिव्यक्ति के लिए ज्ञान एवं कर्म की अत्यन्त आवश्यकता पड़ती है। इसे एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। यथा—ऐसा सुना जाता है कि मनुष्य के अन्दर सहस्रार कमल हैं जिससे अमृत का स्राव होता रहता है। जिसके पान करने से मनुष्य मृत्युञ्जय हो जाता है। यह तो एक सुनी सुनाई बात हुई। इसे यदि पढ़ कर या सुन कर दूसरों के सामने अभिव्यक्त करते हैं, तो वस्तुतः यह अभिव्यक्ति नहीं कही जा सकती है। यह अभिव्यक्ति श्रवण या पठन-पाठन की अभिव्यक्ति हुई। यदि हम इस बात को ध्यान में रख कर इसकी प्रक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त कर नित्य प्राणायामादि द्वारा साधना करे तथा काल क्रम से हम अन्त में जिस अनुभूति के धरातल पर पहुंचेंगे तथा जो अभिव्यक्त करेंगे वही वास्तविक अनुभूति होगी। वही अभिव्यक्ति जनता में अनुकरणीय एवं श्लाघनीय होगी।

अतः स्वानुभूति में जो आनन्द एवं रस की प्राप्ति होती है तथा जो सत्यता दीख पड़ती है वह अन्यों की अनुभूति में नहीं। अगर इसे थोड़ी देर के लिए स्वीकार भी कर लिया जाय तो वस्तुतः जो सन्देह कालान्तर में हो जाता है या प्रश्न पैदा हो जाता है वह स्वानुभूति में अस्तित्व विहीन हो जाता है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि जैसे जीवित रहने के लिए आहार की आवश्यकता पड़ती है वैसे ही अभिव्यक्ति के लिए अनुभूति की आवश्यकता अपेक्षित है।

तीन चुटकले

★ ग्राहक – दूध में मक्खी पड़ी है।
दूधवाला—एक पाव दूध में हाथी मिलेगा क्या ?

★ कुल्फी वाला—एक बार खायेगा तो बार बार आएगा।
शरारती लड़का—मुफ्त में खिलायेगा तो लाख बार आएगा।

★ सास ने बहु को उसके मायके पत्र लिखा—लड़का बीमार है जल्दी आ जाओ।
बहु ने तार में पूछा—मेरा या आपका ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुर्भव–I

– देवराज मलिक
एम.ए.,बी.एड.

★

प्रस्तुत लेख आज के सन्दर्भ में प्राचीन सस्कृति को सम्मुख रखके लिखा गया है। लेख के प्रस्तुत कर्त्ता सुलझे विचारों के युवारक्त हैं। इस से पूर्व पत्रिका में उनकी कविताओं को गौरवपूर्ण स्थान मिलता रहा है। उनकी लेखनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक लेखों पर धारा प्रवाह गति से चलती है। समाज सन्देश इस युवा लेखक को आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करता रहेगा। उनमें लेखन की छिपी गूढ़ प्रतिभा को उकसाने का प्रयास करता रहेगा। —सम्पादक

तन्तुं तन्व भरजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृतान्।
अनुलबणं वयत जोगुवामापो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥०१ऋ०/५३/६;
तैत्तिरीय सं० ३।४ २२॥

यह ऋग्वेद की सूक्ति का एक श्रेष्ठ भाग है। इस मन्त्र में मानव के प्रति उपदेश दिया गया है कि हे मानव! तू सच्चे अर्थों में मनुष्य बन, मानव बन, पुरुष बन, आदमी बन। वेद माता ने मानव को मानव बनाने के लिए जो संकेत दिए हैं, उन में अनेक उपदेश आदेश व सन्देश दिए गए हैं। भगवान् ने शिशु के जन्म से शुभ-संस्कार तथा सुशिक्षा देने की प्रेरणा दी है—"आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्कर स्त्रजम्। यथेह पुरुषोऽसत्॥" यजु० २ ३३॥ अर्थात् ईश्वर आज्ञा देता है कि विद्वान् पुरुष और स्त्रियों को चाहिए कि विद्यार्थी, कुमार वा कुमारी को विद्या देने के लिए गर्भ के समान धारण करें। जैसे क्रम-क्रम से गर्भ के बीच देह बढ़ता है वैसे अध्यापक लोगों को चाहिए कि अच्छी-२ शिक्षा से ब्रह्मचारी, कुमार वा कुमारी को श्रेष्ठ विद्या में वृद्धियुक्त करें तथा (उनका) पालन करें वे विद्या के योग से धर्मात्मा और पुरुषार्थ युक्त होकर सदा सुखी हों, यह अनुष्ठान सदैव करना चाहिये।

इसी मन्त्र (यजु० २।३३) का भाव मैंने निम्न पद्य रूप में व्यक्त किया है—

निर्लेप कमल सा यह सुकुमार, अति कोमल-कोमल निर्विकार।
हे पितरो, इस के तुम आधार, इसको देते हो पूर्ण प्यार।
निज आश्रम में इसको लेना, सुख सुविधायें सारी देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके तन का, इसके मन का, तुमने ही करना है, सुधार।
तुम ऐसा यत्न सदा करना, इसमें नित नई शक्ति भरना।
सद्गुण-गुण का सञ्चय करना, करना मानवता का प्रसार।
मिथ्या, मोह न करना इस से, दुर्गुण बांध सकें न जिस से।
नित् नित् सत् शिक्षायें देकर, करते जाना जीवन का उभार॥
निर्लेप कमल सा यह सुकुमार॥

किसी नीतिकार ने ठीक ही कहा है—"जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विजउच्यते" अर्थात् जन्म से सभी बालक-बालिकायें शूद्र उत्पन्न होते हैं। अर्थात् अपठित, अशिक्षित, निरबोध, निरीह। अब ज्यों-ज्यों माता-पिता उनका संस्कार करते चले जाते हैं, वे द्विज अर्थात् अपने ज्ञान-बल तथा व्यापार-कृषि आदि की उन्नति करते हुए—ब्राह्मण क्षत्रिय. वैश्य बनते चले जाते हैं।

संस्कार क्या है? सम पूर्वक कृ धातु से संस्कार शब्द सिद्ध होता है। सम् का अर्थ है अच्छा, कृ का अर्थ है करना अर्थात् अच्छा करना, योग्य बनाना-उपयोगी बनाना संस्कार है। किसी वस्तु के दोष दूर कर के उसमें गुणों का प्रवेश करा देना संस्कार है। लोहा जब खान से निकलता है, उस में मिट्टी मिली होती है और कई प्रकार के दोष भरे रहते हैं, तब अग्नि में तपाकर उसका संस्कार किया जाता है, लोहा चमकने लगता है उसका मूल्य सौ गुणा बढ़ जाता है। इसी प्रकार संस्कार से सोना कुन्दन बन जाता है। भूमि उबड़-खाबड़ निकम्मी पड़ी थी किसान ने उसके झाड़-झंखाड़ दूर किये, हल चलाया साफ-किया, खाद डाला, जल दिया। यह भूमि का संस्कार हो गया। अब उस से मनमाना अन्न प्राप्त किया जा सकता है। गृह गन्दा पड़ा था उसे साफ किया गया, लीपा-पोता गया, सुन्दर चित्र लगा दिए। गृह का संस्कार हो गया। वस्त्र मैले पड़े थे उन्हें साबुन से अच्छी प्रकार धोया गया थोड़ा सा नील दे दिया गया चमक आ गई ऊपर से लोहा कर दिया गया। यह वस्त्रों का संस्कार हो गया. पहनने योग्य उपयोगी बन गये। इसी प्रकार उपयोगी बनाने के लिये प्रत्येक वस्तु के लिये संस्कार की आवश्यकता होती है।

आज मानव ने भौतिक निर्जीव पदार्थों के संस्कार तो प्रर्याप्त मात्रा में कर लिये और कर रहा हैं—सड़कों का नित नव निर्माण हो रहा है, घरों का नव निर्माण हो रहा है, वनों का संस्कार किया जा रहा है, परन्तु खेद है कि मानव जो इस सारी सम्पति का अधिकारी है उसका कोई संस्कार नहीं किया जाता। उसके संस्कार की ओर माता-पिता का कोई ध्यान नहीं। यही कारण है कि मानव ने पक्षियों की तरह आकाश में उड़ना सीख लिया, चन्द्रलोक की यात्रा भी करली, समुद्र भी छान डाले, पर्वतों से टक्कर ले ली, जंगलों को छान डाला परन्तु इस पृथ्वी पर कैसे रहा जाये मानव ने नहीं सीखा। जब तक मानव ने इस पृथ्वी पर ही मानवता के नाते श्रेष्ठ रीति से रहना नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीखा तब तक अन्यत्र उन्नति व्यर्थ है। वास्तव में यदि मानव मानव बन कर रहना सीख ले तो भूलोक ही स्वर्ग लोक बना सकता है। इसी को हम पद्य में अवलोकन करें—

"आदमी-आदमी के बन जाए। कष्ट सारे जहाँ का मिट जाए॥"

बालक पर तीन प्रकार के संस्कारों का प्रभाव पड़ता है—(१) पूर्व जन्म के संस्कार, (२) माता पिता से लिये गए संस्कार, (३) अपने समाज से प्राप्त संस्कार। कभी पूर्व जन्म के संस्कार प्रबल होते हैं और कभी निर्बल। जो संस्कार बलशाली होते हैं उन्हीं का विशेष प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है। हिरण्यकश्यपु के पुत्र प्रह्लाद के पूर्व जन्म के संस्कार अति प्रबल पिता की नास्तिकता का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा। मूलशङ्कर के पूर्वजन्म के प्रबल संस्कारों का ही प्रभाव था कि उन्होंने चौदह वर्ष की अल्पायु में बोध प्राप्त किया। पिता उनकी शङ्का दूर न कर सके। इक्कीस वर्ष की आयु में संसार के समस्त सुखोपभोगों को लात मार कर सच्चे शिव की खोज में घर बार त्याग कर निकल पड़े। दूसरी ओर गांधी जी के बड़े पुत्र हीरालाल पर माता पिता के आस्तिक संस्कारों का कोई प्रभाव न पड़ा। वह मुसलमान बन गया। वह अब्दुल्ला बना, मर्यादा से अधिक सुरापान करने वाला बना। अन्त में कुछ आर्य नेताओं की कृपा से एक प्रकार की चालाकी से वह पुनः आर्य बनाया गया। शिवा को एक छोटे सिपाही से महाराष्ट्र केसरी के ऊंचे पद पर पहुँचाने का श्रेय उसकी माता जीजाबाई द्वारा डाले गए शुभ संस्कारों का है। सच्चे अर्थों में मानव बनने के लिये शुभ संस्कारों की पदे-पदे आवश्यकता है। संस्कार ही संस्कृति और सभ्यता को जन्म देते हैं। "सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा।" वेद की संस्कृति आदि मुख्य संस्कृति है। वह सम्पूर्ण विश्व के लिये वरणीय है। उसी पर आचरण करने पर मानव-मानव बनता है। यहाँ हमें संस्कृति सभ्यता और कला का भेद समझ लेना चाहिये। संस्कृति आत्मा और अन्तः करण से सम्बन्ध रखने वाले सात्विक गुणों, कर्मों व स्वभावों का नाम है। सत्य-सदाचार, सरलता, समता, सौम्यता, सादगी, सहानुभूति, स्वाध्याय, सेवा, संध्या, सत्संग आदि वैदिक संस्कृति के अंग हैं। संस्कृति बदलती नहीं वह सभी देशों में सभी कालों में समान है। सत्याचरण आदिकाल से आज तक प्रशंसनीय रहा है और रहेगा। भूमण्डल के २७४ देशों के वासी सत्य की सदा प्रशंसा करते र गे। इसी प्रकार अन्य सांस्कृतिक गुण सार्वभौम हैं।

सभ्यता-वाह्य रहन-सहन, खान-पान वस्त्र, आभूषण, भवन-निर्माण सड़कों का निर्माण आदि है। प्राचीन काल से आज तक अनेक सभ्यतायें बदली हैं वस्त्रों के अनेकों ढंग बदले हैं, भवन निर्माण सम्बन्धी ढंग बदले हैं भोजन (खान-पान) के ढंग बदलते रहते हैं। भारत की सभ्यता और है, यूरोप की और जापान की ओर कुछ कुछ भेद हो ही जाता है। शीत प्रधान देशों व उष्ण देशों के पहरावे बदल जाते हैं। विवाह शादियों के रीति रिवाज बदलते रहते हैं। कला-संस्कृति और सभ्यता दोनों अनमूल्य बढ़ाने वाली है। प्रमुख रूप से कला के दो भेद हैं—(१) ललित कला (२) वास्तु कला। ललित कलाओं में – संगीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला, काव्य-कला, चित्र कला और शिल्प कला इत्यादि। कलाकार वस्तु का मूल्य बढ़ा देता है। कलापूर्ण व्याख्यान का प्रभाव गहरा होता है। काव्य-कला श्रेष्ठ कवियों की कृति की सहायक हो। हृदय पर गहरी छाप छोड़ती है। परन्तु वही कला-कला है जो सस्कृति जीवन स्तर को उन्नत करने में सहायक हैं। गन्दे-अश्लील चित्र, नग्न मूर्तियां, गन्दे उपन्यास या कहानियां, अश्ल ल कवितायें कला नहीं कलाभास हैं।

शुभ संस्कार संस्कृति और सभ्यया को जन्म देते हैं कुसंस्कार दूषित दुर्गुणों कर्मों व स्वभावों को जन्म देते हैं। मानव को पशु या दानव बना देते हैं। मानव को मानव बनाकर देवत्व की ओर बढ़ाने वाले हमारे वैदिक संस्कार ही तो हैं। ये संस्कार गर्भादान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह हैं। मनुमहाराज लिखते हैं "कर्मभिः पुण्यैः निषेकादिर्द्वि जन्मनाम। कार्यः शरीरः संस्कारः पावनः प्रेत्यचेह च॥" द्विजो के गर्भाधान आदि वैदिक संस्कार करने चाहिए। गर्भाधान, पुंस्वन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण निष्क्रमण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुण्डन, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्त्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि ये सोलह संस्कार हैं। विधिपूर्वक इनके अनुष्ठान से से शिशु पर पवित्र प्रभाव पड़ता है, वैसे संस्कार तो शनैः-शनैः डाले जाते हैं परन्तु जिस दिन से संस्कार डालने की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है उस वैदिक विधि को संस्कार करना कहते हैं, जैसे नामकरण पर शुभ नाम रखते समय यज्ञ कर के माता पिता अनेकों आर्य बन्धुओं के समक्ष मानों प्रण करते हैं कि हम इस बालक व बालिका को यथा नाम तथा काम व गुणबनायेंगे। शुभ संस्कार डालने का प्रतिदिन आचरण में लाया जाने वाला साधन शिक्षा है।

सत् शिक्षा से सुसंस्कार परिपक्व होते हैं। यजुर्वेद का षष्ठ अध्याय वैदिक शिक्षा शास्त्र है जिसमें गृहस्थ में प्रवेश करते ही पति-पत्नी अपने भावी बच्चों के लिये सुन्दर शिक्षा की योजना बनाते हैं—"जाया पत्ये मधुवतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।" अथर्व वेद की यह सूक्ति मानो श्रेष्ठ शिक्षा का मूल है गृह पत्नी मधुर और शान्ति दायिनि मधुरवाणी का प्रयोग करे। भावी माता का शिक्षण में प्रथम स्थान है। यदि वह मधुर, सत्य-हित शुद्ध भाषिणी होगी तो पति को वैसा ही होना पड़ेगा। फिर दोनों का गहरा प्रभाव सन्तानों पर पड़ेगा। वे भी मधुर सत्य बोलने वाली होंगी। यह पहली शिक्षा देती हुई भावी माता अपनी गर्भस्थ सन्तान से कह रही है—"वाचं ते शुन्धामि" मैं अपनी वाणी का परिष्कार्य शोधन करती हुई तेरी वाणी का परिष्कार्य करना चाहती हूँ। सन्तान को आज्ञाकारिणी, ऐश्वर्य सम्पन्न धीमति धार्मिक बनाने के लिये माता पिता को कठोर तप करना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved for Libraries by D. P. I'S. Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farme and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम

स्थान

पत्रालय

जिला

हर माह हजारों प्रतियां बिकने वाले 'समाज सन्देश' मासिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

✻ विज्ञापन की दरें ✻

टाइटल पेज एक चौथाई	...	50 रुपये
बैक पेज आधा	...	60 रुपये
अन्दर का एक पृष्ठ	...	40 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ	...	20 रुपये

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3-5-62

समाज सन्देश

(हिन्दी मासिक-पत्र)

सामाजिक व सांस्कृतिक लेखों का संगम

प्रकाशन तिथि : 25 मार्च, 1979

वर्ष 19 | अप्रेल, 1979 | अंक 12

इस अंक में—

सम्पादक-मण्डल :

व्यवस्थापक :
धर्मभानु जी

सम्पादक :
आचार्य हरिश्चन्द्र

सह सम्पादिका :
आचार्या सुभाषिणी

क्र०सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	सम्पादकीय—गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा	··· 1
2.	महाभारत	··· 3
3.	छोटू राम पार्क में—एक दिन	··· 11
4.	गुरुकुल भैंसवाल के 60वें वार्षिक उत्सव पर—स्वामी सुमेधानन्द का प्रवचन	··· 13
5.	वधाई सन्देश	··· 15
6.	अमरशहीद राव तुलाराम	— 16
7.	दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के आर्यसमाजी नेताओं से—	— 18
8.	पहेलियां	··· 22
9.	आर्य समाज के ये 'जीवित' नेता—मुझे गर्व है उन पर (एक व्यंग्य)	··· 23
10.	क्या आप जानते हैं ?	— 25
11.	भजन	··· 26
12.	नारी और धूम्रपान—कटु विडम्बना	··· 27

मूल्य : एक प्रति 90 पै० ● वार्षिक चन्दा 10 रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य युवक सम्मेलन की अपील

गुरुकुल विद्यापीठ भैंसवाल कलां के इस महोत्सव के अवसर पर होने वाला यह युवक सम्मेलन देश का ध्यान निम्न तथ्यों की ओर आकृष्ट करता है—जो चिन्ता-जनक हैं :—

1- आजके युवक अपने आदर्श, संस्कृति, सभ्यता और सदाचार से भटकते जा रहे हैं।

2- अपने वेश-भूषा, आचार-विचार के प्रति हीन भावना से प्रेरित होकर अंग्रेज के चले जाने पर भी योरोप की नकल में संलग्न हैं।

3- जगद् गुरु बनने के स्वप्न देखने वाला स्वतन्त्र भारत आज भी परमुखापेक्षी है। शिक्षा, कला, कौशल और स्वावलम्बन में पिछड़ा है।

अतः युवकों से अपेक्षा करता है कि वे जीवन का रुख एकदम पलटें। अधःपतन से ऊपर को उठें। सादा जीवन, उच्च विचार वाला भारत का आदर्श अपनावें। संसार को मार्ग दिखावें।

❀ ❀ ❀ ❀

शराब बन्दी सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव

विद्यापीठ गुरुकुल महाविद्यालय भैंसवाल कलां के 60वें महोत्सव पर दूर दूर से एकत्रित इस आर्य जनता की दृढ़ धारणा है कि देश और जाति के सर्वाङ्गीण अधःपतन में मुख्य कारण बढ़ता हुआ मद्यपान का व्यापक व्यसन ही है— अतः इसका विरोध सामाजिक, राजनैतिक तथा पंचायती तौर पर बलपूर्वक किया जाना चाहिए। सरकार और पंचायतों से साग्रह निवेदन है कि शीघ्रातिशीघ्र इस के विरोध में प्रस्ताव पारित करके दृढ़ता से लागू करवाने का पूर्ण प्रयत्न करें।

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

—सम्पादक

❀

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

देवराज विद्यालंकार

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *

अमर शहीद महात्मा भक्त फूल सिंह जी

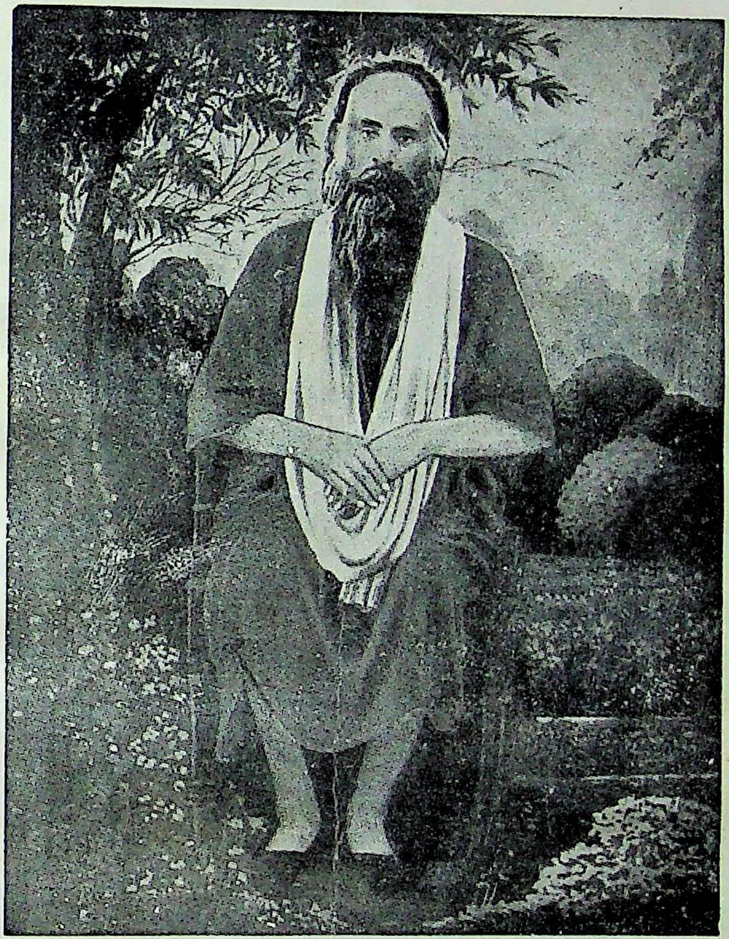

संस्थापक :—

गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

जि० सोनीपत (हरियाणा)

जन्म : 24–2–1885 बलिदान : 14–8–1942

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय—

गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा

आर्य समाज को स्थापित हुए एक सौ चार वर्ष हो गए हैं। इस थोड़े से समय में आर्यसमाज ने भारत वर्ष को ही नहीं, अपितु संसार को बहुत कुछ दिया है। महर्षि दयानन्द जो आर्य समाज के संस्थापक थे अपने आप में त्याग, तप, ब्रह्मचर्य, सत्यज्ञान और कर्त्तव्यपालन की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जिस पौधे को आरोपित किया था वह शीघ्र ही फला एवं फूला। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और साहित्यिक क्षेत्रों में आर्यसमाज की देन को अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह आर्यसमाज रूपी वाटिका शीघ्र ही उजड़ जायेगी इसकी कल्पना महर्षि ने कभी नहीं कि होगी ? यहां के स्वार्थी साधु-सन्यासियों व आर्य समाज के नेताओं ने ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, ला० लाजपत राय, भक्त फूल सिंह आदि महापुरुषों की कुर्बानियों को भुला दिया।

गुरुकुल कांगड़ी आर्य समाल की सब से प्राचीन एवं संसार प्रसिद्ध संस्था है जिसे स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने खून-पसीने से सींचा था। लेकिन पंजाब प्रतिनिधि सभा के माध्यम से वहां के धन-माल को हड़पने के लिए निरन्तर लूटेरे संस्था में घुसते चले गए तथा स्वार्थ साध कर आगे बढ़ गए।

महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द दोनों ने ही गांव शहरों से दूर, बनों, पहाड़ों व नदियों के किनारे आश्रमों में 25 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्याध्ययन के लिए गुरुकुलों के स्वप्न ही नहीं संजोये थे, अपितु उन्हें क्रियान्वित किया था। लेकिन क्या महर्षि दयानन्द ने इसलिए आर्य समाज की स्थापना की थी कि उनकी संस्था को लोग लूट खायें ? क्या स्वामी श्रद्धानन्द जो ने अपना खून इसलिए बहाया था कि उनकी वाटिका को बर्बाद किया जाए ? आज गुरुगुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के परिसर में एक साथ लड़के तथा लड़कियां अनेकों प्रकार की भड़कीली पोशाकें पहनें भंवरों व तितलियों की भान्ति मण्डराते फिर रहे हैं। इकट्ठे पढ़ते हैं, इकट्ठे चाय पीते हैं, इकट्ठे खेलते हैं, इकट्ठे गप्पें लड़ाते हैं। इससे बढ़ कर निकृष्ट और घटिया बात आर्यसमाज के लिए और क्या हो सकती है ? क्या स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मा ऐसा कुकृत्य देख कर आज रो नहीं रही होगी ? जिन मूक सेवकों ने इस संस्था के लिए अपने सारे सुखों को लात मार अपना जीवन लगाया और विश्व के अन्दर इसे भारतीय प्राचीन और एवं अर्वाचीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति एवं शिक्षा के केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित किया, क्या इसलिए कि इस संस्था में पैसे कमाने के लिए सहशिक्षा प्रचलित कर दी जाए ? इतना होते हुए भी बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आर्य समाल के ठेकेदार और कुलभूमि के स्नातक चुप्पी साधे बैठकर तमाशा देख रहे हैं। गुरुकुल कांगड़ी की व्यवस्था सुधारने के लिए पिछले वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शाल वाले तथा बहन पुष्पा देवी ने आमरण अनशन किया था। प्रधान मन्त्री के आश्वासन पर उन्होंने अनशन समाप्त किया था। लेकिन अभी तक हमारो सरकार ने कोई भी सन्तोष-जनक हल नहीं निकाला है। प्रशासक तो बैठा दिया गया है लेकिन अभी तक बाह्य तथा आन्तरिक व्यवस्था का सुप्रबन्ध नहीं हो पाया है। श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल ने गुरुकुल कांगड़ी की बिगड़ती हालत और सहशिक्षा आदि के विरुद्ध आवाज उठाकर श्लाघनीय कार्य किया है। इस संस्था की मन, वचन व कर्म से आचार्य प्रियव्रत तथा धर्मपाल विद्यालंकार ने जो सेवा की है वह गुरुकुल कांगड़ी तथा आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

मैं आर्य नेताओं तथा साधु-सन्यासियों से अपील करता हूँ कि वे दलगत राजनीति तथा स्वार्थपूर्ति के लिए श्रद्धानन्द की कुर्बानी को बलि का बकरा न बनायें। भारत सरकार से भी प्रार्थना है कि गुरुकुल कांगड़ी को सुचारु रूप से संचालित करने में सहयोग करें। यहां से तत्काल सहशिक्षा बन्द करके भारतीय संस्कृति के एकमात्र केन्द्र की रक्षा करें।

अन्त में गुरुकुल कांगड़ी के सभी स्नातकों से भी मेरा अनुरोध है कि गुरुकुल प्रांगण में बुरे तत्वों को नहीं घुसने दें तथा सरकार पर भी इसकी रक्षा के लिए दबाव डालें। स्नातक बन्धुओं के लिए यह कुलभूमि जननी से भी बढ़ कर है। सभी स्नातक एकत्रित होकर इसकी बाह्य एवं आन्तरिक व्यवस्था पर विचार करें और यहां से सह-शिक्षा को तुरन्त बन्द करवायें। यदि स्नातक इस ऋषि भूमि को नहीं सम्भालेंगे तो वह दिन दूर नहीं जबकि इस संस्था में लगे ईंट व पत्थरों को भी लोग उखाड़ कर अपने घर ले जायेंगे। बाहर के लोगों से सुधार की आशा करना बेतुकी और निराधार बात है। स्नातकों से ही इस कुलभूमि की रक्षा सम्भव है।

—देव राज विद्यालंकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

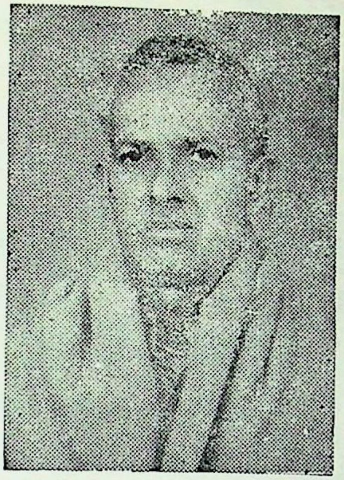

* महाभारत *

लेखक :
आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

वक्तव्य

महाभारत को पञ्चम वेद कहा गया है। इसका कारण है कि समय-समय पर विद्वानों ने अपने विचार, आचार, व्यवहार को इस ग्रन्थ के द्वारा प्रकट किया है। अब तक हिन्दी भाषा में जो महाभारत लिखे, दृष्टि में आये हैं, उनमें कुछ अपूर्णता सी प्रतीत हुई। बहुत सी उत्तम घटनाओं का उनमें परित्याग कर दिया है, जिससे संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुषों को महाभारत के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

व्यास मुनि रचित महाभारत में भी कुछ बातें, कुछ घटनायें अतिरञ्जित की हुई मिलती हैं। जिनके पढ़ने में भावनोन्मुख तो हुआ जा सकता है परन्तु हम वास्तविकता से सर्वथा दूर हो जाते हैं। कुछ कथानक अव्यवहारिक से हैं, जिन में अतिशयोक्ति तथा अव्यवहारिकता प्रकट होती है। कुछ इतिहास जैसे—कर्ण, द्रोण, कृप, धृतराष्ट्र, पाण्डु पुत्रों की उत्पत्ति के तरीके भी समझ में आने कठिन हो जाते हैं, उनको व्यवहारिक बनाकर लिखने का प्रयत्न किया गया है परन्तु यह विचार रखा गया है कि ग्रन्थकार की इच्छा से विपरीत न लिखा जावे। कुछ वर्णन इस प्रकार के हैं, जिनके पढ़ने से यह प्रतीत होता है कि इतिहास में इनको व्यर्थ ही अपने पाण्डित्य के प्रदर्शन के लिए जोड़ा गया है। ऐसे प्रकरणों को सर्वथा छोड़ दिया गया है। जो उत्तम राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, कौटुम्बिक उपदेश महाभारत में लिखे हैं उनका सारभूत अंश इस ग्रन्थ में अवश्य लिखा गया है।

वैसे भूमिका पूरे ग्रन्थ की समय पर लिखूंगा। अब तो केवल इसे भूमिका का प्रारम्भ मात्र मानिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि पर्व

वंश परम्परा

दक्ष के पुत्र अदिति, अदिति से विवस्वान्, विवस्वान् से मनु, मनु से इला, इला से पुरूखा, पुरूखा से आयु, आयु से नहुष, नहुष से ययाति का जन्म हुआ। ययाति की देवयानी और शर्मिष्ठा दो पत्नियां हुईं। देवयानी के गर्भ से यदु और तुर्वसु ये दो पुत्र उत्पन्न हुए। शर्मिष्ठा ने द्रह्यु, अनु, पुरु इन तीन पुत्रों को पैदा किया। यदु की सन्तान यादव और पूरु की सन्तान पौरव कहलाई। श्रीकृष्ण यदु के वंशज थे और दुष्यन्त पुरु के वंशज थे।

पूरु का पुत्र जनमेजय हुआ, जिसने तीन अश्वमेघ यज्ञ किये। विश्वजित् यज्ञ करके राजा जनमेजय वानप्रस्थाश्रम सेवी बना। जनमेजय का पुत्र प्राचिन्वान् हुआ, उसने यदु कुल की अयूमकी नामक कन्या से विवाह कर संयाति नामक पुत्र उत्पन्न किया। संयाति का पुत्र अहंयाति, अहंयाति का सार्वभौम, सार्वभौम का जयत्सेन, जयत्सेन का अवाचीन, अवाचीन का अरिह, अरिह का महाभौम, महाभौम से अयुतनामी पुत्र हुआ।

अयुतनामी ने अनेक यज्ञ किये। अयुतनामी से अक्रोधन, अक्रोधन से देवातिथि, देवातिथि से अरिह, अरिह से ऋक्ष, ऋक्ष से मतिनार पुत्र उत्पन्न हुआ। मतिनार ने द्वादश वार्षिक यज्ञ का अनुष्ठान किया। मतिनार का तंसु, तंसु का ईलिन, ईलिन के दुष्यन्त आदि पांच पुत्र हुए।

दुष्यन्त ने विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला से विवाह किया। शकुन्तला से भरत का जन्म हुआ। भरत का भुमन्यु, भुमन्यु का सुहोत्र, सुहोत्र का हस्ती हुआ, जिसने हस्तिनापुर की स्थापना की। हस्ती का विगुण्ठन, विगुण्ठन का अजमढि नामक पुत्र हुआ। अजमढि की कैकेयी, गान्धरी, विशाला, ऋक्षा इन रानियों से अनेक पुत्र हुए। ये सब पृथक्-पृथक् वंश प्रवर्तक राजा हुए। अजमीढ़ के प्रतापी पुत्रों में राजा संवरण कुरु वंश के प्रवर्तक हुए।

संवरण का कुरु, कुरु का विदूर, विदुर का अनश्वा, अनश्वा का परिक्षित, परिक्षित का भीमसेन, भीमसेन का प्रतिश्रवा, प्रतिश्रवा का प्रतीप पुत्र हुआ। उसने शिवि देश की राजकन्या सुनन्दा से विवाह किया। उसके गर्भ से देवापि, शान्तनु, वाल्हीक नाम के तीन पुत्र हुए। देवापि बाल्यावस्था में ही विरक्त होकर वन को चले गये। शान्तनु राजा हुए।

प्रतीप ने अपने पुत्र शान्तनु को सब प्रकार की शिक्षा दिलवाई। उसको वेदों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शिक्षा और धनुर्वेद की शिक्षा दिलाई गई। अपने पिता द्वारा अभिषिक्त शान्तनु राज्य कार्य उत्तम प्रकार से करने लगे। बलवान् शान्तनु मृगयाशील होके वन में हिंसक-प्राणियों को मारने के लिए जाया करते थे।

एक दिन शान्तनु ने परम सुन्दरी गङ्गा नामक नारी के दर्शन किये। वे उसके परम सुन्दर रूप को देख कर उस पर मोहित हो गये। वह भी शान्तनु के परम सुन्दर शरीर को देखकर उन पर मुग्ध हो गई। राजा ने उस स्त्री से कहा—हे देवी! मेरी प्रार्थना है कि तुम मेरी पत्नी बनकर मुझे प्रसन्न करो।

अपने रूप पर मोहित हुए राजा को देख कर वह राजा को बोली—राजन्! मैं एक शर्त पर आपकी पत्नी बनने के लिए उद्यत हूँ, वह यह है कि जो मैं करूं उस काम से आप मुझे न हटावें। यदि आप मेरी इस बात को स्वीकार करें तो मैं आपकी पत्नी बनने के लिए उद्यत हूँ। इसके साथ-साथ आप यह भी प्रतिज्ञा करें, यदि आपने इस प्रतिज्ञा का भंग किया तो आप मुझे रोक न सकेंगे।

गङ्गा के रूप पर मोहित हुए राजा ने उस देवी की सारी बातें स्वीकार कर लीं। तब वह प्रसन्न होके रथ पर सवार हो गई। राजा भी उसे अपने रथ में सवार करके प्रसन्न होकर नगर में आये। गङ्गा के शील स्वभाव, सदाचार, रूप और एकान्त सेवन से राजा उस पर बहुत प्रसन्न था।

समय आने पर क्रमशः उस देवी ने आठ पुत्र उत्पन्न किए। वह उत्पन्न होते ही प्रत्येक पुत्र को गङ्गा नदी के जल में डाल देती थी। पत्नी का यह क्रूर स्वभाव राजा को अच्छा नहीं लगा। कहीं यह देवी मुझको छोड़ कर अन्यत्र न चली जावे इस भय से राजा उसको रोक नहीं रहा था। अन्त में जब वह अपने अन्तिम पुत्र को गङ्गा नदी में डालने चली तो वह स्वयं को न रोक सका। वह बोला—हे पुत्र घातिनी! तू कौन है? तू इस पुत्र हत्या के निन्दित कर्म को करती हुई क्यों नहीं लज्जित होती है। तू बहुत पापिन है।

राजा की क्रोध भरी बातों को सुन कर वह बोली—हे राजन्! अब मैं इस बालक को नहीं मारूंगी और अपनी प्रतिज्ञानुसार आपके घर में भी नहीं रहूँगी। मेरा यह पुत्र देवव्रत या गङ्गादत्त के नाम से प्रसिद्ध होगा। यह बालक अभीं शिशु हैं। अतः इसके पालन-पोषण के लिए इसे मैं अपने साथ ले जाऊंगी। जब यह शिशु बड़ा तथा योग्य हो जावेगा तब इसे मैं आपके पास भेज दूँगी। आपकी मुझ से जब मिलने की इच्छा होगी उस समय मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगी। ऐसा कह वह देवी उस शिशु को अपने साथ लेके अन्तर्धान हो गई। फिर वह अपने अभिलषित स्थान पर चली गई। उस बालक का नाम आगे चल कर गाङ्गेय भी हुआ। राजा शान्तनु भी पत्नी और पुत्र के वियोग से सन्तप्त होकर अपने नगर हस्तिनापुर में आ गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्तनु को सुशिक्षित पुत्र की प्राप्ति और देवव्रत की भीष्म प्रतिज्ञा

शान्तनु महाराज को सब राजाओं ने उनके गुणों से प्रभावित होकर 'सम्राट' की उपाधि प्रदान की थी। वे प्रजा का पालन-लालन अति प्रेम से करते थे। गङ्गा के वहां से चले जाने पर राजा ने ब्रह्मचर्य व्रत का कठोरता से पालन किया।

एक बार शान्तनु हिंसक पशु को बाण से विद्ध कर उसका पीछा करने गङ्गा तट पर आये। शान्तनु ने देखा कि गङ्गा का जल थोड़ा-थोड़ा बह रहा है। राजा ने इसका कारण जानना चाहा। कारण को जानने की इच्छा से आगे बढ़े हुए राजा ने एक आश्चर्य जनक दृश्य देखा कि एक विशाल काय कुमार दिव्यास्त्रों का अभ्यास कर रहा है। उसके बाणसमूह से जल की धारा रुकी हुई है। उस बालक के अलौकिक कर्म को देख कर वह आश्चर्य चकित हो गया। बाल्यकाल में ही देखे गये अपने पुत्र को शान्तनु नहीं पहचान सके।

उस बालक ने अपने पिता को अपनी माया से मोहित किया। वह एक दम अन्तर्धान हो गया। जब राजा इस प्रकार आश्चर्य-चकित था, उसी समय गङ्गा देवी अपने पुत्र का हाथ पकड़ कर राजा के सम्मुख आई।

उसने राजा को नमस्कार कर कहा—हे राजन! यह आपका वही पुत्र है जो मेरे उदर से उत्पन्न हुआ है। अब यह अस्त्र-शस्त्र वेत्ताओं में अग्रणी माना जाता है। अब आप इसे स्वीकार करें। अब इसे आप अपनी राजधानी में ले जावें। इसने महर्षि वसिष्ठ से छः अंगों समेत समस्त वेदों का अध्ययन किया है। यह अस्त्र विद्या में पारगत और महा धनुर्धर है। शुक्राचार्य की नीति विद्या का भी इसे पूर्ण ज्ञान है। परशुराम से भी विद्या प्राप्त की है। राजधर्म का यह महान ज्ञाता है। यह आपका बहुत योग्य पुत्र है, इसे आप अपने घर में ले जावें। ऐसा कहके गङ्गा देवी तत्काल अन्तर्धान हो गई।

राजा शान्तनु उस योग्य पुत्र को प्राप्त कर अति प्रसन्न हुए। वे उसे लेकर अपनी राजधानी में आये। कुछ काल के पश्चात् ही राजा ने उसके अलौकिक गुणों से प्रभावित होकर उसे 'युवराज' पद पर अभिषिक्त किया। उसके उत्तम आचरण से सारी प्रजा उससे प्रेम करती थी। इस प्रकार पुत्र के साथ रहते हुए राजा के चार वर्ष बड़ी प्रसन्नता से व्यतीत हो गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन राजा यमुना निकटवर्ती वन में गये। वहां पर उनको अलौकिक गन्ध आई। जब वे 'यह गन्ध कहां से आ रही है' यह जिज्ञासा कर रहे थे, तभी उन्हें मल्लाह की एक सुन्दरी कन्या के दर्शन हुए। राजा उसके रूप पर मोहित हो गए। राजा ने उस कन्या के समीप जाके उससे उसका सारा पता लगाया। उस कन्या से पुरी जानकारी लेके राजा कन्या के पिता दाशराज के समीप गए। उसने अपनी इच्छा भी उसके पिता के सम्मुख रखी कि वह उसकी कन्या से विवाह करना चाहता है।

राजा की बात सुन कर दाशराज बोला—हे राजन ! मेरी इच्छा इस कन्या को श्रेष्ठ वर के साथ विवाहने की है। आप भी पहले मेरे मन की बात को ध्यान से सुन लें, तदनन्तर इस कन्या से विवाह करने की सोचें। वह यह है—

हे राजन् ! मैं अपनी कन्या को आपको प्रदान करने के लिए उद्यत हूँ परन्तु मैं जो कुछ कहूँ उसे आप ध्यान से सुनें आप पहले यह प्रतिज्ञा कीजिये कि कन्या के उदर से जो पुत्र उत्पन्न होगा, उसे ही आप राजगद्दी का उत्तराधिकारी बनावेंगे।

यद्यपि राजा काम ज्वर से पीड़ित था तो भी वह दाशराज को यह वचन देने में असमर्थ था, क्योंकि वे देवव्रत को ही राज्य का उत्तम अधिकारी मानते थे। वहां से कुछ भी उत्तर न देकर उस कन्या के सौन्दर्य को स्मरण करते हुए हस्तिनापुर में आ गये।

एक दिन देवव्रत अपने पिता से मिलने गये। उसने अपने पिता को अत्यन्त चिन्तित देखा। वे उनसे बोले—पिता जी ! आपका तो सब ओर से मंगल कुशल है, भूमण्डल के राजा महाराजा आपके आदेश को स्वीकार करते हैं, इतना होने पर भी मैं आप को शोकमग्न देख रहा हूँ। आजकल आप पहले की तरह घोड़े पर सवार होकर बाहर भी घूमने नहीं जाते हैं। आपका यह सुन्दर शरीर दिनों दिन निर्बल होता जा रहा है। इसका कारण मेरी समझ में नहीं आता है।

अपने पुत्र की बात सुन कर राजा ने पुत्र से कहा—हे पुत्र ! सुनो, तुम मेरे एक ही पुत्र हो, अस्त्र-शस्त्र विद्या से बहुत प्रेम करते हो। मैं तुम्हारे स्वाभाविक युद्ध के स्वभाव को देख कर चिन्तित सा हो जाता हूँ और सोचता हूँ कि यदि कभी तुम पर कोई विपत्ति आ गई तो वंश परम्परा समाप्त हो जावेगी। मुझे यह भी विश्वास है कि तुम सौ पुत्रों के समान अकेले हो। बहुत सोचने पर भी मेरी चिन्ता मुझ से दूर नहीं होती है।

मैं अब विवाहित भी नहीं होना चाहता हूँ फिर भी यह सोच कर कि वंश परम्परा का लोप न हो अतः मुझे पत्नी की कामना हुई है। पुत्र ! तुम्हारा कल्याण हो। एक पुत्र का होना पुत्र न होने के समान माना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवव्रत ने पिता की बातें सुन कर उन पर विचार किया। अपने विचार की दृढ़ता के लिए वह पिता के साथ भ्रमण के लिए जाने वाले मन्त्री के समीप गये और उनसे पिता की चिन्ता का कारण जानना चाहा। राज पुत्र की बात को सुन कर मन्त्री बोले—हे राजकुमार! तुम्हारे पिता विवाह कराना चाहते हैं परन्तु उस कार्य में कुछ रुकावट हो गई है। अतः वे चिन्तित रहते हैं।

वास्तविकता का पता लगाने के लिए वे अपने पिता के सारथी के समीप भी गये और उससे भी पिता की चिन्ता का कारण जानना चाहा। सारथी ने राजकुमार को कहा—युवराज! तुम्हारे पिता जी का अनुराग एक धीवर कन्या से हो गया है परन्तु उस धीवर ने तुम्हारे पिता के सामने विवाह के लिए एक शर्त्त रखी है और वह यह है कि—'जो मेरी पुत्री के गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो वही तुम्हारे पिता की राजगद्दी का अधिकारी हो'। आपके पिता धीवर को ऐसा कोई वर नहीं देना चाहते हैं। वह निषाद राज भी इसी शर्त्त पर विवाह करने के लिए स्थिर है। यही चिन्ता का कारण आपके पिता जी का है। इस विषय में आप जो उचित समझें, वही करें।

वास्तविकता से अवगत होकर युवराज देवव्रत वृद्ध क्षत्रियों के साथ निषादराज के समीप गये। निषादराज ने देवव्रत को अपने घर में आया देख उसका यथा विधि सत्कार किया। फिर निषाद ने कहा—मैं यह मानता हूँ कि आप इस विशाल राज्य को पूर्णतः संभालने में समर्थ हैं फिर भी मैं अपने मन की बात अवश्य ही आपके सामने रखूंगा। मैं यह भी मानता हूँ कि कन्या के लिए ऐसा वर मिलना कठिन है। मैं आपको यह भी सूचित कर दूं कि मेरी यह कन्या आर्य पुरुष की सन्तान है, जो गुणों में आर्य कन्याओं के समान है। आर्य के वीर्य से ही मेरी पुत्री का जन्म हुआ है। इसका नाम सत्यवती है। महाराज शान्तनु मुझ से अपने लिए इसे मांगने आये थे, उनसे भी मैंने यही बात कही थी, कि मैं आपके साथ इसका विवाह करने को उद्यत हूँ परन्तु इसके गर्भ से जो सन्तान हो वही राज्य की अधिकारी होनी चाहिए।

आपके घर में मेरी कन्या के जाने पर मुझे एक दोष और प्रतीत होता है, 'वह है बलवान् से शत्रुता'। मैं यह मानता हूँ आप बहुत ही बलवान् हैं। आपका शत्रु चाहे देव हो चाहे दानव हो, वह आपसे विरोध करके चिर काल तक जीवित नहीं रह सकता है इस विवाह में इसी प्रकार का दोष भी मुझे दिखलाई देता है। इस बात को आप भली प्रकार सोच लें।

दाशराज की बातों को सुन कर देवव्रत बोले—दाशराज! सुनो, इस कन्या के उदर से जो बालक होगा वही इस विशाल राज्य का अधिकारी होगा। यह सुन दाशराज बोले—राजकुमार! मैं यह मानता हूँ कि आप महाराज शान्तनु की ओर से उत्तरदायी बन कर आये हैं, अब आपका मेरी कन्या पर पूरा अधिकार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ, वह यह है, मैं यह तो मानता हूँ कि आप तो अपने वचन पर दृढ़ रहेंगे, परन्तु हो सकता है आप का पुत्र इस बात पर दृढ़ न रहे, अतः इस विषय में भी मेरी सन्देह निवृत्ति करें।

दाशराज के सन्देह को दूर करने के लिए देवव्रत बोले—हे दाशराज ! मेरी सत्य प्रतिज्ञा को सुन, जिसे मैं अपने पिता के सुख के लिये करता हूँ। राज्य तो मैंने पहले ही छोड़ दिया है। अब मैं सन्तान छोड़ने की प्रतिज्ञा करता हूँ। आज से लेके मेरा अखण्ड ब्रह्मचर्य चलेगा। मेरे पुत्र न होने पर भी स्वर्ग में मुझे अक्षय लोक प्राप्त होंगे। मैं आज सबके सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैंने आज से ही राज्य तथा मैथुन दोनों सदा के लिये त्याग दिये हैं। मैं ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी बन के संसार में रहूंगा।

जब युवराज देवव्रत ने यह प्रतिज्ञा की तो दाशराज के रोंगटे खड़े हो गये। उसने कहा—राजकुमार ! मैं इस कन्या को आपके पिता के लिए प्रदान करता हूँ। देवव्रत के मुख से इस प्रतिज्ञा को सुन कर सबने उसे भीष्म नाम से पुकारा। उसी दिन से उसकी भीष्म नाम से प्रसिद्धि हुई।

दाशराज की आज्ञा को प्राप्त कर भीष्म सत्यवती के समीप जाके उससे इस प्रकार बोले—माता जी ! आप रथ पर सवार होइये और हमारे घर की ओर चलिए। सत्यवती भी अपने पिता की अनुमति से रथ पर बैठी और वह भीष्म आदि के साथ हस्तिनापुर की ओर चली। यह सारे समाचार राजा शान्तनु के समीप पहुंचे। वे पुत्र के इस अनुपम त्याग से बड़े प्रभावित तथा प्रसन्न हुए। पुत्र के मिलने पर राजा ने उसे स्वच्छन्द मृत्यु का वरदान या आशीर्वाद दिया।

* *

सत्यवती के गर्भ से चित्राङ्गद और विचित्र वीर्य की उत्पत्ति, शान्तनु तथा चित्रांगद की मृत्यु— विचित्र वीर्य की राज्य प्राप्ति।

सत्यवती चेदिराज वसु की कन्या थी, निशादराज तो केवल उसे पालने वाले पिता थे। इस बात का पता महाराज शान्तनु को था, अतः उन्होंने उससे शास्त्रीय विधि के अनुसार विवाह किया। कुछ समय के पश्चात् सत्यवती के गर्भ से चित्राङ्गद नामक पुत्र हुआ। समय बीतने पर सत्यवती ने दूसरे पुत्र विचित्र वीर्य को भी जन्म दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचित्र वीर्य अभी बालक ही थे कि अचानक महाराज शान्तनु की मृत्यु हो गई। माता सत्यवती की अनुमति से भीष्म ने चित्राङ्गद को राजगद्दी पर बिठलाया। वह बड़ा वीर था, वह अपने समान किसी को भी योद्धा नहीं मानता था।

एक बार उसके पास चित्राङ्गद नाम वाला एक गन्धर्व आया और उससे बोला—हे राजन्! तेरा और मेरा एक ही नाम है। मैं तुम से युद्ध करना चाहता हूँ। मेरा ऐसा विश्वास है मेरे नाम वाला व्यक्ति मुझ से युद्ध करके जीवित नहीं रह सकता है। चित्राङ्गद भी वीर था, वह भी उससे युद्ध के लिए तैयार हो गया।

निश्चित समय पर उन दोनों का युद्ध सरस्वती नदी के तट पर समय-समय पर तीन वर्ष तक चलता रहा। अन्त में मायावी चित्राङ्गद ने राजा चित्राङ्गद का वध किया। गन्धर्व उसको मार कर अपने प्रदेश में चला गया।

चित्राङ्गद की मृत्यु से सत्यवती और भीष्म को बहुत दु:ख हुआ। राजगद्दी को रिक्त देख कर छोटे राजकुमार विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठलाया गया।

भीष्म की देखरेख में राजा विचित्रवीर्य कुरु जांगल देश के राजा बने। विचित्रवीर्य अपने बड़े भाई भीष्म का पितृ तुल्य आदर करते थे। भीष्म भी उस अल्प वयस्क नरेश की पूरी तरह सहायता करते थे।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटू राम पार्क में
——एक दिन

—देवराज विद्यालंकार

★

पिछले वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी चौ० छोटू राम जी की 79वीं जन्म तिथि बसन्त पञ्चमी (1-2-79) को छोटू राम पार्क रोहतक में बड़ी धूम-धाम से मनाई गई। जब मैं सवा ग्यारह बजे छोटू राम पार्क में पहुँचा तो० रणजीत सिंह जी सम्मेलन में उद्घोषक का कार्य संचालन कर रहे थे। डा० मंगल सैन उद्योग मन्त्री हरियाणा ने अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि वे कट्टर आर्यसमाजी थे, त्यागी थे और शोषण से संघर्ष करने वाले थे। वे जीवित होते तो देश का विभाजन नहीं होता। तत्पश्चात् श्री सुखदेव जी शास्त्री ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से बोलते हुए—"स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्" की व्याख्या करते हुए चौ० छोटू राम की देन पर प्रकाश डाला। उसके बाद श्रीमती कृष्णा देवी सोनीपत, श्री अमीर सिंह जी हांसी, कैप्टन दलीप सिंह, श्री हरिचन्द हुड्डा एम० एल० ए०, श्रीमती शान्ति राठी एम०एल०ए०, जगजीतसिंह पोहलू एम० एल० ए०, चौ० चन्द्रभान छिकारा, श्री भलेराम जी एम०एल०ए० बरौदा आदि ने चौ० छोटू राम के जीवन से शिक्षा लेने की अपील की। सत्यपाल जी मलिक यू०पी० ने देश की अर्थव्यवस्था की आलोचना करते हुए चौ० छोटू राम केस पनों के समाजवाद को देश में लाने के लिए देश के राजनैतिक ढ़ांचे को बदलने की अपील की।

चौ० छोटू राम के नजदीकी मित्र चौ० सूरजमल जी भूतपूर्व लोक निर्माण मन्त्री पंजाब ने 80% अंक प्राप्त करने वाले सम्बन्धित संस्थाओं के विद्यार्थियों को पारितोषिक बांटा और चौ० छोटूराम की दूरदर्शिता के अनेकों उदाहरणों से लोगों का मन मोह लिया। उसके बाद श्री सन्तकुमार एम० एल० ए०, श्री फूल चन्द जी भूत पूर्व विधायक; श्री उदय सिंह दलाल विधायक, श्री प्रीत सिंह राठी मन्त्री हरियाणा सरकार, श्री सत्यवीर जी मलिक, अध्यक्ष योजना बोर्ड हरियाणा, श्री हरस्वरूप जी बूरा विधायक, ओजस्वी वक्ता श्री ओमपाल जी, श्री मेहर सिंह जी राठी मन्त्री हरियाणा सरकार आदि सभी ने किसानों से संगठित होने की अपील की। मूलचन्द जी जैन मन्त्री हरियाणा सरकार ने कहा कि वे भारत के महान सपूत थे तथा वे कट्टर आर्य समाजी थे। आर्य समाज के माध्यम से उन्होंने देश को नवजागृति प्रदान की। गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि के निवारण के लिए उन्होंने जी तोड़ कोशिश की।

तत्पश्चात् सम्मेलन के हीरो श्री राजनारायण जी संसद सदस्य जो सिर पर पीली पगड़ी, हाथ में छड़ी, चश्मा, धोती, कुर्ता, मोटी जुराब तथा सादे जूते पहने हुए थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि— "मैं मन्त्रीमण्डल के बन्धनों से नहीं बन्धा रह सकता था। मैं हमेशा किसानों के हितों की लड़ाई लड़ता रहूँगा। सुलझती हुई गुत्थी को उलझाना ही मेरा काम है। जो हमारी तरफ आंखें लाल करेगा उसकी आंखें फोड़ दी जायेंगी। किसानों की पार्टी में दम है बाकी पार्टियां निपुंसक हैं। किसानों के हितों के लिए मैं पूंजीवादी नीतियों के विरुद्ध सरकार का छक्का छुड़ा दूंगा। जनता पार्टी से जब तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कीड़े को नहीं निकाला जायेगा तब तक देश का भला नहीं होगा।" उन्होंने अखिल भारतीत ग्रामीण युवा सम्मेलन के आयोजन की अपील की।

तत्पश्चात् श्रीमती चन्द्रावती एम० पी० ने बाहर से आये हुए अतिथियों का स्वागत किया। श्री राम किंकर जी मन्त्री भारत सरकार ने भी लोगों को नैतिक उत्थान की प्रेरणा दी। श्री ओम् प्रकाश जी विधायक ने भी अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा गीता के प्रसिद्ध श्लोक—"यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् स्रजाम्यहम ॥" की व्याख्या करके चौ० छोटूराम को श्रद्धांजलि अर्पित की।

"श्री रविराय जी स्वास्थ्य मन्त्री भारत सरकार"—किसान की भारत को देन तथा गांधी जी से सर छोटू राम जी की तुलना करते हुए कहा कि वे हरियाणा के नहीं अपितु सारे हिन्दुस्तान के नेता थे। वे क्रान्तिकारी नेता थे। साम्प्रदायिकता को उन्होंने समाप्त करने का पुरजोर यत्न किया, राष्ट्रीय एकता के लिए उन्होंने किसान सम्मेलन की आवश्यकता पर बल दिया। श्री धर्मवीर जी वशिष्ठ एम० पी० ने अपनी भावभीनि श्रद्धांजलि एक ओजस्वी कविता के माध्यम से देते हुए कहा कि—एक भारतीत पत्रकार से चीन के प्रमुख राष्ट्रीय नेता भी चौ० चरण सिंह की विचारधारा सुनने के लिए उत्सुक देखे गए हैं।

श्री मनीराम बागड़ी संसद सदस्य ने मुख्य मन्त्री चौ० देवी लाल को बसन्तपञ्चमी के पुण्य दिन पर सार्वजनिक अवकाश की घोषणा के लिए बधाई देते हुए अपने ओजस्वी भाषण द्वारा चौ० छोटू राम को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की और अन्त में सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती गायत्री देवी संसद-सदस्या (धर्मपत्नी चौ० चरणसिंह) ने बहुत नपे-तुले शब्दों में चौ० छोटूराम को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए उत्सव की परिसमाप्ति की।

इस सम्मेलन में अनेकों विधायकों को समयाभाव तथा बाहर से आये अतिथियों को प्राथमिकता देने के कारण बोलने का अवसर नहीं मिल सका। अतः वे अपनी मूक श्रद्धञ्जलि अर्पित करके लोटते देखे गये। जिसमें से हमारी संस्थाओं के प्रधान तथा हरियाणा के भू० पू० शिक्षा मन्त्री चौ० माड़ूसिंह जी तथा श्री गंगाराम जी विधायक गोहाना हल्का आदि प्रमुख थे। सभी धर्मों तथा जातियों तथा पार्टियों के नेताओं द्वारा श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई जो इस सम्मेलन की एक विशेषता थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल भैंसवाल के ६०वें वार्षिक उत्सव पर

स्वामी सुमेधानन्द का प्रवचन

●

आदर के योग्य आर्य सज्जनों और माताओं ऋग्वेद के 40वें अध्याय में सब से पहला मन्त्र है :—

ओं ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित् जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्य स्विद धनम् ॥

इस जगत के अन्दर जों कुछ भी मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट इत्यादि और इनके अतिरिक्त फल फूल अन्न अनेकों प्रकार का वैभव है उन सबका स्वामी तो अवश्यमेव ईश्वर ही है। इस सब ईश्वर की देन का सदुपयोग करना प्रत्येक सत्य पुरुषार्थ करने वाले पुरुष का स्वत्त्व स्वतः प्राप्त है। स्वयम् स्वः आवश्यकता के लिए और स्व: परिवार की आवश्यकता के लिए उचित उपभोग करके मानव समाज के यथोचित उपयोग के लिए भी अर्पण करने के लिए त्याग करना चाहिए! समय आने पर सब मनुष्य प्राणधारी एक-एक करके संसार सागर से अन्त में विदा ही होते जाते हैं। अतः जिस धन सम्पत्ति के वे सर्वेसर्वा स्वामी समझे जाते हैं वह सब यहीं पर रह जाता है यदि अन्तिम समय से पूर्व ही यह सोच कर कि यह सब धन वैभव ईश्वर का है और ईश्वर के महान व पवित्र कार्यों के लिए ईश्वर के अमृत पुत्रों के हित के लिए इसके सदुउपयोग हो जाए तो यह वास्तव में श्रेयस्कर ही है। मैं भी यही विचार करता हूँ कि प्रभु ने मेरे निजी व्यय के लिए जो भी सुव्यवस्था सुविधा से कर दी है उसमें से उचित भाग ईश्वर के महान् व परम पवित्र कार्य के लिए सद्भावना, श्रद्धा व प्रेम से अर्पण करना अत्यन्त गौरव और सुखमय यश का कारण है।

मैं मनुष्य मात्र के लिए लौकिक और पारलौकिक यथार्थ ज्ञान का प्रचार प्रसार करना ईश्वर का महान कार्य और शिक्षित मनुष्यों का पवित्र कर्त्तव्य समझता हूँ। स्वामी विवेकानन्द ने यथार्थ कहा है कि :—

Education is the manifestation of knowledge already in man. Religion is the manifestation of diversity already in man.

शिक्षा उस दिव्य ज्ञान की अभिव्यक्ति करने में सहायता देती है, जो कि मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अन्दर पहले से ही बीज रूप में व्यापक है। धर्म, ईश्वरत्व और दिव्यता की अभिव्यक्ति है जो कि पहले से ही प्रत्येक मानव के अन्दर उज्जवल सुललित दिव्य प्रकाश के साथ व्यापक है।

महर्षि दयानन्द जी ने अत्यन्त सरल और सुन्दर शब्दों में क्या ही उत्तम और हृदय-स्पर्शी शिक्षा के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए हैं—"शिक्षा अज्ञान रूपी अन्धकार का सवनाश करके ज्ञान रूपी दिव्य प्रकाश से मनुष्य के मस्तिष्क को सुप्रकाशित कर देती है। मानव को स्व: जाति, स्वराष्ट्र का सुयोग्य व शक्तिशाली उपयोगी अग बना देती है। आपने मानव इतिहास में भी पढ़ा होगा, सुना भी होगा और इस समय भी स्पष्ट देख रहे होंगे कि जितने भी धार्मिक आध्यात्मिक तत्ववेत्ता, सत्यज्ञानी सन्त युगपरिबर्तक, धर्म प्रचारक हुए। जितने भी सच्चे देशभक्त राजनैतिक नेता हुए, जितने भी उच्च साहित्य-कार कवि, सुयोग्य लेखक, पत्रकार, दार्शनिक, वैज्ञानिक, आविष्कारिक हुए वे सब सुशिक्षित. सुयोग्य विद्या और ज्ञान धन से सुभूषित थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्राय: जिज्ञासु लोग पूछा करते थे कि लाखों विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के विद्यमान होते हुए भी आप किस उद्देश्य के लिए गुरुकुल की स्थापना कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि—"महर्षि दयानन्द जी कहते थे कि हम अपने ही राष्ट्र में विदेशी, मुसलमानी संस्कृति, सभ्यता, भाषा के विवश गुलाम बना दिये गये हैं। मैं चाहता हूँ कि आर्यवर्त्त के निवासी आर्यभाषा, आर्य संस्कृति, आर्य सभ्यता और वैदिक धर्म के उज्जवल दिव्य प्रकाश में विद्या व सुशिक्षा प्राप्त करें। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने सस्कृत विद्यालय भी स्थापित किये। मैं तो महर्षि दयानन्द जी का शिष्य हूँ और इसलिए उनकी इस महान इच्छानुसार गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर रहा हूँ।

मैं जीवन के प्रत्येक कार्य में सुयोग्य, शक्तिशाली, विद्वान् और सदाचारी स्नातक भेजना चाहता हूँ। मैं राष्ट्र में सर्वश्रेष्ठ, सर्व उत्तम विद्वान् और सच्चरित्र स्नातक भेजना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि गुरुकुल के स्नातक उपयोगी और सुयोग्य नागरिक बनें। यदि आपको गुरुकुल कांगड़ी या किसी अन्य गुरुकुल के या अपने ही गुरुकुल (भैंसवाल) के स्नातक जीवन के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में मिले हों तो आपको सम्भवत: उन के कार्य-व्यवहार तथा चरित्र का अध्ययन करके प्रसन्नता और सन्तोष हुआ होगा। यदि वास्तव में हुआ हो तो आपने अनुभव किया होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का और भक्त फूल सिंह का गुरुकुल की स्थापना करने का मौलिक उद्देश्य वास्तव मे पूरा हो रहा है। जब अन्य सरकारी और गैर सरकारी शिक्षिण संस्थाएं राष्ट्र और समाज के आवश्यक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सुशिक्षित सुयोग्य युवक युवतियों के जीवन का निर्माण कर सकती तो, क्योंकि गुरुकुलों अन्य सामान्य शिक्षा के साथ-साथ वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति सभ्यता को भी शिक्षा दी जाती है। इसलिए यह भी सुयोग्य, सुशिक्षित कार्य-कर्त्ताओं के साथ-साथ धर्म प्रचारकों, समाज और राष्ट्र सेवकों का निर्माण सफलता पूर्वक कर सकते हैं। यह गुरुकुल कष्ट-साध्य, तपस्या, पुरुषार्थ और आदर्श त्याग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलाये जा रहे हैं। इनमें कार्यकर्त्ता भी धर्म, संस्कृति, समाज, राष्ट्र की सेवा के सद्भावों से ओत-प्रोत होते हैं। वे स्वयं भी त्याग करते हैं और जनता-जनार्दन में सुयोग्य और सज्जन व्यक्तियों को त्याग तपस्या के लिए प्रेरणा करते रहते हैं।

प्राय: गुरुकुलीय संस्थाएं दान पर ही आश्रित होती हैं। शिक्षा प्रेमी, धर्म-प्रेमी, समाजसेवी सज्जनों को इस प्रकार की संस्थाओं में अवश्य दान देना चाहिए। मैं इस प्यारे गुरुकुल में सन् 1962 में भ्रमण करते हुए एक यात्री के रूप में आया था। अब सन् 1979 चल रहा है। मैं अभी तक आपके प्रिय गुरुकुल में निवास करता चला आया हूं। मैंने कुलवासियों के साथ पढ़ाने का कार्य भी किया है, खाया पिया भी है और इसी तरह से सुख और शान्ति से समय बिताता रहा हूँ। यदि मैंने गुरुकुल की सेवा की है तो कुलवासियों ने मेरी बहुत ज्यादा प्यार से सेवा की है। तो सच बात यह है कि मैं वास्तव में आप सब का समान रूप से ऋणी हूँ और आपका सच्चे हृदय से धन्यबाद करता हूं। यह गुरुकुल भी हमारी पवित्र मातृभूमि भारतवर्ष में एक पवित्र कुल माता ही है जिसने सुयोग्य सदाचारी सज्जन और कर्मयोगी स्नातकों को तैयार किया। कुलमाता का ऋण तो कोई चुका ही नहीं सकता। परन्तु कुलमाता की शिक्षा सम्बन्धी पवित्र सेवा के लिए अपने सुयोग्य मित्र श्री विष्णुमित्र विद्याप्रभाकर, विद्यामार्तण्ड, आचार्य धर्मभानु जी के कर-कमलों में यह अल्प राशि (1100/- रु०) सहर्ष स्व:इच्छा से अर्पण करता हूँ।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निराभया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा भूत कश्चन् दु:खभाग ॥

❀ बधाई सन्देश ❀

पिछले वर्ष से श्री योगेशचन्द्र जी ने बड़ी सूझ-बूझ से "समाज सन्देश" का संचालन एवम् सम्पादन किया है। मैं समाज-सन्देश परिवार की ओर से उन्हें बधाई सम्प्रेषित करता हूँ।

'समाज-सन्देश' का सम्पादन कार्य अब श्री देवराज जी विद्यालंकार, गुरुकुल भैंसवाल कलां, जि० सोनीपत (हरियाणा) करेंगे। पाठकों से अनुरोध किया जाता है कि 'समाज-सन्देश' से सम्बन्धित पत्र व्यवहार उपरोक्त पते पर ही करें।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर शहीद राव तुला राम

★

वीरों का जब जिक्र हुआ, एक नाम याद था आग्या।
सुनकर नाम उस राव तुला का, दुश्मन था घबराग्या ।।

जन्म लिया सन् 1825 में राव तुला ने,
पूर्णसिंह ने खुशी मनाई चांद खिला था घर में ।
14 वर्ष का पुत्र छोड़ कर, पूर्ण गए स्वर्ग में,
राव वीर काबिल हो मेरा, माता इसी फिक्र में ।
दयानन्द स्वामी का सत्संग राव तुला फिर पाग्या ।।

सन् 1857 में क्रान्ति एक जागी थी,
उसी समय में रानी झांसी वीर गति पागी थी ।
जगह-जगह पर युद्ध हुए थे युवा रक्त खखोला था,
निकल पड़ा कुर्बानी देने उन वीरों का टोला था ।
मित्र मिल्या तात्यां टोपे सा भाग देश का जाग्या ।।

नसीब पुर के मैदानों में, दुश्मन ठहर सके ना,
क्रान्ति वीर तो भूखे रह कर भी थे झुके कभी ना ।
उसी समय कुछ अपने राजा धोखा करगे भारी,
नष्ट हो गई थी उमीदें राव तुला की सारी।
परदेशों जाकरके फिर फौज बणावन लाग्या ।।

दुश्मन से बदला लेने नस-नस में उठी तरंग थी,
करली सेना त्यार वीर ने मन में जगी उमंग थी ।
बीमार हो गये राव तुला, काबुल में था जब डेरा,
तेईस, नौ, अठारह सो छयासी मृत्यु नै आ घेरा ।
'देव', देश को देख सका ना अन्त समय पछताग्या ।।

—देवराज 'दीवान'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ शोक समाचार ❀

दिनाँक १९ फरवरी, १९७९ को आचार्य हरिश्चन्द्र जी सम्पादक 'समाज-सन्देश' के सुपुत्र श्री सतीश कुमार की मोटर साइकिल दुर्घटना में मृत्यु हो गई। सारा समाज-सन्देश परिवार इस असह्य दुःख के कारण हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता है तथा परमात्मा से प्रार्थना करता है कि मृतात्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके सम्बन्धियों तथा परिवार को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—प्रबन्धक

❀ शोक समाचार ❀

गुरुकुल भैंसवाल के सुयोग्य अध्यापक श्री रत्न सिंह की माता जी का 10 जनवरी, 1979 को देहान्त हो गया। समाज-सन्देश परिवार इस दुःखद समाचार के प्रति गहरी सम्वेदना व्यक्त करता है तथा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मृतात्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे तथा परिवार को यह दुःख सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करें।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के आर्यसमाजी नेताओं से—

—यशः पाल सिंह 'विद्यालंकार'
मतलौढ़ा, हिसार

पंजाब के आर्यसमाज में पिछली सदी से झगड़े चले आ रहे हैं। प्रारम्भ में वे गुरुकुल सैक्शन और कालिज सैक्शन के नाम पर शुरु हुए। उस समय गुरुकुल सैक्शन के नेता स्वामी श्रद्धानन्द थे और कालिज ग्रुप के महात्मा हंसराज जी। दोनों महात्माओं के समय पंजाब के आर्य समाज ने सम्पूर्ण राष्ट्र का नेतृत्व किया। अपने त्याग तपस्या और बलिदान से राष्ट्रीय जीवन में नवप्राण फूंके। हजारों, लाखों युवकों को आर्य-समाज के रंग में रंग दिया। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत हजारों आर्य युवक राष्ट्र को समर्पित हो गए, जिन में शहीद-ए-आजम सरदार भगतसिंह और श्री रामप्रसाद बिस्मिल आदि प्रमुख थे। उस शती के दूसरे दशक से पांचवें दशक तक उपरोक्त दोनों क्षेत्रों के नेता क्रमशः महाशय कृष्ण और श्री खुशहालचन्द खुरशन्द थे। जो बाद में महात्मा आनन्द स्वामी कहलाये। महाशय कृष्ण ने उर्दू प्रताप लाहौर से निकाला। उनकी लेखनी की धाक ब्रिटिश शासक मानते थे। सर सिकन्दर और चौ० छोटू राम की हकूमत भी तथा कांग्रेस सरकार भी इनकी धाक मानती थी। महाशय खुशहाल चन्द ने लाहौर से मिलाप निकाला और बाद में उनके पुत्रों ने हिन्दी मिलाप। और दोनों ही परिवारों में आज भी स्वनामधन्य पत्रकार चले आ रहे हैं। महाशय कृष्ण की वंश परम्परा में अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष वीर प्रताप के संचालक श्री वीरेन्द्र जी और दैनिक वीर अर्जुन के संचालक सम्पादक श्री नरेन्द्र जी हैं। महात्मा आनन्द स्वामी के पुत्र विख्यात पत्रकार श्री रणवीर दिल्ली से उर्दू मिलाप निकाल रहे हैं और पंजाब के भूतपूर्व आबकारी व कराधान मन्त्री श्री यश जालन्धर से हिन्दी मिलाप।

भारत विभाजन के पश्चात् डी० ए० वी० संस्थाओं और गुरुकुलों में सामञ्जस्य स्थापित हो गया परन्तु आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब में जाट और पंजाबी का नया झगड़ा शुरु हुआ। सन् 1956 से 1973 तक 17 साल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की बागडोर श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती, श्री रघुवीर सिंह शास्त्री, श्री स्वामी ओमानन्द और प्रो० शेरसिंह के हाथ में रही। श्री रामनाथ भल्ला इस गुट के पैरोकार थे। सन् 1973 में श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामगोपाल शाल वाले और श्री वीरेन्द्र स्वामी ओमानन्द के शिष्य श्री इन्द्रवेश और श्री अग्निवेश को साथ मिला कर पानीपत के मैदान में स्वामी ओमानन्द, प्रो० शेर सिंह, चौ० माड़ू सिंह, आचार्य विष्णुमित्र, कपिल देव शास्त्री आदि द्वारा समर्पित उम्मीदवारों (एक बार श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती और दूसरी बार स्वामी रामेश्वरानन्द) को पराजित किया। जब स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, श्री वीरेन्द्र और रामगोपल शाल वाले से मिलकर न चल सके तब सितम्बर 1975 में पंजाब सभा तीन टुकड़ों में बंट गई। पंजाब, हरियाणा और दिल्ली की नई प्रतिनिधि सभाएं बन गईं। स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश ने इस विभाजन को स्वीकार नहीं किया और पहले उन्होंने श्री बंशीलाल व श्री बनारसीदास गुप्ता से मिल कर अपनी शक्ति कायम रखी तथा अब जनता पार्टी के साथ मिलकर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि संस्थाओं में अपना वर्चस्व कायम किये हुए हैं। हमने गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा प्राप्त की है, हमारे रक्त के कण-कण में उस संस्था के प्रति अगाध स्नेह है। उस संस्था के यश में हमारा यश और अपयश में हमारा अपयश है। सभा के विभाजन के बाद दिल्ली, पंजाब और हरियाणा की प्रतिनिधि सभाओं का काम ठीक से चलने लगा था, परन्तु हरियाणा के आर्यसमाज का दुर्भाग्य कहिए कि जून 1977 में स्वामी रामेश्वरानन्द को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का सर्वसम्मत प्रधान चुना गया। परन्तु श्री रामेश्वरानन्द जी नये अधिकारियों और अन्तरंग के चयन में वह सन्तुलन कायम न रख सके जो इस सभा के पहले प्रधान लाला दिलीप सिंह जी कायम कर गए थे। इस सभा में भी अब दो ग्रुप हो गए हैं। जो कि झज्जर और भैंसवाल के नाम से विख्यात हैं। झज्जर ग्रुप के नेता हैं प्रो० शेर सिंह, रघुवीर सिंह शास्त्री, स्वामी ओमानन्द, वेदव्रत शास्त्री, महाशय भरत सिंह आदि। इस ग्रुप के श्री सिद्धान्ती ने शनैः-शनैः सभी सार्वजनिक कार्यों से उपराम ग्रहण कर लिया है और उनकी जगह की पूर्ति श्री रामेश्वरानन्द ने कर दी है।

भैंसवाल ग्रुप के नेता हैं—चौ० माड़ू सिंह, आचार्य विष्णुमित्र, कपिलदेव शास्त्री, महेश्वर सिंह मलिक, ब्र० कर्मपाल आदि। महाशय भरत सिंह चौ० साहब को छोड़कर झज्जर ग्रुप से जा मिले हैं। स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, स्वामी आदित्यवेश, शक्तिवेश आदि का तीसरा ग्रुप अलग से है। श्री वीरेन्द्र ने श्री पृथ्वी सिंह आजाद से मिल कर पंजाब की स्थिति पर प्रायः काबू पा लिया है। परन्तु कांगड़ी के मामले को लेकर स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश से उनका झगड़ा चल रहा है। पं० मुरारी लाल और रोपड़ के स्वामी वेदानन्द पंजाब में इन्द्रवेश, अग्निवेश का साथ देते हैं। अब जबकि स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री बहन पुष्पा और सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले के अनशन के बाद यह सारा मामला प्रधान मन्त्री ने प्रशासक नियुक्त करके निपटा सा दिया है परन्तु मामला अभी भी गम्भीर है। आर्यसमाज पतन के कगार पर खड़ा है और यहां तक इसे लाने का उत्तरदायित्व प्रो० शेर सिंह, ओमानन्द व महाशय भरत सिंह को जाता है। आर्यसमाज को सिर्फ मात्र अब एक धक्के की आवश्यकता है और वह धक्का भी स्वामी ओमानन्द और महाशय भरत सिंह, देने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए तत्पर बैठे हैं। तत्पश्चात् आर्य समाज को पुनर्जन्म भावी पीढ़ी को देना होगा। आर्यनेताओं की चन्द बुराइयां हैं जो मैं नीचे दे रहा हूँ। इन्हीं के कारण स्वामी ओमानन्द जैसे साधु सरकारी बाबा बने फिरते हैं और दम भरते हैं कि हम योगी हैं।

महाशय भरत सिंह : प्रतिज्ञा कहाँ गई ?

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री हैं जनाब भरत सिंह ! मगर यह मन्त्री पद इनकी पुरानी चापलूसी का फल है। प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित 'सर्वहितकारी' साप्ताहिक में मैंने पढ़ा था कि महाशय भरत सिंह ने कहा है कि मैं पदलोलुप नहीं हूँ। भविष्य में सभा में किसी भी पद पर आरूढ़ नहीं होऊंगा, मेरा मकसद तो आर्यसमाज का प्रचार तथा महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करना है। यह सब मैं सर्वसाधारण के साथ मिलकर करूंगा। मगर जब चापलूसी का वक्त आया तो महाशय जी पहले व्यक्ति निकले जिन्होंने चौ० माड़ू सिंह के विश्वास को ठोकर मारकर स्वामी ओमानन्द के चरणों में मस्तक झुका दिया। उस समय कहां गई थी वह प्रतिज्ञा जिसके आधार पर निरीह आर्य समाजी जनता को भुलावे में डाल कर फुसलाया जा रहा था। जब समाज का भविष्य इस प्रकार के बेपैंदी के लोटों (पात्र) के हाथ में दे दिया गया है वह समाज निश्चय ही पतनोमुख है। समय की पुकार है कि इस प्रकार के दब्बू व ढोंगी लोगों को समाज से बहिष्कृत किया जाना चाहिए। आर्य समाज के पावन इतिहास पर लगे इस कलंक पङ्क को जब तक सुधार की मार्जनी से परिमार्जित नहीं किया जायेगा तब तक मुझे कहने में कोई संशय नहीं कि आर्य समाज अपने चरम-लक्ष्य तक पहुँचने में अक्षम रहेगा। ये वही महाषय जी हैं जो चुनाव में बहादुरगढ़ के हल्के से कांग्रेस के अध्यक्ष थे परन्तु परिणाम आने पर ये जनता पार्टी की जीत पर शेर सिंह के समर्थन में ताली पीटते दिखाई दिए। समझ में नहीं आता ये किस पार्टी से सम्बद्ध हैं।

स्वामी ओमानन्द : स्वार्थपरता की चरम सीमा—

कहावत प्रसिद्ध है कि "अन्धा बांटे रेवड़ी अपनों-अपनों को दे"। यही बात स्वामी ओमानन्द पर चरितार्थ होती है। स्वार्थपरता ही विनाश का मूल है। एक समय था जब कि चौ० माड़ू सिंह सत्तासीन थे, उस समय स्वामी ओमानन्द जी अपनी औकात को भूल कर चौ० साहब से लिपटे रहते थे परन्तु चौ० साहब के सत्ताच्युत होते ही स्वामी ओमानन्द ने भी अपना असली चिरपरिचित रूप दिखा दिया और अपनी चमगीदड़ वाली नीति स्पष्ट करके चौ० माड़ू सिंह को अवहेलित किया। इन्हें क्या चाहिए ? इनके लिए तो पूजाई वही है जो इन्हें सरकारी पैसे से राजकीय मोडा बनाकर विदेश भेज सके। यही कारण है कि स्वामी ओमानन्द प्रो० शेर सिंह के हाथों कठपुतली बन कर रह गये हैं। स्वामी रामेश्वरानन्द जी नाम ख्याति के भूखे हैं यही जानकर उन्हें प्रधान बनाकर सम्पूर्ण अधिकार स्वामी ओमानन्द ने स्वयं संभाल लिये हैं। अभिप्रायः यह है कि स्वामी ओमानन्द आर्यसमाजी जनता के पैसों का दुरुपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वेष इतना कि रिवाड़ी में होने वाली "गौशाला शताब्दी" समारोह की सूचना भी गुरुकुल भैंसवाल में नहीं भेजी गई। स्वामी ओमानन्द जैसा महाक्रोधी, द्वेषी तथा स्वकीय परकीय का समर्थक और स्वार्थी साधु शायद ही ढूंढ़े से मिले। इस प्रकार राग, द्वेषयुक्त को साधु कहलाने का क्या अधिकार है ? ये लोग दयानन्द मठ की जमीन का उपयोग अपने विश्रामगृह के रूप में करते हैं चाहे वहां पर गए हुए ग्रामीण आर्यसमाजी अतिथि को रात काटने की जगह भी न मिले।

प्रो० शेर सिंह : किसान विरोधी नितियां :

आर्य समाज जैसी संस्थाओं ने जहां अनेकों लोगों को पवित्र बिचार देकर साधु बनाया है वहां राजनीति में प्रवेश करने का सुयोग भी प्रदान किया है। प्रो० शेर सिंह को राजनीति में प्रवेश आर्यसमाज की बदौलत मिला, मगर प्रो० शेर सिंह ने आर्य समाज को ही मिटा देने वाली नीतियां सदा अपनाई। ओमानन्द की स्वार्थ लिप्सा की पूर्ति ये अवश्य करते रहे मगर उन्हीं द्वारा अपनाई गई चमगीदड़ वाली नीति न छोड़ सके। कांग्रेस से जनता, जनता से सी० एफ० डी० और सी० एफ० डी० से किसान विरोध का बाजा भी इन्होंने बजाया। जिन किसानों के वरद-हस्त-प्रदत्त वोटों से ये लोग राजभोग योग्य हुए उन्हीं की आवाज पर इन्होंने कुठाराघात किया। यही कारण है प्रो० साहब का हुक्का पानी बन्द करके 80 गांवों की पंचायत द्वारा इन्हें बहिष्कृत कर दिया गया है। स्वार्थ का अन्धा चश्मा इनके पतन के लिए उत्तरदायी होगा। कहते हैं "काठ की हांडी एक ही बार चूल्हे पर चढ़ती है" मगर यहां तो कई बार हो चुकी है लेकिन जो जितना होना था हो चुका अब किसान प्रो० साहब की स्वार्थी नीतियों को भली भांति समझ चुके हैं। अब उन्हें फुसलाना इतना आसान नहीं जितना कि पार्टी की फेर बदल।

उपरोक्त बातों में कितनी सत्यता है ? इससे सम्पूर्ण समाज परिचित है तब क्या इस स्थिति में हरियाणा और पंजाब के यह आर्य नेता आपस में विचार करके किसी ऐसे निश्चय पर नहीं पहुँच सकते जिससे कि इनका आपसी कलह समाप्त हो जाये और आर्यसमाज के सुदिन लौट आएं। जिस समय तक स्वामी ओमानन्द ने सन्यास नहीं लिया था और जब वे आचार्य भगवान देव के नाम से पहचाने जाते थे तब हरियाणा, पंजाब और दिल्ली के आर्य जगत् में उन्हें जो प्रतिष्ठा प्राप्त थी वह आज समाप्त प्राय हो गई है और जिस तरह भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमति इन्दिरा गान्धी अपनी छवि को बिगाड़ कर मात्र एक गुट की नेता रह गई हैं वही दशा स्वामी ओमानन्द की है। वे भी आज आर्य जगत् में एक छोटे से गुट के नेता समझे जाते हैं।

मेरे जैसा युवक क्या उनसे प्रार्थना कर सकता है कि वे अपने अहंकार और क्रोध को छोड़ कर निष्कलुष भाव से इन आर्यसमाज के दस बीस व्यक्तियों को एक स्थान पर बैठा कर इनमें आपस में समझोता कराने की कोशिश करेंगे। जिससे कि देशवासियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सम्मुख आर्यसमाज की वही पुरानी प्रतिष्ठा स्थापित हो सके। यदि ऐसा नहीं होता है तो हम समझेंगे कि दूसरों को उपदेश देने वाले ये आर्यनेता राग, द्वेष, ईर्ष्या, मात्सर्य और मोह से विमुक्त नहीं हैं अपितु गृहस्थियों से भी बदतर अवस्था में मानापमान के चक्कर में फंसे हुए हैं। इससे समाज की जो हानि हो रही है उसकी ये नेता कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रभु के नाम पर इनसे प्रार्थना है कि भावी पीढ़ियों के मार्गदर्शन के लिए ये सब लोग मिल कर काम करें। क्या मैं आशा करूं कि कोई सन्यासी इस सम्बन्ध में पहल करेगा। अभी हमारा विश्वास उनके प्रति बना हुआ है।

पहेलियां

—ब्र० रामपाल सिंह 'मलिक'

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उलटा सीधा एक समान,
है किसी वृक्ष का नाम ॥ १ ॥

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उलटा सीधा एक समान,
है किसी वस्तु का नाम ॥ २ ॥

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उलटा सीधा एक समान,
है किसी व्यक्ति का नाम ॥ ३ ॥

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उलटा सीधा एक समान,
है किसी घृत का नाम ॥ ४ ॥

उत्तर:— 1- करक, 2- कनक, 3- नवीन, डालडा।

★★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक व्यंग्य

आर्य समाज के ये 'जीवित' नेता —मुझे गर्व है उन पर !

—धीरेन्द्र विद्यालंकार'
हिन्दी विभाग (ई०)
दिल्ली वि० वि० दिल्ली-7

★

हाल ही में एक समाचार ने समाचार पत्रों का काफी स्थान ले लिया है और वह समाचार है गोहत्या का विरोध। यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि उसके आर्थिक विकास की रीढ़ की हड्डी गोवंश को सुनियोजित ढंग से समाप्त किया जा रहा है। संसद में इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर अनेक प्रश्न उठे, आचार्य विनोबा जी जैसे सन्त पुरुष को अनशन करने का संकल्प लेना पड़ा। किन्तु आर्य समाज कहां रह गया ?

वैसे, मानना पड़ेगा कि गोवध के खिलाफ सबसे पहले आवाज आर्यसमाज ने ही उठाई थी। आर्य समाज के संस्थापक गुरुवर दयानन्द ने अंग्रेजों को ललकार कर इस जघन्य पाप को बन्द कराने को कह दिया था, जनता से उनकी भाषा में सही समर्थन की अपील की थी तथा इस सन्दर्भ में अपने दायित्व को अपने अनुयायियों पर डालते हुए पक्षीय तर्कों की शृंखला 'गोकरुणानिधि' में एकत्रित कर दी थी। अमर हुतात्मा फूलसिंह ने अपनी जान तक इस विधर्मी कुकृत्य को बन्द करा देने के लिए लगा दी थी।

1967 में गोहत्या विरोधी आन्दोल तेज हुआ था, काफी लोगों ने गिरफ्तारियां दी थीं, कुर्बानियां भी कम नहीं थीं। मुझे याद है बहुत ने निर्मम मार भी खाई थी। लेकिन उस समय आर्य समाज ही इस आन्दोलन का नेता था। छोटे-छोटे बच्चे घर से निकल पड़े थे, शिक्षा संस्थाओं में उन्होंने सत्याग्रह में भाग लेने को अपने आचार्यजन को अनुमति देने को विवश कर दिया था। मैं स्वयं उस समय ग्यारह वर्ष का था और जेल जाने को बहुत उत्सुक हो रहा था, हमें लाठियों का डर दिया गया लेकिन तब नेताओं में ही उत्साह था तो हमें कौनसा डर परेशान करता—सवेरे-सवेरे पैदल ही गुरुकुल सिंहपुरा से निकल पड़े थे पुलिस की कस्टडी का स्वागत करने—जेल भर कर सरकार को इस मांग को पूरा करने के लिए विवश करने। मुझे यह भी याद है कि उन दिनों सांकेतिक उपवास में भी हमने बड़े उत्साह से भाग लिया था, और वह दिन, जब जेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजिस्ट्रेट ने हम पर अयाचित 'दया' दिखा कर रिहा कर दिया था, हम सब के लिए कितनी उदासी का दिन था, अचानक हमें एक ख्याल आया था, और हम उस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे थे जहां धारा 144 लागू थी तथा वहां भी नारे लगा कर हमने फिर गिरफ्तारियां दी थीं। मुझे स्मरण है कि गुरुकुल भैंसवाल के कुछ छात्र तो बिना पूछे ही जेल जाने को भाग निकले थे। सर्वत्र जेल जाने का एक नशा था और आर्य समाज के मस्त दीवाने लाठी, गोलियों की परवाह किए बिना दिल्ली की ओर कूच कर रहे थे, किन्तु उसी वक्त...... ।

उसी वक्त आर्य समाज के ही एक नेता ने हमें दगा दे दिया; महात्माओं के आमरण व्रत को निष्फल कर दिया, बच्चों के उत्साह पर गाज गिरा दी, जनता की भावनाओं के साथ क्रूर खेल खेल कर स्वयं सरकार में आगे बढ़ गये। केन्द्र में जहां गृहमन्त्री पद पर श्री नन्दा इस आन्दोलन का समर्थन देते रहे वहां केन्द्र में अपनी साख जमाने को इन नेताओं ने इस आन्दोलन को वापिस लेने की घोषणा कर दी। लेकिन जनता ने इन्हें तब भी नहीं पहचाना। मुझे याद है कि जब कभी सत्याग्रहीजन पर लाठी-चार्ज हुआ ये नेता जीप पर बैठ कर अन्यत्र चले गए, क्योंकि इनमें सामर्थ्य था और जनता पर लाठीचार्ज होने का तमाशा देखा। मैं नहीं कहता हूँ, लेकिन इन आरोपों में कुछ सच्चाई है कि इन्हीं नेताओं ने केन्द्र में 'कुछ' हासिल करमे के लिए इन्दिरा जी के लिए 'परेशानी' बनी इस समस्या को उठा लिया।

और आज फिर गोहत्या के विरोध में उठा स्वर तीव्र हो रहा है—संसद में भी और संसद के बाहर भी। लेकिन किन की ओर से ? आर्य समाज की ओर से ? नहीं ! सारी जनता इस पाप का विरोध करने में तत्पर है किन्तु वे क्या कर रहे हैं, जिन्होंने सन् 1967 में भी आन्दोलन का नेतृत्व किया था। जनजागृति देने में तत्पर दयानन्द सरस्वती प्रशासन के द्वारा दिए गए 'उत्कोच' को पाप के रूप में देखकर अपनी आवाज को निरन्तर 'तेज' ही प्रदान करते रहे। यह वह काल था, जब अंग्रेज प्रशासन भारत पर लदा हुआ था, जिसका विरोध करते हुए लोग घबराते थे, कांग्रेस भी खुशामदी स्वर में उनसे प्रार्थना करती थी। किन्तु दयानन्द ने आवाज में 'कड़क' भरी क्योंकि वे सन्यासी थे। सन्यासी को प्रशासन या वित्त की कोई परवाह नहीं होती है—यह उद्घोष उन्होंने दिया था। किन्तु बड़ी-बड़ी घोषणाएं करके, ढिंढोरा पीट कर 'सन्यास' की दीक्षा लेने वाले वे माडर्न सन्यासी कहां चले गये ? लगता है, उन्हें गद्दी मिल गई है, लेकिन यह अवश्य ही उसके सामने 'क्षुद्र' है, जो स्वामी दयानन्द को पेश की गई थी।

नितान्त आश्चर्य की बात है कि सत्ता में गया एक भी व्यक्ति, जो स्वयं को आर्यसमाज का कर्णधार मानता है, इस आन्दोलन के पक्ष में आवाज नहीं उठा रहा है। संसद में डा० रामजी सिंह की आवाज गूंजती है किन्तु उनका साथी···वह भी आर्यसमाजी नेता नहीं है। उनको जिताने में अपना जी जान तक समर्पित कर देने वाले, द्वार-द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वोट' की भीख मांगने वाले भी आज इस प्रश्न पर दर-दर जाने की बात तो दूर घर से निकल कर बात नहीं करते। किन्तु जहां कहीं अधिकार लेने का, प्रतिष्ठा और वित्तेषणा पूरी करने का मौका ढूंढ़ने में ये चूकते नहीं हैं। जी हां, ये वे ही सन्यासी हैं, जिन पर आर्यसमाजें गर्व करती हैं, प्रत्येक बड़े समारोहों पर आमन्त्रित करती हैं—जनता को निर्देशन देने के लिए मंच देती हैं। किन्तु मुझे यह भी याद है, कि 'गोदुग्ध' न मिलने पर ये कर्मक्षेत्र से भाग निकलते हैं। जनता अभी भी इन्हें पहचान नहीं सकी है। इसी लिए तो आप पर जनता को, विशेष कर आर्यसमाज को बहुत गर्व है।

क्या आप जानते हैं ?

—राज सिंह भनवाला
कासेण्डी

संसार में महानतम तथा प्रथम

1-	सब से गहरा सागर	— प्रशान्त महासागर
2-	सबसे बड़ा सागर	— प्रशान्त महासागर
3-	सर्वोच्च पर्वत शिखर	— माउन्ठ एवरेस्ट (19,142 फुट) नैपाल
4-	सबसे लम्बी नदी	— मिसीसिपी (अमेरिका) ✗ नील नदी (मिश्र)
5-	सबसे बड़ा गुम्बद	— गोल गुम्बद (भारत)
6-	सब से ऊंचा डैम	— भाखड़ा डैम (740 फुट) भारत
7-	सबसे बड़ा संग्रहालय	— एलबर्ट संग्रहालय
8-	सबले बड़ी लायब्रेरी	— नेशनल कीव लायब्रेरी (रूस)
9-	सबसे बड़ा महाद्वीप	— एशिया
10-	सबसे बड़ी दीवार	— चीन की दीवार
11-	सबसे बड़ा महल	— वेटिकन महल (इटली)
12-	सबसे बड़ा बैंक	— बैंक आफ अमेरिका
13-	क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे बड़ा देश	— सोवियत रूस
14-	सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश	— चीन
15-	सबसे बड़ा पार्क	— यैलोस्टोन नेशनल पार्क (अमेरिका)
16-	ताजे जल की सबसे बड़ी झील	— लेक सुपीरियर (अमेरिका)
17-	नमकीन जल की सबसे बड़ी झील	— कैस्पियन सागर (रूस)
18-	सबसे गहरी झील	— बेकाल (13700 फुट) साईबेरिया)
19-	सबसे ठण्डा स्थान	— वेरकोस्यांक (रूस)
20-	सबसे गर्म स्थान	— जेकोबाबाद (पाकिस्तान)

★★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भजन

गऊ माता पर पड़ी विपत्ति, भार उठाना होगा।
खुला हुआ है आज जो गोहत्या, बन्द करवाना होगा ।। टेक ।।

गऊ माता हमारी आर्थिक समृद्धि का एक बड़ा आधार है।
रक्षा जो करेगा इसकी उसका बेड़ा पार है।
गोहत्या बन्द करवाने का जगह-जगह प्रचार है।
गऊ माता की रक्षा हित बच्चा-बच्चा मरने को तैयार है।
विनोबा जी ने किया व्रत जो, उसे निभाना होगा।
गऊ माता पर ······· ।। १ ।।

गऊ माता के सच्चे भक्तों ने अपना सिर फुड़वाया था।
भक्त फूलसिंह ने संभालके का, गोहत्था तुड़वाया था।
संभालके के मुसलमानों ने भारी शोर मचाया था।
गऊ माता की रक्षा हित आज हमें शीश चढ़ाना होगा।
गऊ माता ········ ।। २ ।।

मेरे देश को गऊ माता से, बहुत समय से प्यार रहा।
हजारों वर्ष पहले गऊ का पाली श्री कृष्ण मुरार रहा।
प्यारी भारत मां का दुलारा, लाल बहादुर नहीं रहा।
कौन बचावे आकर गैया कृष्णगोपाल नहीं रहा।
'कृष्ण चन्द्र मौंण' तनै गौ रक्षा हित सर्वस्व लुटाना होगा।
गऊ माता··········· ।। ३ ।।

गऊ माता पर पड़ी विपत्ति, भार उठाना होगा।
खुला हुआ है आज जो गोहत्था, बन्द करवाना होगा।

—कृष्ण चन्द्र 'भौंण'
गुरुकुल भैंसवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी और धूम्रपान : कटु विडम्बना

—महावीर अधिकारी

●

यों ही 'इण्डियन एक्सप्रैस' के पन्ने उलट रहा था, कि पुरुषों के लिए ईर्ष्याजनक समाचार पढ़ कर चौंक गया। क्या सचमुच नारियां सिगरेट पीयक्कड़ों में पुरुषों से आगे बढ़ने जा रही हैं ? अमेरिकी सर्जन प्रमुख की रिपोर्ट में बताया गया है कि नारियों की मृत्यु में अब 'फेफड़े' के केसों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। यह बात तो दीगर है कि भले सिग्रेट के उत्पादक और विक्रेता हम से सहमत न हों या भारत में वे सिग्रेट के पैकिटों के नीचे, विज्ञापनों के साथ एक कानूनी चेतावनी "कि सिग्रेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है" उन्हें फूटी आंखों नहीं सुहाता है, फिर भी पिछली मैडिकल रिपोर्ट के अनुसार सिग्रेट ने मनुष्यों के स्वास्थ्य पर बहुत बड़ा आक्रमण किया है—भोले मनुष्य को अपनी भूठी गरिमा के लोभ में फांस कर उसे चूसने पर आमादा हो गया है। यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है, जिसका विकास अब नारियों में हो रहा है, कितने अफसोस की बात है।

थोड़ा पीछे हट कर देखें तो इस विरोधाभास को निगलना पड़ेगा कि एक ओर मानव की आयु में इस शती में काफी वृद्धि हुई है और विशेष कर औरतों की आयु में तो पिछली शती की अपेक्षा पांच वर्ष की वृद्धि हुई है किन्तु इसके साथ ही साथ फेफड़ों की बीमारी, गुर्दे की खराबी या कैन्सर के प्रकोप में भी लगातार बढ़ौतरी हो रही है, दूसरे शब्दों में मनुष्य द्वारा मृत्यु पर विजय पाने की आकांक्षा के मार्ग यह कलमुंही सिग्रेट रस्ते में आ पहुँची है। जैसे ही इस शती ने इधर मुंह फेरा है, लगता है, साथ ही साथ नारी पर उक्त रोगों ने अपना प्रकोप करना तीव्र कर दिया है।

सन् 1900 के पश्चात् से सिग्रेट की बिक्री में काफी तेजी आई है। किन्तु उस समय सिग्रेट पीने की आदत का नारी क्षेत्र में विस्तार काफी धीमी गति से हुआ था। 1930 तक आते-आते सिर्फ 2% नारियां इस आदत की शिकार थीं जबकि कुल पुरुषों का करीब 60% भाग धूम्रपान का अभ्यस्त था।

सन् 1978 में अमेरिकी स्वास्थ्य विभाग ने धूम्र पीयक्कड़ों का सर्वे कराया था। स्थिति में काफी परिवर्तन आया हुआ था। लज्जामूर्ति नारी-समष्टि का 30% इस आदत से बुरी तरह ग्रस्त पाया गया। पुरुषों में बुद्धि जागृत पाई गई और करीब 32% पुरुषों ने सिग्रेट पीना छोड़ दिया था, पीयक्कड़ पुरुषों का प्रतिशत गिर कर 38% आ गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां तक युवा खून का प्रश्न है 1964 में उनमें इस व्यसन के प्रति उपेक्षा का भाव आने लगा था। हां, पुरुषों में यह भाव अधिक था और 1975 तक आते-आते नवयुवक और युवतियों में धूम्रपीयक्कड़ों की संख्या करीब-करीब बराबर ही हो गई थी। किन्तु आज देखिए न, एक ओर तो बड़ों में सिग्रेटपान की आदत में कमी का रुख आया है तो दूसरी ओर किशोरियों में यह लत बढ़ी है। मैं समझता हूँ कि यह सब पाश्चात्य प्रभाव ही नहीं कहा जा सकेगा। मैंने पाया है कि कुछ किशोरियां स्वयं को असामान्य दिखाने के लिए, मॉडर्न (आधुनिक) बनाने की कोशिश में इस सिग्रेट का सेवन करती हैं, स्पोर्टस् की तरह इस आदत में परिष्कार तक लाती हैं और फिर यह उनके लिए आदत बन जाती है। मैं हरियाणा की तो नहीं कह सकता, किन्तु उसके पड़ौसी राज्य में ऐसी प्रवृत्ति का दुष्परिणाम यह होता है कि छूत का रोग होने से यह एक से दूसरे में शीघ्रता से फैलता है। किन्तु हमें इस विवेचन से ही सन्तोष नहीं करना है। पत्रिकाओं के माध्यम से उसे 'खतरा' बताते हुए उससे मुक्ति पानी है। इन नवदीक्षितों को बताना होगा कि नई मैडिकल रिपोर्ट बताती हैं कि महिलाओं में दिल के दोरे का रोग फैल रहा है। जो महिलाएं 'स्मोक' (धूम्रपान) करती हैं—उनके हृदय के स्पन्दन में बुरा असर होता है। जिससे ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है, और वे काल के गाल की ओर ग्रसित होने बढ़ने लगती है।

1978 की 'नारी-हृद्गति अवरोध' सम्बन्धी रिपोर्ट में कहा गया कि 50 वर्ष से कम आयु की औरतों में, जिनकी मृत्यु हृदयगति के रुकने से हुई है, 3/4 मृत्यु 'स्मोक' की वजह से ही हुई हैं। चेनस्मोकर्स की आस पास वाली स्थिति के लोग (जो दिन में 35 तक सिग्रेट पी जाते हैं) तो नन-स्मोकर्स से 2000% अधिक (20 गुणा अधिक मरते हैं।

1977 में सात देशों की धूम्राभ्यासी नारियों का सर्वेक्षण हुआ तो पाया गया कि उनमें मेनोपॉज़ रोग प्रायः सिग्रेट का ही परिणाम है। जिस नारी को जितनी ज्यादह सिग्रेटें पीने का अभ्यास है उसे उतनी ही अधिक जल्दी 'मेनोपॉज़' रोग के होने की सम्भावना है। यही नहीं रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि नारी और पुरुष की औसत आयु में भारी अन्तर आ गया है।

नारियों को सचेत हो जाना चाहिए कि धूम्रपान का उनके स्वास्थ्य पर तो दुष्प्रभाव पड़ता ही है साथ ही उनकी सन्तान को भी उनके इस दुर्व्यसन-जनित पाप का भागीदार बनना पड़ता है। क्योंकि धूम्राभ्यासी नारी का बच्चा जन्म से ही कमजोर और कम वजन का होता है।

इस प्रकार नारियां यदि 'स्मोक' करती हैं तो 'स्मोकर' पुरुष से उन्हें ज्यादा घाटा है—उनकी आयु में कमी हो जाती है। विभिन्न रोगों की शिकार उन्हें होना पड़ता है तो यह विडम्बना ही न होगी कि इस घाटे को आमन्त्रित करने में वे पुरुषों से होड़ लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Statement about ownership and other particulars about news paper "Samaj Sandesh" to be published in the first issue every year after last day of February.

FORM IV

(See Rule 8)

1. Place of publication ... Gurukul Bhainswal Kalan Distt. Sonepat.

2. Periodicity of its publication ... Monthly

3. Printer's Name ... Dharam Bhanu
   Nationality ... Indian
   Address ... Gurukul Vidya Peeth Bhainswal Kalan (Sonepat)

4. Publisher's Name .. } Same as above No. 3
   Nationality ..
   Address

5. Editor's Name .. Harish Chander Acharya
   Nationality .. Indian
   Address .. 245, Model Town, Rohtak

6. Name and address of individuals who own the news paper and partners or share-holders holding more than one per cent of the total capital. } Mahasabha Gurukul Bhainswal Kalan (Sonepat)

I, DHARAM BHANU hereby declare that the particulars given above are correct to the best of my knowledge and belief.

(Sd.) DHARAM BHANU
Publisher,
'Samaj Sandesh'

Dated : 25th March, 1979

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farme and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम पुस्तकालय अध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी

स्थान विश्व विद्यालय हरिद्वार

पत्रालय

जिला

हर माह हजारों प्रतियां बिकने वाले 'समाज सन्देश' मासिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

✲ विज्ञापन की दरें ✲

टाइटल पेज एक चौथाई	...	50 रुपये
बैक पेज आधा	...	60 रुपये
अन्दर का एक पृष्ठ	...	40 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ	...	20 रुपये

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक-मण्डल :

व्यवस्थापक :
धर्मभानु जी

सम्पादक :
आचार्य हरिश्चन्द्र

सह सम्पादिका :
आचार्या सुभाषिणी

ओ३म्

समाज सन्देश

सामाजिक व सांस्कृतिक लेखों का संगम
गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां
तथा
कन्या गुरुकुल खानपुर कलां का मासिक पत्र
प्रकाशन तिथि : 25 जनवरी, 1979

वर्ष 19 जनवरी/फरवरी/मार्च, 1979 अंक 9/10/11

(स्व० श्री भक्त फूलसिंह जी)

तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेऽर्चन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् ।
अवन्त्यस्य पवितारमाशवो दिवः पृष्ठमधिरोहन्ति तेजसा ॥८७६॥

फैली हुई द्युलोक में तप की पवित्रता ।
स्थिर तन्तु हैं जहां बढ़ते सच्चरित्रता ॥
इस सोमभक्त को सभी हैं प्यार कर रहे ।
जो शीघ्र दिव्य तेज से द्योलोक भर रहे ॥

—निधि

२१/३/७९ पुस्तकालय गुरुकुल

मूल्य : एक प्रति 90 पै० वार्षिक चन्दा 10 रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्र० सं०	विषय		लेखक	पृष्ठ सं०
1.	गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष में	...	सम्पादक	... (i)
2.	भारतीय राजनीति—अनिश्चिता के भंवर में	...	राजेन्द्र विद्यालंकार, विधि छात्र (म० द० वि० वि०, रोहतक)	... 1
3.	अमेरिका की भूमि पर—विवेकानन्द	...	वेदपाल शास्त्री	... 3
4.	चुटकुले	...		... 5
5.	गीता का पांचवां तथा छठा अध्याय	...	आचार्य विष्णुमित्र	... 6
6.	पांच मुक्तक	...	विजया गुणवती	... 13
7.	परिवर्तन	...	सविता मलिक	... 14
8.	अनमोल वचन व चुटकला	...		... 15
9.	जीवन—एक पहेली	...	यशः पाल सिंह 'विद्यालंकार'	... 16
10	चौ० ईश्वर सिंह गहलौत	...	प्रो० प्रकाश वीर दलाल	... 17
11.	विहस्यताम् विचार्यताम्	...	पं० प्रशस्यमित्र शास्त्री	... 23

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

—सम्पादक

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

योगेश चन्द्र

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय—

गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष में

"चमन वाले खिजां के नाम से घबरा नहीं सकते।
कुछ ऐसे भी फूल खिलते हैं, जो मुरझा नहीं सकते।।"

हम इस वर्ष 26 जनवरी को अपनी सार्वभौमिकता की स्थापना के 28 वर्ष पूर्ण कर 29वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। 26 जनवरी हमारे महान् राष्ट्र की आशाओं एवं आकांक्षाओं का महा पर्व है। उन आस्थाओं का पुण्य पर्व जिनकी घोषणा सन् 1930 की 26 जनवरी को रावी के तट पर आज से 48 वर्ष पूर्व की गई थी कि—

"हमारा यह विश्वास है कि किसी भी दूसरी जनता की तरह भारतीय जनता का भी यह अनुल्लंघनीय अधिकार है कि वह स्वतन्त्र हो और अपने श्रम के फल का उपगोग करे, उसकी जीवन की आवश्यकताएं पूरी हों ताकि उसे विकास के पूरे अवसर मिल सकें।"

इतिहास में कुछ ऐसी तिथियां आती हैं जो हमें हमारे गौरवमय अतीत के पृष्ठों में खो जाने के लिए बाध्य कर देती हैं, जिन का स्मरण कर प्रत्येक साधारण से भी साधारण मानव का खून खोलने लगता है। उत्साह की तरंगें हिलोरे लेने लगती हैं तथा अपने पूर्वजों का स्मरण कर वह मन में कुछ न कुछ करने की ठान लेता है। ऐसी ही असामान्य तिथियों में 26 जनवरी की गणना होती है जिसका महत्त्व 'गणतन्त्र दिवस' के रूप में विश्व-विख्यात है तथा प्रत्येक मानव के हृदय-पटल पर अंकित है। दीवाली की तरह, जो असत्य पर सत्य की विजय—राम राज्य की स्थापना का प्रतीक है, हमारा यह विशाल संभावनाओं वाला राष्ट्र गणतन्त्र दिवस का साम्राज्यवाद पर स्वराज्य की विजय के प्रतीक के रूप में प्रतिवर्ष मनाता रहा है। गली मोहल्लों से लेकर मैदानों और राजधानी के विजय चौक तक हर जगह देश के करोड़ों नर-नारी नारे लगाते रहते हैं, मगर इस बार के उत्साह में खुशी के अतिरिक्त एक भावना और होगी—और वह है उपलब्धि का सन्तोष !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् 1950 में अपनी स्थापना के बाद से, गणतन्त्र ने इस देश की 60 करोड़ जनता की खुशहाली के साधन कायम करने, विदेशी गुलामी के अवशेषों को बुहार फेंकने और नव-साम्राज्यवादी गुलामी के अदृश्य फन्दे को काटने के लिए शानदार प्रयास किए थे परन्तु आपात् स्थिति की घोषणा से तथा मीसा (MISA) जैसे प्रजातन्त्र घातक कानून से गणतन्त्र को 26 जून, 1975 को कलंकित कर दिया गया। 24 जून 1971 को इसी मीसा को जब लोक सभा में पेश किया गया तो श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने इसे 'जंगली कानून' कह कर पुकारा था तथा इसे तानाशाही की तरफ पहला कदम बताया था। श्री राजनारायण ने उसी दिन कहा था कि आज से लोकतन्त्र खतरे में है। श्री लाल कृष्ण अडवानी ने भी इसे प्रतिपक्ष तथा मजदूर, गरीबों के आन्दोलनों को कुचलने के लिए सरकारी हथकण्डा तथा काला कानून कह कर बहिष्कार किया था। परन्तु यह कानून पास होकर ही रहा तथा उन नेताओं के वे इतने पहले कहे गये वचन सत्य साबित हुए। परिणाम स्वरूप लोकतन्त्र, गणतन्त्र को कलकित होना पड़ा, परन्तु शुक्रिया परमात्मा का जो उसने निरीह जनता के साथ हुए खिलवाड़ व उपहास का अन्त करने के लिए चुनावों की घोषणा करवा दी तथा पुन: गणतन्त्र, लोकतन्त्र की स्थापना हुई और एक बार फिर हमें निष्कलंक गणतन्त्र मनाने का अवसर मिला। खैर! रहने दीजिए इसे।

क्या कभी आपने विचारा कि गणतन्त्र किन कष्टों को झेलने का फल है? यह कितनी कुर्बानियों की धरोहर है, जिसका उपभोग हम स्वतन्त्र वातावरण में जन्म लें करके कर रहे हैं। आजादी प्राप्ति का प्रयत्न काफी लम्बे समय से किया जा रहा था क्योंकि भारत वर्ष को गुलामी के दिन काफी देखने पड़े हैं। 800 वर्ष तक भारत मुस्लिमों के आयत्त (आधीन) रहा। 200 वर्ष पर्यन्त आंग्ल शासकों की धौंस झेली, परन्तु बीच-बीच में स्वतन्त्रता के लिए प्रयासों की भी कसर न छोड़ी गई। सन् 1857 की क्रान्ति हुई, साइमन कमीशन बायकाट हुआ, असैम्बली हॉल में धमाके हुए, परन्तु आज़ादी नहीं मिली। इस आजादी को प्राप्त करने के लिए असंख्य मातृभक्त देश भक्तों को अपनी जान की होली खेलनी पड़ी थी। राष्ट्र में दो दल थे—एक नर्म दल, तथा दूसरा गर्म दल।

नर्म दल के नेता गान्धी जी थे जो अहिंसा व सत्य के पुजारी थे, कहते—यदि तुम किसी का भला नहीं कर सकते तो किसी का बुरा भी मत करो। यहां तक कि यदि कोई एक गाल पर चपेटा मारता है तो दूसरा गाल भी उसकी तरफ फेर दो। कर भला होगा भला के वे पक्के समर्थक थे? 'कष्टकेनैव कण्टकम्' की नीति उन्हें स्वीकार न थी। वे कवि की इस उक्ति को चरितार्थ करते थे—जा तो को कांटा बुए ताहि बुए तू फूल।

इस के विपरीत वे लोग थे जो आजादी देवी की पूजा के लिए भारत माता की गुलामी की शृंखलाओं को कतरने के लिए कष्ट तो क्या प्राण तक देने या लेने में नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झिझकते थे। गुलामी की अपेक्षा फांसी के फन्दे को चूमना या शत्रु को मौत के घाट उतार देना प्रशस्यतर जानते थे। उन्हें आजादी चाहिए किसी भी कीमत पर क्यों न मिले। आजादी की कीमत स्पष्टतया बलिदान है। क्रान्ति कारी समय-समय पर लूट-खसूट को भी बुरा नहीं मानते थे क्योंकि पैसे की ज़रूरत उन्हें इसके लिए बाध्य करती थी। उनके मन्तव्य को यह उक्ति स्पष्ट जाहिर करती है—

"जहां सच न चले वहां झूठ सही।
जहां हक न मिले, वहां लूट सही।।

काकोरी डकैती में कितने वीरों को फांसी का फन्दा चूमना पड़ा था। वास्तव में कुछ दयालु सी प्रकृति के लोग यथा महात्मा गांधी जी थे। वे उन लोगों को अच्छा नहीं समझते थे क्योंकि उनके सिद्धान्त भिन्न थे, यही कारण है कि आज आजादी प्राप्ति का सेहरा महात्मा गांधी के सिर बांधा जा रहा है क्योंकि उनकी पार्टी आजादी के एकदम बाद सत्ता में आ गई थी। तथापि उन शूरवीरों के पास स्वतन्त्रता प्राप्ति का इसके अतिरिक्त कोई सुव्यस्थित ढंग या उपाय न था, क्योंकि गोरे अंग्रेज शान्ति से मानने वाले नहीं थे, इसका प्रमाण गांधी जी के अनेकों आन्दोलनों की असफलता है। उन्हें शक्ति की, ईण्ट का जवाब पत्थर से देने की आवश्यकता थी, जो क्रान्तिकारियों ने दिया। लातों के भूत बातों से नहीं मानते। राम प्रसाद बिस्मिल शान्ति प्रिय लोगों को कहा करते थे— "आजादी कोई भिखारी को मिलने वाली भीख नहीं जो झोली में डाली जा सके। यह एक अमूल्य रत्न है जिसे प्राप्त करने के लिए सख्त से सख्त कष्ट उठाने की नौबत आती है" और आई भी। चाणक्य नीति में का है—

"नातिसरलैर्भाव्यं गत्वा पश्य् वनस्थलीम्।
सरलास्तभ छिद्यन्ने कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपा:।।"

अर्थात्—सीधे तो वृक्ष भी नहीं छोड़े जाते। सीधे खड़े पेड की टहनी को भी आते-जाते लोग तोड़ लेते हैं तथा टेढ़े वृक्ष को कोई हाथ नहीं लगाता। अत: आजादी की प्राप्ति में क्रान्ति का अपना विशेष महत्त्व है। आज जबकि सम्पूर्ण राष्ट्र में बलिदाता वीरों को श्रद्धांजलियां पेश की जा रही हैं वहीं खड़े होकर हमें यह भी प्रण लेना चाहिए कि हम अपनी मातृभूमि की इज्जत आबरू के वास्ते अपनी जान तक को भी लुटा देंगे, परन्तु मां का अपमान सहन न करेंगे।

अन्त में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी, राम मनोहर लोहिा, महात्मा गांधी, सरदार भगतसिंह, चन्द्र शेखर, राजगुरु, बिस्मिल, सुख देव, जवाहर लाल नेहरू, धींगरा इत्यादि सभी देशभक्त वीरों को श्रद्धाँजलियां अर्पित हैं। परमात्मा ऐसे सपूत राष्ट्र को देता रहे, इसी इच्छा के साथ...... । हमारा सार्वभौम, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणतन्त्र जिन्दाबाद!

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।।"

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

(निकट गोहाना)

जि० सोनीपत (हरियाणा)

का

38वां वार्षिक-महोत्सव

महोत्सव की तिथियां :-

माघ सुदी चतुर्दशी एवं पूर्णिमा सम्वत् २०३५, तदनुसार
शनिवार, रविवार, **10** व **11** फरवरी **1979** ई०

विशेषताएँ :—

लोक-प्रतिष्ठित एवं ख्यातिनामा सन्यासियों, महात्माओं, विद्वानों, राजनीतिज्ञों, समाज-सेवियों, भजनोपदेशकों तथा प्रतिभावान् छात्राओं आदि द्वारा सामयिक उपदेश, प्रवचन, भाषण, भजन-गीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ, स्त्री-सम्मेलन, आयुर्वेद-सम्मेलन एवं नशाबन्दी-सम्मेलन इस महोत्सव की विशेषताएँ होंगी।

आमन्त्रित महानुभाव :—

शासन के उच्चाधिकारियों, मन्त्रियों, नेताओं, समाज के उत्कृष्ट-सेवकों, धर्म-गुरुओं, साधु-सन्यासियों, भजनोपदेशकों तथा जाने-माने विद्वानों-विदूषियों एवं आप सबको इस शुभ अवसर पर सादर आमन्त्रि किया गया है।

विशेष :—

स्वामी श्री सुरेन्द्रा नन्द जी महाराज की अध्यक्षता में दिनांक 3 फरवरी, 1979 से प्रातः सायं "वेद-परायण यज्ञ" होगा।

आपके विनीत सेवक :—

सुभाषिणी
आचार्या

विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड
उपकुलपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय राजनीति—
"अनिश्चितता के भंवर में

मार्च 1977 में जनता-लहर पर सवार होकर जिस उत्साह से जनता पार्टी सत्ता में आई थी, आज वह सारा उत्साह समाप्त प्राय है। आज फिर जनता पार्टी के बदल के रूप में एक तीसरे 'विकल्प' की तलाश शुरु हो गई है। लेकिन कुल मिला कर स्थिति इतनी विकट है कि बड़े बड़े राजनीति-विशारदों की समझ में कुछ नहीं आ रहा है। कुछ पर्यवेक्षकों के विचार से जनता पार्टी का विकल्प जनता पार्टी के ही अन्दर से निकलेगा। किशन पटनायक जैसे कुछ समाजवादी चिन्तक समझते हैं कि कदम कुंआ में बाल्टी डाल कर तीसरा विकल्प निकल सकता है। लेकिन लगता है लोकनायक की राजनीतिक रस्से में अब वह दम नहीं रहा और साथ ही समाजवादी खेमे में भी दो गुट हैं—एक गुट मोरार जी के पूंजीवाद की चोबदारी कर रहा है तो दूसरा गुट चौ० चरण सिंह के 'सामन्तवाद' का हुक्का भर रहा है। ऐसी स्थिति में 'समाजवाद विकल्प' भी दूर की कौड़ी नजर आता है।

माकपा (मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी) को भी 'हावड़ा प्लेनम' में अपनी स्थिति का आहसास हो गया लगता है। उसने भी बदली हुई परिस्थितियों में जनवादी साम्यवादोन्मुखी दलों में एकता को अपरिहार्य आवश्यकता बताया है। लेकिन बीस पन्थों और बाईस निष्ठाओं में बंटे साम्यवादी एक जगह इकट्ठे हो सकेंगे? और साथ ही क्या भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल साम्यवाद के पौधे का प्रत्यारोपण कर सकेंगे? —यह चिन्तनीय विषय है।

अधिकृत कांग्रेस के स्वर्ण सिंह ने संघर्ष की अपेक्षा समर्पण को वरीयता प्रदान कर अपने लिए एक नया विशेषण—स० शरण सिंह—भारतीय-प्रेस-जगत में प्रचलित करा दिया है। शेष बचे चन्द्र जीत यादव तथा डॉ० कर्णसिंह जैसे लोग किस कदर तीसरा विकल्प दे सकेंगे—यह हमारी समझ से बाहर की बात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ग्रौर सब से सशक्त ग्रौर जनोन्मुखी विकल्प की बात, जो ग्राज के दिन हिन्दोस्तान के ही नहीं, दुनियां के प्रेस में जोर-शोर से चलती है वह है—किसान ग्रौर देहात की पृष्ठ-भूमि से जुड़े हुए, भारत के भू० पू० गृहमन्त्री चौ० चरण सिंह ग्रौर उनका भालोद एवं कुछ समाजवादी साथी। इसमें दो राय नहीं कि ग्राज के दिन चौ० चरणसिंह की जन-ग्रपील ग्रन्य सभी नेताग्रों से ज्यादा है। चौ० चरण सिंह ने भारतीय राजनीति के गणित को भली भांति समझा है ग्रौर इसलिए ग्राज हिन्दुस्तान की कृषक ग्रौर पिछड़ो जातियों पर चौ० साहब की पकड़ है ग्रौर ये वर्ग शैदाई हैं चौ० साहब के।

कांग्रेस ने नेहरू के समय में भी ग्रौर इन्दिरा के समय में भी एक राजनैतिक धुरी कायम कर रखी थी। वह धुरी थी—ब्राह्मण, मुसलमान, ग्रौर हरिजन की। वह धुरी टूटते ही इन्दिरा का महल धराशाही हो गया। कृषक ग्रौर ग्रन्य पिछड़ी जातियां हमेशा विभक्त रही हैं इस लिए संख्या में ग्रधिक होते हुए भी निर्णायक शक्ति नहीं बन सकी हैं। लेकिन यह शायद भारतीय राजनीति में पहली बार होने जा रहा है कि कृषक ग्रौर पिछड़ी जातियां एक झण्डे के नीचे इकट्ठी होने जा रही हैं। यही चौ० चरण सिंह की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

लेकिन पिछले कुछ दिनों से फिर 'फार्मूला-मौसम' शुरु हुग्रा है ग्रगर चौ० साहब इस फार्मूले की भूल-भुलैया में फंस गये तो यह उनके लिए तो ग्रात्मघाती कदम होगा ही साथ ही भारतीय राजनीति का भी दुर्भाग्य होगा। क्योंकि एक सही ग्रौर स्वस्थ विकल्प की किरण ग्राते-ग्राते विलुप्त हो जायेगी। इसलिए हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु चौधरी साहब को सद्बुद्धि दे ताकि भारतीय राजनीति ग्राज जिस ग्रन्धेरे चौहराहे पर खड़ी है उससे पार पा सके। ग्रौर भारतीय प्रजातन्त्र पर ग्राये संकट के बादल छंट जायें तभी देश का दूरगामी हित सम्भव है।

—राजेन्द्र सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका की भूमि पर—विवेकानन्द

—वेद पाल शास्त्री
गढ़ी अजीमां (हिसार)

वक्तृत्व-कला के प्रवीण ज्ञाता जिन्होंने अपने भाषण से शिकागो के सर्व-धर्म-सम्मेलन में सबको मन्त्र-मुग्ध कर दिया था ऐसे स्वामी विवेकानन्द की अमेरिकी सफलताएं सर्वत्र परिचर्चा का विषय है। परन्तु उस महान् सफलता के इतिहास में जिन यातनाओं की गाथा है उससे कितने लोग परिचित हैं?

सन् 1893 ई० के उन दिनों की बात है जब विवेकानन्द दक्षिण भारत का भ्रमण कर रहे थे। उन्हीं दिनों मद्रास के उनके कुछ शिष्यों ने शिकागो में होने जा रहे सर्व-धर्म-सम्मेलन की चर्चा सुनी। उन्होंने विवेकानन्द से सम्मेलन में सम्मिलित होकर हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करने का आग्रह किया। विचार विमर्श के पश्चात् सहर्ष वे तैयार हो गये। जैसा कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए कुछ औपचारिकताओं की पूर्ति भी करनी पड़ती है, इस बात से वे अनभिज्ञ थे। अतः जब 31 मई सन् 1893 को उन्होंने बम्बई से शिकागो के लिए प्रस्थान किया तब उन्हें उस सम्मेलन की तिथि का ज्ञान नहीं था और न ही उसमें सम्मिलित होने का प्रवेश-पत्र ही लिया था।

अमेरिका में वे किसी प्रकार का परिचय-पत्र लेकर नहीं गये। अतः शिकागो जैसे महान् नगर में जब वे अपरिचित-अवस्था में घूम रहे थे तो दर्शकों की भीड़ लग गई। कुछ लोग उनके गेरुवे वस्त्रों को घूर कर देख रहे थे तो कुछ हंसी उड़ा रहे थे। बालकों का समूह भी उनका मजाक करता हुआ उनके पीछे-पीछे चलता जा रहा था। इस प्रकार की अनेक आपत्तियों के साथ संघर्ष करने के बाद एक होटल में रहने का स्थान प्राप्त कर पाये।

वहां पर उन्हें पता लगा कि सितम्बर मास से पूर्व सर्व-धर्म सम्मेलन आरम्भ नहीं होगा। साथ ही जो अपना परिचय-पत्र नहीं लायें उनका भाग लेना असम्भव होगा। तत्पश्चात् उन्होंने निश्चयात्मक रूप से विचार किया कि वे सम्मेलन में भाग नहीं ले सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके पास तुच्छ धन-राशि होने के कारण होटल का व्यय देने के बाद शीघ्र समाप्त हो गई। उस भयंकर परिस्थिति में उस धैर्यवान् सन्यासी का हृदय विचलित हो गया। उन्होंने सोचा अगर मैं हठधर्मी युवकों की बात न मानता तो आज यह व्यर्थ ही संकट सामने न आता। इस प्रकार शिकागो में संकल्प-सिद्धि का कोई उपाय न देख कर उन्होंने बोस्टन की ओर प्रस्थान किया। यात्रा के दौरान उनकी भेंट एक वृद्ध महिला से हुई। उनके अद्भुत वेश को देख कर उसने उनसे परिचय प्राप्त किया और अपने घर ले गई। संयोगवश कठिनाइयों से उन्हें मुक्ति प्राप्त हुई और आशा-रूपी दीपक ने उन्हें प्रकाश दिया। उक्त महिला के निवास स्थान पर उनकी भेंट यूनानी भाषा के प्रसिद्ध प्रोफेसर श्री जे० एच० राइट से हुई। वे भी विवेकानन्द से बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने उन्हें शिकागो के सर्व-धर्म-सम्मेलन के लिए बहुत प्रेरित किया। जब विवेकानन्द ने बताया कि उनके पास परिचय-पत्र नहीं है तो प्रोफेसर राइट ने विश्वास दिलाते हुए कहा—"स्वामी, आप से आपके प्रमाण-पत्र मांगना तो उसी प्रकार है जैसे सूर्य से यह पूछना कि उसे चमकने का अधिकार प्राप्त है या नहीं।"

प्रोफेसर महोदय ने शिकागो सम्मेलन से सम्बन्धित अपने एक मित्र श्री बनी के नाम पत्र लिखकर स्वामी जी को दे दिया। अब वे बड़े उत्साह के साथ बोस्टन से शिकागो के लिए रवाना हुए। शिकागो उतरते ही उन्हें अनुभव हुआ कि प्रोफेसर राईट का दिया हुआ परिचय-पत्र, जिस पर श्री बनी का पता भी लिखा हुआ था, कहीं गुम हो गया है। एक बार फिर उन्हें चारों ओर से निराशा ने घेर लिया। इतने बड़े शहर में प्रोफेसर राइट के मित्र का पता किस प्रकार लगाया जाये? उन्होंने कुछ व्यक्तियों से पूछने का प्रयास भी किया परन्तु सभी उन्हें घृणित समझकर मुंह फेर कर चले गये। धीरे-धीरे सायंकाल का समय आया। धन का उनके पास अभाव था। उन्होंने रात व्यतीत करने के लिए किसी होटल में शरण लेनी चाही किन्तु अर्थ-प्रधान उस नगर में कोई होटल वाला एक धनहीन भारतीय सन्यासी को भला आश्रय क्यों देता? वे भटकते रहे, निरन्तर समस्या कठिन होती चली गई।

चारों ओर शीतकाल की प्रखर वायु बह रही थी। बर्फ गिरनी प्रारम्भ हो गई थी। उनके पास पर्याप्त मात्रा में गर्म कपड़े नहीं थे। और अन्य कोई उपाय न देख विवेकानन्द ने रेलवे के माल गोदाम के सामने पड़े पैकिंग-बक्स में प्रवेश किया और अपने अंगों को उसके भीतर समेटते हुए असीम उत्कण्ठा से सुबह की प्रतीक्षा करने लगे।

किसी प्रकार रात व्यतीत हुई। प्रातःकाल वे आशा-रूपी सङ्गिनि को साथ लेकर राज मार्ग पर निकल पड़े। भोजनादि का प्रबन्ध न हो सकने के कारण क्षुधा से उनका शरीर शिथिल हो रहा था। निरुपाय हो कर भोजन की आशा से वे भिक्षा के लिए चल पड़े परन्तु उनके मैले-फटे वस्त्र एवं क्लाँत मुख को देख कर लोग घृणा से मुंह फेर लेते। किसी ने जोर-जबर्दस्ती की और उपेक्षा से अपना द्वार बन्द कर लिया। करुणा-प्रेरित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मों का महासम्मेलन करने वाले शिकागो नगर में एक विदेशी सन्यासी के लिए अपनी तुच्छ क्षुधा शान्त करना असम्भव हो गया। आशा को छोड़ कर राज-मार्ग के किनारे पर बैठ गये और सब कुछ उन्होंने उस अदृश्य सत्ता के हाथों में छोड़ दिया।

परीक्षा की घड़ियां पूर्ण हुईं। सहसा उनके सामने के भवन का द्वार किसी तिलस्मी घटना के समान खुला तथा एक अपूर्व सुन्दरी ने धीरे से आकर बड़े मधुर स्वर से उनसे पूछा—"महाशय, क्या आप धर्म-सभा के एक प्रतिनिधि हैं ?" विवेकानन्द विस्मित होकर उसे देखते रहे और फिर उन्होंने अपनी कठिनाई समक्ष रखी। वह सुन्दरी उन्हें अपने घर ले गई। उसने हर प्रकार से उनकी सेवा की और फिर धर्म सभा कार्यालय में ले जाकर उन्हें सम्मेलन का विधिवत प्रतिनिधि बनवा दिया।

जिस शहर में विवेकानन्द को थोड़ी सी भोज्य सामग्री के लिए अब तक द्वार-द्वार पर भटकना पड़ा था, और मिली थी घृणा, उपेक्षा और पीड़ा, अन्ततः धर्म-सम्मेलन में अपूर्व सफलता प्राप्त होने के बाद बड़े-बड़े व्यक्ति भी उनके सामने नत-मस्तक हुए फिर बड़े-बड़े चित्र राजमार्गों पर स्थापित किये गये जिन चित्रों पर "स्वामी विवेकानन्द" लिखा होता और हजारों पथिक उन चित्रों के प्रति अपनी श्रद्धा एवं आस्था प्रकट करते हैं।

चुट कुले—

●

मालिक नौकर से – आज तुम हजामत के लिए जो पानी दे गए थे, वह बहुत गन्दा पानी था।

नौकर—(ठहर कर) हजामत का पानी, मैं तो चाय का प्याला दे गया था।

× × × ×

सोहन को नई घड़ी खरीदे दो ही हफते हुए थे कि वह बन्द हो गई। उसने घड़ी खोल कर देखी तो उसमें एक चिंटी मरी पड़ी है। यह देख कर वह झट बोल उठा कि अब समझ में आया कि इस का तो ड्राइवर ही मरा पड़ा है।

× × × ×

एक जवान आदमी को भीख मांगते देख कर नेकी राम जी ने उससे पूछा—"तुम समर्थ होकर भीख मांगते हो, कोई काम-धन्धा क्यों नहीं करते ?"

"बाबू जी कोई काम-धन्धा तो तब करूं जब इस धन्धे से फुरसत मिले।" भिखारी ने जवाब दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमश:—

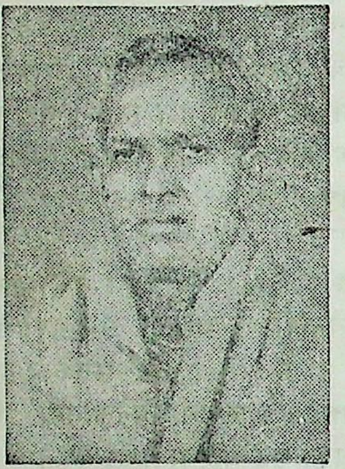

गीता का
* पाँचवा अध्याय *

लेखक :
आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

अर्जुन की उद्विग्नता कृष्ण का उपदेश होने पर भी बनी रही। वह फिर श्री कृष्ण से बोले—हे कृष्ण ! आपके उपदेश समझ में नहीं आ रहे हैं। कभी कुछ कहते हो, कभी कुछ कहते हो। कभी कहते हो कर्मों का सन्यास होना चाहिए, कभी केहते हो कर्म-योग होना चाहिए। निश्चित रूप से अपने विचार प्रकट कीजिये।

अर्जुन की बातों को सुन कर श्री कृष्ण बोले—हे अर्जुन ! अधीर मत हो, मेरी बात सुन– कर्म सन्यास तथा कर्मयोग दोनों ही कल्याणकारी हैं। फिर भी कर्म सन्यास से कर्मयोग को मैं श्रेष्ठ मानता हूँ। कर्म सन्यास का भाव है असक्ति रहित होकर कर्म करना, कर्मयोग का भाव यह है—योगस्थ होकर आत्म समाहित होकर काम करना। जो प्रभु समाहित होकर काम करता है वह कर्मयोगी है। उसमें अहंकार का संचार नहीं होता है। कर्म सन्यास में प्रभु में समाहित न होने से अहंकार का समावेश हो जाता है। अतः कर्म सन्यास से कर्मयोग को उत्तम कहा है। वैसे दोनों ही उत्तम हैं।

कर्मयोगी में सामान्य इच्छा तथा द्वेष नहीं रहता है। सुख दु:ख की अनुभूति उसे नहीं होती है। बन्धन से वह मुक्त रहता है। सांख्ययोग (कर्मसक्ति त्याग) तथा कर्म-योग इन दोनों में विशेष अन्तर नहीं है। दोनों में से किसी एक को भी स्वीकार करने में दोनों के फल मिल जाते हैं। योग युक्त होने पर ही कर्म सन्यास में सफलता मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो योगयुक्त है, जिसका आत्मा सब तरह से पवित्र है, जिसकी इन्द्रियां बस में हैं, जो सब प्राणियों को समानता से देखता है, ऐसा पुरुष ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। आत्म ज्ञानी पुरुष सूंघता हुआ, स्पर्श करता हुआ, देखता हुआ, सुनता हुआ, खाता हुआ, सोता हुआ, श्वास लेता हुआ, बोलता हुआ, छोड़ता हुआ, लेता हुआ, पलक मारता हुआ भी इन्द्रियां इन्द्रियों के विषय में जा रही हैं ऐसा माने, मैं कुछ कर रहा हूँ ऐसा न माने। ऐसा करने से अनासक्ति के भाव उत्पन्न होते हैं। जो ब्रह्म को समर्पित होके, आसक्ति को छोड़ कर काम करता है वह कभी भी पापों से लिप्त नहीं होता है।

योगिजन केवल मात्र शरीर से या मन से या बुद्धि से या केवल इन्द्रियों से ही काम करते से दिखाई देते हैं। अपने से नहीं। इससे उनकी आत्म शुद्धि प्रकट होती है। जब कर्मयोगी फल की आसक्ति छोड़ कर काम करता है तब उसे स्थिर शक्ति प्राप्त होती है। जो योग युक्त न होकर कर्म करता है वह आसक्ति में फल पाता है।

आत्मवशी योगी शरीर से ही नहीं मन से भी सब कर्मों में आसक्ति का त्याग करता है। कर्तृत्व तथा कर्मत्व तथा कर्मफल से योग स्वभाव बनकर प्रवृत्त हो रहा है। प्रभु न किसी के पाप या पुण्य को ग्रहण करता है। यह संसार अज्ञान से आवृत्त होकर रहता है। इस अज्ञान के कारण प्राणी मोहित होते हैं। जो मानव इस संसार में ब्रह्मगत बुद्धि होकर, ब्रह्म में लीन होकर अनासक्त होकर कर्म करते हैं उनके सब दोष तथा पाप दूर हो जाते हैं।

ज्ञानी पुरुष की दृष्टि 'विद्याविनय सम्पन्न' ब्राह्मण को, गाय को, हाथी, कुत्ता, चण्डाल आदि को भी पञ्चतत्वों से निर्मित शरीर स्वीकार करती है। इनके शरीर प्रकृति के गुणों से प्रेरित होते हैं। सब में समान आत्मा-मानकर तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से सबको समदृष्टि से देखती है।

जो जन संसार में समता, समानता के भाव सब प्राणियों के साथ रखते हैं उन्होंने मानों संसार को जीत लिया है। जो कर्म सन्यासी योगी है उसे प्रिय की प्राप्ति पर बहुत प्रसन्नता नहीं होती है। अप्रिय को प्राप्त कर विशेष दुःख नहीं होता है। उसकी बुद्धि में स्थिरता रहती है, उसमें किसी भी प्रकार के मोह का संचार नहीं होता है।

ऐसे पुरुषों की बाह्यस्पर्शों में, इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति नहीं रहती है। उसे ब्रह्म के दर्शन होते हैं। वह सदा आनन्दित रहता है। जितने इन्द्रियों के स्पर्श से उत्पन्न होने वाले सुख होते हैं, अन्त में वे सारे दुःख के कारण होते हैं। वे नाशवान हैं। उनमें विवेकी पुरुष रमण नहीं करता है।

इस शरीर के त्यागने से पूर्व अर्थात् मृत्यु से पूर्व ही जो विवेकी पुरुष काम-क्रोध से उत्पन्न वेग का अवरोध कर लेता है वही योगी है, वही सुखी है। जिसको आत्म-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति प्राप्त हो जाती है प्रभु के दर्शन भी उसी को प्राप्त होते हैं। जो ऋषि होते हैं वे ही ब्रह्म निर्वाण को प्राप्त करते हैं। जिन्होंने काम तथा क्रोध का त्याग कर दिया है, जिनका मन तथा चित्त स्थिर या शान्त हैं, जिन्होंने आत्मतत्त्व को जान लिया है उनको ही ब्रह्म-निर्वाण प्राप्त होता है।

जिनके इन्द्रियों के विषय दूर हो गये हैं, जो सतत उन्नतिशील हैं, जिनके श्वास-प्रश्वास स्थिर हैं, जिनके मन तथा इन्द्रियें बस में हैं, जिनकी सामान्य इच्छा, भय तथा क्रोध दूर हो गये हैं वे पुरुष जीवन काल में भी मुक्त के समान हैं।

अन्त में ऐसे विवेकी पुरुष कर्म सन्यासी होके प्रभु को प्राप्त कर शान्ति लाभ करते हैं।

यह कर्म सन्यास नाम का अध्याय है। जिसमें आसक्ति रहित होके या योगयुक्त होके कर्म करने का निर्देश है।

***

❀ छठा अध्याय ❀

श्री कृष्ण योगी तथा सन्यासी को एक ही मानते हैं—जो कर्मफल का आश्रय (सहारा) न लेकर करने योग्य कार्य को करता है वही सन्यासी है, वही योगी है। पर जो यज्ञ आदि क्रिया को छोड़ देता है तथा कर्म करना भी छोड़ देता है वह सन्यासी या योगी कहलाने का अधिकारी नहीं है। अनाश्रित कर्म वह होता है जिस कर्म को केवल-मात्र दूसरों के भले के लिए किया जाता है वह अनाश्रित कर्म है। जैसे एक माली मालिक के लिए ही वृक्षारोपण करता है अपने लिए नहीं। इसी प्रकार जो कर्म केवल दूसरों के लिए ही किया जाता है वह अनाश्रित कर्म माना जाता है।

इसी विषय को और स्पष्ट करते हुए कृष्ण जी अर्जुन से कहते हैं कि—हे अर्जुन! तू सन्यास तथा योग को एक ही मान तथा जान। जब तक संकल्प रहित नहीं हुआ जाता तब तक न योगी है न सन्यासी है। संकल्प रहित होके काम करने वाला पुरुष भगवान की इच्छा के अनुकूल कार्य करता है।

योग की इच्छा वाले मुनि का संकल्प रहित काम ही योग मार्ग में ले जाने वाला है। योगरूढ पुरुष सदा शान्ति से ओत-प्रोत रहता है। जब इन्द्रियों के विषयों में तथा कर्मों में मनुष्य आसक्त नहीं होता है तभी वह योगरूढ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नतिशील पुरुष अपने आप से ही अपनी उन्नति करे अपने आपको गिराये नहीं। मनुष्य वही ऊपर उठता है जो यह विश्वास करे कि मैं आगे बढ़ सकता हूँ, इस काम को कर सकता हूँ परन्तु जो इसके विपरीत सदा निराशा में भरा रहता है, और सोचता है कि यह काम मेरे बस का नहीं है, वह कभी उन्नति नहीं कर सकता है। तभी अपने टूटे हुए, निराश हुए मन को उठा, साहस पकड़ तभी यश तथा सुख प्राप्त कर सकेगा।

आत्मजयी पुरुष की पहचान यह है वह सर्वथा शान्त रहता है, वह सदा समाहित रहता है. ठण्डक-गर्मी, सुख-दुःख, मान-अपमान में समभाव से बरतता है। वह ज्ञान तथा विज्ञान से तृप्त रहता है. वह निर्विकार रहता है, उसकी इन्द्रियां उसके बस में होती हैं। उसके लिए मिट्टी तथा स्वर्ण एक समान हैं। उनमें उसे कोई अन्तर नहीं दिखलाई देता है।

मित्र, शत्रु उदासीन, मध्यस्थ, द्वेष तथा बन्धुओं में भी ऐसा ज्ञानी पुरुष समबुद्धि रहता है। किसी के प्रति राग या द्वेष उसमें प्रवेश नहीं पाता है।

योगी बनने के साधनों का आगे कथन करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं—हे अर्जुन! प्रतिदिन योगी एकान्त शान्त स्थान में बैठ कर अपने आत्मा को प्रभु से संयुक्त करे। ऐसे व्यक्ति को वासना जन्य इच्छायें त्याग देनी चाहिए। वह लोभ से सर्वथा मुक्त रहे। वासना तथा लोभ मानव को प्रकृति में फंसाने वाले हैं। अतः उनसे छुटकारा नितान्त आवश्यक है।

पवित्र एकान्त शान्त स्थान में उत्तम आसन बिछा कर बैठे। आसन ऐसा हो कि वह किसी भी प्रकार से दुःखदायक न हो। ठीक आसन न होने से, न लगने से मन स्थिर नहीं होता है। चित्त तथा इन्द्रियों को सांसारिक विषयों से हटावें। अपने मन को एकाग्र करके एक स्थान पर स्थिर करे। स्थिरता सम्पादन में कोई आग्रह न हो। इस प्रकार से स्थिर करे कि मन स्वाभाविक रूप से स्वयं ही स्थिर हो जावे। आत्मशुद्धि की इच्छा से मन को, आत्मा को प्रभु से जोड़े। धारणा, ध्यान, समाधि का अभ्यास करे।

शरीर, गर्दन तथा शरीर को सीधा रखे तथा उसमें स्थिरता रहे। इधर-उधर न हिलने दे। सर्वतः शान्ति से युक्त रहे सर्वथा भय से दूर रहे, ब्रह्मचर्य का पालन करे। इस प्रकार अपने मन को बनाकर भगवान का ध्यान करे।

प्रतिदिन इसी प्रकार से योगी अपने आत्मा को परमात्मा के साथ युक्त करे। ऐसा करने से. योगी को महान् शान्ति लाभ होता है। अधिक भोजन करने वाले का योग सिद्ध नहीं होता है, कभी भी एकान्त में न बैठने वाले का भो योग सिद्ध नहीं होता है। अधिक जागना, अधिक सोना भी योगमार्ग में रुकावट है। खाना पीना, सोना, जागना उचित मात्रा में हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित भोजन, उचित विहार, ठीक प्रकार से कर्म करने में गति (कर्म भी उचित मात्रा में हो), उचित जागना और शयन योग मार्ग में प्रगति के साधन हैं।

जब चित्त नियमित या निरुद्ध हो जाता है तब योगी आत्म अवस्थिति को प्राप्त कर लेता है। उस अवस्था में वह लौकिक इच्छाओं रहित हो जाता है। स्थिर चित्त की पहचान बतलाते हुए कृष्ण जी बतलाते हैं—हे अर्जुन ! वायु रहित स्थान पर जैसे दीपक की लौ स्थिर रहती है उसी प्रकार जब चित स्थिर हो जाता है तब उसकी भी यही दशा होती है। जब योगी का चित्त स्थिर हो जाता है तब वह अपने आत्मा से परम-आत्मा के ज्ञान नेत्रों से दर्शन कर अत्यन्त सन्तुष्ट हो जाता है।

उस अवस्था में उसे अतीन्द्रिय सुख (आत्मिक सुख) प्राप्त होता है। ऐसी अवस्था प्राप्त होने पर वह कभी भी चलायमान, व्याकुल नहीं होता है। जब योगी की यह दशा होती है। वह बड़ा सुख अनुभव करता है। ऐसी दशा में योगी के पहुँचने पर यदि उस पर कोई बड़े से बड़ा दुःख भी आ पड़े तो भी वह डांवाडोल नहीं होता है। उस दुःख को वह हंसता हुआ सहन करता है।

अतः इस योग को स्थिर रखने के लिए इसका प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए। इसको जीवन का अंग बना लेना चाहिए। संकल्पों को उत्पन्न करने वाली कामनाओं का त्याग करें। मन से इन्द्रियें समूह का अवरोध करता रहे। यह देखता रहे कि कोई इन्द्रिय पथ-भ्रष्ट तो नहीं हो रही है।

इस काम को करने में शीघ्रता न करे। शनैः शनैः मन का ऐसा स्वभाव बनावे कि वह लौकिक वासनाओं से विमुख होकर आत्म-अवस्थिति की ओर अग्रेसर रहे। अन्य लौकिक विषयों का चिन्तन न करे। ध्यान में मन की ऐसी दशा हो जावे कि उस समय लोकिक विषयों से मन सदा विमुख रहे। सदा आत्मा के विषय में ही मन चिन्तन करे।

जब मन ध्यान के समय इधर-उधर भागे उस समय मन को प्रेम से, धैर्य से रोक कर आत्म-सम्मुख करने का शान्ति से प्रयत्न करता रहे।

जब प्रतिदिन योगी इस प्रकार अभ्यास करता है उसमें से पाप दूर हो जाता है तब उसे ब्रह्म का संस्पर्श, अलौकिक दर्शन प्राप्त होता है, तब उसे सुख तथा शान्ति लाभ होता है।

जब प्रतिदिन योगयुक्त रह कर योगी इस प्रकार ध्यान करता है तब उसे अनुभव होता है कि प्रत्येक प्राणि में यह व्याप्त है। तथा सब प्राणी उसमें व्याप रहे हैं। उसे सब कुछ अभिन्न दिखलाई देता है। यह योग की महान स्थिति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे सर्वत्र प्रभू दिखाई देता है तथा जो सब को अपने में देखता है। ऐसी दशा में योगी को हर समय प्रभु दिखलाई देता रहता है तब वह कभी भी पापाचार में फंस कर पतित नहीं होता है। सब प्राणियों में प्रभु की सत्ता देखने वाला योगी प्रभु भक्त होता है।

परम योगी का वर्णन करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं—जो ब्रह्म की सत्ता का दर्शन तो करता ही है परन्तु इसके साथ-साथ सब प्राणियों को आत्मवत् देखता हुआ सबके सुख-दु:ख को अपना सुख-दु:ख मानता है वह परमयोगी है। योगी को दूसरों के दु:खों को दूर करने का भी प्रयत्न करना चाहिए।

अर्जुन बोले—आप समता, समभाव का उपदेश कर रहे हैं। आप तो समभाव प्राप्त हैं। आप के लिए सब कुछ ठीक है। पर मेरा मन साम्य अवस्था में नहीं है। चंचलता से घिरा हुआ है। अत: मैं आपके विचारों से कैसे सहमत हूँ। मैं तो मन का रोकना वायु के रोकने के समान कठिन मानता हूँ। अतः आप मुझे इस विषय को समझाने की कृपा करें।

अर्जुन की बातों को सुन अर्जुन के मन की चञ्चलता को दूर करने की इच्छा से कृष्ण बोले—हे अर्जुन ! सुन, मैं यह स्वीकारता हूँ कि मन बड़ा चञ्चल है, इसका अवरुद्ध करना बड़ कठिन है फिर भी अभ्यास तथा वैराग्य से इसका अवरोध हो सकता है।

किसी काम को बार-बार करने पर वह काम सरल हो जाता है इसी प्रकार बार-बार मनके अवरोध करने पर सधे हुए घोड़े की तरह मन भी सध जाता है तथा वश में हो जाता है। अभ्यासी को अपने अभ्यास के कारण मनका अवरोध करना सरल हो जाता है। दूसरा वैराग्य (विवेक) से मन का अवरोध होता है। जब किसी वस्तु की वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है तब उसमें आसक्ति नहीं रहती। मन को जब सांसारिक विषयों की वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है तब मन का उन लौकिक विषयों की ओर लगाव नहीं रहता है। वैराग्य का अर्थ है जिस अवस्था में लौकिक राग न रहे वास्तविक राग अर्थात् विवेक हो।

आत्मा जम मन पर शासन करता है तब मन अवरुद्ध होता है। परन्तु जिसका मन अनवरुद्ध है, भागा-भागा फिरता है, उसका योग सफल नहीं हो सकता है। अत: आत्मा से मन को नियन्त्रित कर।

अर्जुन फिर बोले—हे कृष्ण ! आप यह तो बतलावें जिसका मन वस में न हो परन्तु उसमें श्रद्धा हो, यदि उसका योग सिद्ध न हो उसकी क्या दशा होती है। कहीं वह उभय भ्रष्ट तो नहीं हो जाता कि न दीन का रहे न दुनिया का रहे। मेरी भी कुछ ऐसी दशा हो रही है आप कृपा करके मेरे इस सन्देह को दूर करने की कृपा करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री कृष्ण अर्जुन की जिज्ञासा सुन कर उसे कहने लगे—हे अर्जुन ! ऐसे पुरुष की न तो इस लोक में न परलोक में कोई हानि होती है। वह मनुष्य कल्याण-कारी है। उसका मन उसके काम में रुकावट है। वह वस्तुतः श्रद्धालु है, कल्याण चाहता है अतः उसकी दुर्गति नहीं होती है।

ऐसा व्यक्ति पुण्यकर्त्ताओं के लोक में, उत्तम पुरुष के घरों में अनेक जन्मों तक जब तक उसका मन स्थिर नहीं होता है तब तक वहां उत्पन्न होता रहता है मरता रहता है। अनेक जन्मों के बाद पवित्र जीवन वाले योगियों के घर उसका जन्म होता है। इस प्रकार के जन्म की प्राप्ति बड़े भाग्य की बात है।

तदन्तर वह पूर्व संस्कारों के कारण तथा उन योगियों के संग से अपनी यौगिक क्रिया को प्रारम्भ करता है। उस क्रिया को करता-करता वह सफलता को प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार प्रयत्न करता हुआ योगी पवित्रता को प्राप्त कर लेता है। उस पवित्रता को प्राप्त कर वह संसिद्ध योगी बन कर परमगति को प्राप्त कर लेता है।

हे अर्जुन ! सुन, योगी तपस्वियों से श्रेष्ठतर है, ज्ञानियों से भी योगी श्रेष्ठतर है, कर्म योगियों से भी वह श्रेष्ठतर है। अतः हे अर्जुन ! तू भी योगमार्गी बन जिस तेरेसे सारे सन्देह दूर हों।

जो श्रद्धालु योगी होता है, प्रभु में जिसकी अपार गति है वह परम-पद को प्राप्त करता है।

इस अध्याय में ध्यान का निरुपण किया है। ध्यान के द्वारा आत्मदर्शन तथा प्रभुदर्शन होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच मुक्तक

—विजया गुणवती

लहर ही लहर को बनाती रही है,
लहर यों किनारे को पाती रही है।
कभी डगमगाई जो मंझधार नौका,
किनारे को पतवार लाती रही है।।

कलम में नहीं शक्ति जो लिख सके कुछ,
हृदय वेदना ही लिखाती रही है।
भला आंख क्या ही स्वयं रो सकी है,
हृदय वेदना ही रुलाती रही है।।

सृष्टि का रूप, रूप पर स्नेह,
स्नेह में जीवन बसता है।
स्नेह में गन्ध वासना युक्त,
इसी पर जीवन हंसता है।।

नहीं सिर्फ रंगीनी जीवन को रंगीन बनाती है,
कठिन कुलिश की चोटें भी तो जीवन बहलाती हैं।
मृदुल सुमन खा-पवन थपेड़े सभी भूमि पर छा जाते,
प्रिया पाणि पर मेंहदी"तो पिस कर ही रंग लाती है।।

नारियां, नर, रूप रंग में या कि गोरे या कि काले,
सृष्टि कर्त्ता ने बनाए रूप रंग दो ही निराले।
गौर को पा रीझ जाना, कृष्ण रंग पा खीझ जाना,
प्रेम रंग गोरा न काला, तुम इसे मत भूल जाना।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन

—सविता मलिक

शास्त्री शंकर लाल माहेश्वरी के जीवन का एक प्रसंग है। वे तब युवा थे। एक दिन सुब संध्या-वन्दना कर रहे थे कि एक ब्राह्मण भिक्षा माँगने आ पहुँचा। 'भिक्षां देहि' उसने हाँक लगाई। जब दुबारा यही शब्द कान में पड़े, शास्त्री जी को प्रतीत हुआ कि शायद घर में उनके सिवा कोई नहीं है, जो भिक्षा दे। ब्राह्मण को देर न हो, यह सोच वे सन्ध्या छोड़ कर उठे। बरामदे की ओर नजर डाली, तो क्या देखते हैं कि एक ब्राह्मण धो पोंछ कर बरामदे में रखी हुई थाली और कटोरी झोली में डाल कर लम्बे डग भरता हुआ निकल रहा है।

शास्त्री जी ने पुकारा तो ब्राह्मण ने बाहर निकलने की ओर उतावली की। परन्तु देहलीज तक जाकर उसे वापिस बुला लाये। ब्राह्मण लौट आया। शास्त्री जी बोले—"मैं सन्ध्या कर रहा था, अतः आपको तुरन्त भिक्षा न दे सका। क्षमा करें! जरा ठहरें और सीधा ले लें।

ब्राह्मण को बरामदे में पड़े झूले पर बैठा कर खुद सीधा लेने जाने लगे। तब ब्राह्मण ने उन्हें रोक कर कहा—"शास्त्री जी, मैं आपका अपराधी हूँ, मैं अब सीधा लेने का हकदार नहीं हूँ। मैं तो बरामदे में पड़ी थाली कटोरी झोली में भर कर जा रहा था।" और उसने थाली कटोरी बाहर निकाली।

शास्त्री जी शान्ति पूर्वक कहने लगे—"यह मुझे ज्ञात था। आप मेरे तईं अपराधी हैं, इससे दुःखी होने की कोई बात नहीं। कोई भी मनुष्य अपराध करता है, तो उसका अपराध पहले अपने प्रति होता है। तब कहीं वह दूसरे का अपराधी हो सकता है।" अपरिग्रह ब्राह्मण का जीवन-व्रत है, फिर भी इस उमर में आपने जिस ढंग से बर्तन लिए, उसे देखते हुए और उसके कारण को समझते हुए, आपको सीधा देना धर्म हो जाता है। आप मेरे लिए दुःखी न हों। अपना धर्म समझ लें।

शास्त्री जी ने उसी थाली कटोरी में सीधा भर कर ब्राह्मण को दे दिया। यही नहीं भीतर से घी भरा लौटा भी ले आये और उसे आग्रह पूर्वक देते हुए बोले—"थाली, कटोरी और लौटा ये तीन बर्तन साथ होने चाहिएं। अतः इन तीनों बर्तनों सहित सीधा भी स्वीकार करें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्ध ब्राह्मण बहुत सकुचाया, पर सीधा उसे स्वीकार करना ही पड़ा। उस दिन से वह युवा शास्त्री जी का शिष्य बन गया। उसका जीवन ही बदल गया। वह एक समय ही भोजन करता, ग्यारह गायत्री मन्त्र समाप्त होने पर किसी घर में भिक्षा के लिए नहीं ठहरता। कोई अंधा-अपंग मिलता तो उसे ठिकाने तक पहुंचाता। किसी के सिर पर ज्यादा बोझ हो, तो उसके घर तक पहुंचा आता। शास्त्री जी नित्य वेद प्रवचन करते, वह ब्राह्मण एकाग्रचित हो उसे सुनता था। इस प्रकार उसके जीवन में मोड़ आ गया।

अनमोल बातें :—

जाने क्या हो गया है लोगों को, कोई नामे खुदा नहीं लेता।
जिसको देखो तुम आज दुनियां में, वोह है दिलदादा सिर्फ दौलत का ।।१।।

मेरे आक़ा के क़ौल के मूजिब, उसको मोमिन कभी न कहियेगा।
वोह जो खुद अपना पेट तो भरले, और हमसाया जिसका भूखा हो ।।२।।

❀ ❀ ❀ ❀

मिनी कविता

द्रोपदी के चीरः—

कृष्ण लीला सुन कर
अबोध बालक बताता था
कि कृष्ण—
गोपियों के कपड़े चुराकर
द्रोपदी के चीर बढ़ाता था।

❀ ❀ ❀ ❀

चुटकला :—

सर्कस का बौना जोकर अपनी उलटी-सीधी हरकतों से दर्शकों को हंसाने का प्रयत्न कर रहा था, परन्तु दर्शक बिलकुल नहीं हंस रहे थे। उसके सारे प्रयत्न फैल हो गये तो उसने एक घोषणा की—"साहेबान, अब आपके सामने हम ऐसा नायाब आइटम पेश करने जा रहे हैं कि आप हंसते-हंसते लोट-पोट हो जायेंगे।" दर्शकों के कान खड़े हो गए। तभी उसने घोषणा की—"तो जनाब यह रहा हमार नायाब आइटम कवि सम्मेलन, जिसमें देश के प्रख्यात बौने अपना काव्य-पाठ प्रस्तुत करेंगे।" इतना सुनते ही दर्शक हंसने के बजाय गेट की ओर दौड़ पड़े।

★★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन—एक पहेली

जीवन क्या है ?
एक मञ्जिल,
जिसे औ, हम
सभी खोजते हैं ।
पर पाता है विरला ही
भोग-विलास को तिलाँजलि दे,
संघर्ष ही जीवन है ।
परस्पर हितों का टकराव,
देता है जीवन में भटकाव,
अभिलाषातीत हो,
समस्त भुवनमीत हो,
उज्जवल वर्तमान है,
तिमिर-व्याप्त क्यों न अतीत हो,
फिर आमोद ही जीवन है ।
जीवन है बहता पानी,
एक विचित्र कहानी,
जलचरों तुल्य प्राणी,
काल-संग प्रवाहित निरन्तर,
आधार शून्य असीम सफर,
जल में उगते कंटक, कमल भी,
यहां सुख अलप, दलते दुःख दल ही,
तम में लिपटा, ग़म में डूबा है जीवन ।
स्वप्न में बने बादशाह,
जागे, सब तबाह,
अन्तर से उभरी ग़म की आह,
परम संगीन स्वप्न है जीवन,
जिसका आदि वाह औ, अन्त आह !
माना जीवन-सफर है सुहाना,
पर नाविक ! किसे मिला है मुहाना,
जीवन है नाटक,
हिम्मत कर खुले हैं फाटक,
लेकिन सब कल्पना है,
ग़म-अनल में तपना है,
'खूबसूरत नग़में' कोई सुनाता है
एक बेचारा कांटों की सेज बताता है,
डाल पे बैठी कोयल ने कहा,
क्या आनन्द है अहा,
तल्प सुप्ता राजकुमारी बोली,
जीवन फूलों की सेज है महा,
सब का जीवन है भिन्न,
एकाकी मैं क्यों हूँ खिन्न,
पहेली अब आप ही बूझिए,
सर्वसम्मत, एक, अभिन्न ।

—यशः पाल सिंह 'विद्यालंकार'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे—

हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान
तथा उत्तर-प्रदेश के
प्रसिद्ध लोक-कवि

चौ० ईश्र सिंह गहलौत

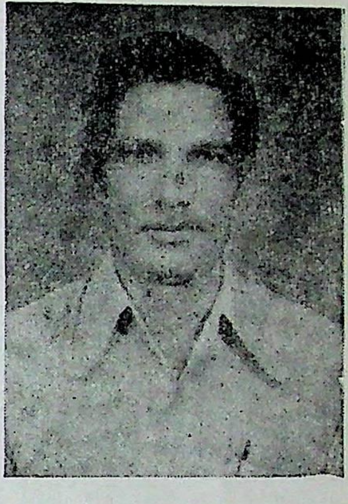

प्रो० प्रकाश वीर दलाल

आपने समाज सुधार के लिए भी भजन लिखे। बाल विवाह का—'कोए ऐसी ना जोट मिलाइयो, बूढ़े बैल कै मत ब्याहियो।' गीत लिखकर बड़ा सख्त विरोध किया। अपने लड़के लड़कियों को जवान होने पर जाट महासभा के नियम के अनुसार दहेज के लेन-देन के बिना शादी की।

किसान और मजदूर की हमदर्दी में भी आपने बड़ा प्रचार किया। एक बार गुरुकुल भैंसवाल के उत्सव पर दीन बन्धु चौधरी छोटूराम की उपस्थिति में—'सैयाद ना सता मुझे मैं तो किसान हूँ।' गीत गाया तो चौधरी छोटू राम ने भावविभोर होकर मंच पर ही खड़े होकर अपनी बाहों में ले लिया और एक गीत और गाने को कहा जो—'दुनियां का दरोड़ा, सिर पीटै है किसान का' टेक से शुरु किया। उनके बाद आज फिर से इस देश में किसान और मजदूर की हमदर्दी की भावना जनता के सामने उभर कर आ रही है। चौ० ईश्वर सिंह किसान और मजदूर के हमदर्द होने के साथ-साथ पूंजीपतियों और शहरियों के बड़े विरोधी थे। वे देहात को पवित्रता का तथा शहर को चालाकी और अपवित्रता का परिचायक मानते थे—इसका एक स्पष्ट उदाहरण यहां पर गीत के रूप में है:—

टेक : - अच्छी चीजें सारी हैं जंगल बन देहात में।
सृष्टि रची पृथ्वी पहल बने बन जंगल।
प्रकृति देवी ने किया जंगल में मंगल।
प्रभु चित्रकारी है जंगल ... ॥१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्पति अन्न से बन में जीव जन्म लेते ।
अग्नि वायु आदित्य अंगिरा को वेद ब्रह्म देते ।
ज्ञान उजियारी है जंगल ...... ॥२॥

वेद और वेदांग पढ़े जंगल बन में किये याद ।
गौतम पतंजलि कपिल व्यास जैमिनि कहते कणाद ।
सभ्यता हमारी है जंगल ...... ॥३॥

शिव नारद कनक च्यवन भारद्वाज बन में ।
बाल्मीकि श्रृंगी शुक्र महाराज बन में ।
योगी तपधारी हैं जंगल ...... ॥४॥

साधु ऋषि आश्रम हैं गुरुकुल बन में ।
लव और कुश, ध्रुव रहे पल बन में ।
बाले शस्त्र खिलारी हैं जंगल ...... ॥५॥

शुद्ध दूध दही शहद घी देहात में ।
सादगी सच्चाई शुद्ध हृदय भी देहात में ।
हों सब खेती क्यारी हैं जंगल ...... ॥६॥

कमेड़ा गौमा बिषखपरा बासा सुखमना चिरपटा ।
गिलो गौरख मुण्डी शिवलिंगी ब्रह्मी पत्थर चटा ।
औषध तरकारी हैं जंगल ...... ॥७॥

परम धर्म कर्म शर्म मिलते हैं देहात में ।
प्रेम परम भरम मर्म मिलते हैं देहात में ।
ढूंढ़ो सच्ची यारी है जंगल ...... ॥८॥

राममूरती कीकरसिंह चन्दगी पहलवान हैं ।
जोगेन्द्र, सिकन्दर, छोटू राम जी दीवान हैं ।
पेशा जमींदारी है जंगल ...... ॥९॥

सारी चीजें अच्छी लगें एक की कसर है ।
ईश्वर सिंह उस बिन बेड़ा अधवर है ॥
विद्या बिन अनारी हैं जगल ...... ॥१०॥

वे यह गीत गाकर कहा करते थे कि शहर की तरफ मत भागो क्योंकि शहर मनुष्यों की ईमानदारी को हरने की जगह होती है । इसके साथ-साथ—

'बिकते धर्म कर्म शर्म शहर में, हर एक तरह की फर्म शहर में ।
शहर में शामत चालचलन को ॥'

आदि गीत गाकर भी शहर और देहात की बुराई और अच्छाई बताते थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौधरी साहिब की मातृभाषा हिन्दी थी। किन्तु बचपन से ही उर्दू फ़ारसी पढ़ी—और इसी में ही शायरी के अन्दर महारत हासिल की। लेकिन प्रचार में कभी भी हिन्दी और संस्कृत की बड़ाई करने से नहीं चूकते थे। आपने 'शाहजहां के दरबार का फैसला' एक ऐतिहासिक घटना के द्वारा यह सिद्ध किया है कि संसार की सब से उत्तम भाषा सस्कृत है। इसी में आपने शाहजहां की बेटी का काशी विद्यापीठ के ब्रह्मचारी पं० जगन्नाथ से विवाह सम्बन्ध बड़े अच्छे ढंग से चित्रित किया है। हिन्दी के प्रचार के लिए तो आपने सांघी, भगोती पुर, खरैंटी, निडान खेड़ा, मलौट, जुलाना, शादी पुर, मीताथल, जसराणा, कासनी तथा ककरौला आदि में अनेक लड़के और लड़कियों की पाठशालाएं खुलवाई, जहां पर अब बड़े-बड़े स्कूल बन चुके हैं। देहात में शिक्षा के प्रचार के लिए अनपढ़ और पढ़े-लिखे नर-नारियों की आपस में तुलना करके गीत द्वारा कार्य करने का उनका ढंग बड़ा ही निराला था। जगह-जगह पर—

'कोई जोड़ रहा पत्थरों सेती प्यार, हमने प्यारा ओ३म् नाम निराकार।
कोई दीवाली को मुरदा डाला बार, म्हारै हवन की उठ रही महकार॥'

आदि गीत गाकर मूर्तिपूजा के खण्डन और हवन के मण्डन में भी गीत गाये। आप भारतीय संस्कृति के बड़े पुजारी थे। पतलून की बात तो बहुत दूर की थी—पाजामा पहनना भी आपको पसन्द नहीं था। धोती कुर्त्ते को ही भारतीय वेशभूषा का परिचायक मानते थे। पहलवानी पर बड़ा बल दिया करते थे। अंग्रेजी फैशन के इतने विरोधी थे कि प्रचार में बार-बार पतलून बाज तथा जुल्फ बाज कहकर खण्डन करते थे। अपने भजन की—"इस फैशन ने जुल्म गुजारे कर दिया देश खवार, मेरे भगवान् दया करिये।" पंक्ति कह कर बार-बार भगवान् से देश को फैशन की बीमारी से बचाने के लिए प्रार्थना किया करते थे।

स्त्री-शिक्षा के लिए आपका प्रचार सबसे अधिक होता था। आप जानते थे कि यदि स्त्री शिक्षित हो गई तो हमारा सारा समाज ही शिक्षित हो जावेगा। इस विषय पर, कथाओं तथा भजनों का विश्लेषण करके देखा जावे तो उनका आधे से ज्यादा साहित्य मिलता है। अनपढ़ नारी को बड़ा कोसते थे—उसे समाज के लिए बीमारी मानते थे। उसे फूहड़ और मूर्खा कहा करते थे। कन्या को न पढ़ाने वाले माता पिता को भी अनाड़ी कहा करते थे। समझाने और नफरत दिलाने के लिए इस विषय पर सैंकड़ों गीत लिखे हैं— 'पिता माता अनाड़ी जो ना कन्या पढ़ावैं।' 'प्यारी जिन्दगानी पढ़ाई बिन खो दई।' 'अनपढ़ बहू आवै साथ लावै टोटा।' आदि गीतों से उनकी भावना का अन्दाजा लगाया जा सकता है। यही नहीं मनुष्यों के लिए भी वे पढ़ना लिखना बड़ा जरूरी समझते थे और—'जिसको अनपढ़ मिलै जमाई समझो खैर नहीं है' कह कर मनुष्यों के मन में पढ़ाई के प्रति जागरूकता पैदा किया करते थे। उनकी पढ़ाई के प्रति इतनी लगन थी कि प्रचार में यहां तक भी कह देते थे कि जिस लड़के या लड़की का रिश्ता (सगाई) अनपढ़ लड़की या लड़के से हो चुका है—उसे नाश से बचने के लिए वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिश्ता तोड़ देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वे नारियों के लिए जेवर पहनने को भी अच्छा नहीं मानते थे। उससे चोरी डाके का डर हमेशा बना रहता है। स्त्रियों के बारे में उन की मान्यता थी कि यदि स्त्रियां सांग, सिनेमा और मेले में जाना छोड़ दें तो इन सभी में भीड़ बन्द हो सकती है और काफी हद तक बदमाशी बन्द हो सकती है।

राजनीति के क्षेत्र में आप अहिंसा को ठीक नहीं मानते थे। शत्रु के साथ प्यार की भाषा अपनाने से किस प्रकार हानि होती है—इसको बौद्ध मतावलम्बी मगध नरेश की कथा बना कर स्पष्ट किया है। मगध नरेश जालिम हूणों को अपना भाई समझता था। वह उनको प्यार से जीतना चाहता था। परन्तु बाद में उसे तलवार उठानी पड़ी। इस कथा के माध्यम से चौधरी साहिब उस समय भारत-चीन सम्बन्धों की चर्चा किया करते थे और बार-बार कहते थे कि— 'तलवार जीते, ना प्यार जीते।' वे सामाजिक क्षेत्र में तो हिंसा के समर्थक थे किन्तु राजनीति में इसे कभी भी उचित नहीं मानते थे। इस कथा के अतिरिक्त दूसरी कथाओं में भी 'ईंट का जवाब पत्थर', 'थप्पड़ का जवाब मुक्का' कह कर स्पष्ट किया करते थे कि देश की सुरक्षा केवल-मात्र प्यार से नहीं की जा सकती। शत्रु प्यार को कमजोरी मानता है और समय मिलते ही हानि पहुँचाता है। इसका प्रमाण हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे से भी मिल सकता है कि चीन ने सन् 1962 में हमारे देश के साथ क्या व्यवहार किया।

आपका प्रचार क्षेत्र बड़ा विस्तृत था। जाट संस्कृत हाई स्कूल रोहतक, जिसकी स्थापना मास्टर बलदेव सिंह जी ने की थी, का चन्दा हर वर्ष दो मास के लिए करवाते थे। उस दौरान आप किसी प्रकार की आर्थिक सहायता चन्दा करवाते समय नहीं लेते थे। इस स्कूल के लिए बुटाना, मुण्डलाना, सामाण पूठी, बास, पेटवाड़, मांडौठी (लेखक का निजी ग्राम), डीघल, बेरी, गोछी, धांधलान, सांपला, भापड़ौदा आदि बड़े-बड़े गांवों में प्रचार के द्वारा चन्दा करवाते थे। सन् 1924 में संगरिया मण्डी बीकानेर का जाट स्कूल अर्थाभाव के कारण टूटने को जा रहा था—उसके लिए लगातार एक साल तक चन्दा करवाया—जो आज एक बहुत बड़ा विद्यापीठ है। आप जाट हाई स्कूल हिसार उत्सव पर भी सेठ छाजू राम के निमन्त्रण पर कई बार गये। गुरुकुल भैंसवाल के उत्सव पर भी आप हर वर्ष आते थे। अनेक पाठशालों के प्रचार के कार्य में व्यस्तता के कारण लोग कई-कई मास पूर्व उनसे कार्यक्रम लेने के लिए आते थे। जब आप भिवानी आर्य-समाज के उत्सव पर पं० फूलचन्द 'निडर' के निमन्त्रण पर जाते थे तो वहां के—मुसलमान उनकी शायरी सुनने के लिए बहुत बड़ी तादाद में आते थे—हालांकि वे इस्लाम की झूठ का बड़े सख्त शब्दों में खण्डन करते थे—

'खुदाया कैसी मुसीबतों में कुरान वाले पड़े हुए हैं।
कदम-कदम पर शुद्धि का शर ले कमान वाले खड़े हुए हैं।।'

ये पंक्तियां इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं। आप आर्य हिन्दी महा विद्यालय दादरी में भी प्रचारार्थ जाते रहे। जिला सोनीपत के बली ग्राम में आपने मौलवी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रार्थ में भी हराया था तथा अनेक आदमियों को जनेऊ देकर शुद्धि का काम किया। न केवल हरियाणा के उपरोक्त स्थानों पर ही आप जाते थे किन्तु पश्चिमी उत्तर प्रदेश खासकर मुजफ्फर नगर तथा मेरठ जिले में भी आप चौ० तेजसिंह के निमन्त्रण पर अनेक बार गए। आर्य समाज के प्रचार के लिए आपने हिसार, करनाल, रोहतक, गुड़गांव तथा राजस्थान की हनुमानगढ़ तहसील के लगभग नब्बे प्रतिशत गांवों का भ्रमण किया। उनकी सुरीली और ऊंची आवाज का इतना प्रभाव था कि साँगी उनके मुकाबले पर कभी भी नहीं ठहर पाये।

आर्य धर्म के प्रचार के समय आपने अनेक शिक्षा-संस्थाओं में सौ-सौ रुपये दान दिया, जिसमें गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल पंचगामा, आर्य हिन्दी विद्यालय दादरी तथा जाट स्कूल रोहतक आदि विशेष रूप से शामिल हैं। गुरुकुल भैंसवाल के ब्रह्मचारियों को तो दो बार विशेष भोजन भी दिया। आप की गुरुकुलों के बारे में कितनी अटूट श्रद्धा थी उसका प्रमाण इन पंक्तियों में मिल सकता है :—

'चलो सखी देखने चलें, हो रहा वेद प्रचार, गुरुकुल देश सुधारेगा।'
'रामायण पढ़ ब्रह्मचारी बनेंगे राम लखन अवतार, गुरुकुल देश सुधारेगा।'
'देवकी मां ने बेटे भेजे, पढ़-पढ़ बनेंगे कृष्ण मुरार, गुरुकुल देश सुधारेगा॥'

चौधरी ईश्वर सिंह ने जो कथाओं के माध्यम से इतिहास लिखा है, उसमें आप ब्राह्मण, जाट, राजपूत, अहीर, गूजर, सैनी, रोड आदि सभी को क्षत्रिय मानते थे। वैश्य, सिक्ख, मराहठा, मुसलमान, आर्य वीराँगनाओं (पतिव्रता, दयावती तथा लड़ाकू के रूप में) तथा कर्ण आदि का इतिहास गीतों में बनाकर गाया—जिनमें तीन-तीन, चार-चार घण्टे का समय लग जाता था। जहां कहीं भी कथाओं में भगवान् का वर्णन आता है—वहीं पर उसे निराकार कहकर उसका निरूपण किया गया है। बंगाल बन्दू ग्राम में भैरों के मन्दिर में भगवान् की मूर्ति को देख कर कहा—'कैद में क्यों भगवान् रुके।' इतिहास की अन्य अनेक (लगभग दो सौ से ऊपर) कथाएं और भी हैं किन्तु उनमें राजा हरिश्चन्द्र, कृष्णसुदामा, महाराजा नल, महाराणा प्रताप, शक्तिसिंह, शिवाजी, शूरसेन, जसवन्त सिंह राठौर, पृथ्वी सिंह राठौर, महाराजा सूरजमल, महाराजा जवाहर सिंह, गुरु गोविन्द सिंह, फतेह सिंह, जोरावर सिंह, वीर हकीकत राय, महाराजा रणजीत सिंह, महारानी चन्दा, भक्त तेजा जाट, पं० भारवि, माई गूजरी, किशोरी माई, पद्मा बाई, भूपाल, महारानी द्रौपदी, वीरांगना, दुर्गा देवी, केशर बाई, महारानी लक्ष्मी बाई, जमना बाई मरहठा, उषा कुमारी, सूरज सिंह चन्द्रा (जिसमें एक क्षत्रिय का हरिजन की लड़की के साथ सच्चा भाई बहन का प्यार दिखाया गया है), दानी कर्ण, कबीर दास, रविदास आदि कथाओं के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। नवजागरण पर महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, नेता जी सुभाष चन्द्रबोस, भक्तसिंह, वीर चन्द्र शेखर, रामप्रसाद बिस्मिल तथा जलियां वाला खूनी इतिहास पर भी कथाएं लिखीं— 'कहै डायर फायर करदों यह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानी है' लिख कर प्रकट किया कि अंग्रेज डायर की नजर में हमारी क्या कीमत थी। महात्मा भक्त फूल सिंह पर बड़ी मार्मिक कथा लिखी। 'महात्मा गांधी जी के जीवन की अन्तिम झांकी, 'ओ हत्यारे हाथ नहीं कांपा।' आदि गीतों में लिखी। इनके अतिरिक्त भी उनका बहुत बड़ा साहित्य उर्दू भाषा में लिखा हुआ अब भी उनके शिष्य कुंवर जौहरी सिंह आर्य भजनोपदेशक गुरुकुल भैंसवाल के पास सुरक्षित है।

उनके शिष्यों में स्वर्गीय स्वामी नित्यानन्द, चौ० सूरत सिंह, पं० शिवकरण, कुंवर जौहरी सिंह, कांशी राम, छोटू राम, भाई मूलचन्द, हरफूल सिंह, भाई बलराम सैनी, सज्जन सिंह, भाई गैला राम हरिजन, भाई प्रभाती राम हरिजन, भीकन सिंह होडल, भाई सत्यवीर सिंह मलिक आदि प्रमुख हैं—जिन्होंने उनकी ही शैली को अपना कर वेद प्रचार किया है। इनके अतिरिक्त भी उनके अनेक शिष्य रहे हैं—जिनका जिक्र स्थानाभाव से नहीं किया जा रहा है। उनका गाने का ऐसा तरीका था कि आज भी उस शैली पर कोई गीत गाता है तो सुनने वाला फौरन समझ जाता है कि यह शैली चौधरी ईश्वर सिंह की है।

आपका भोजन सादा होता था और मांस, शराब आदि के आप बड़े विरोधी थे। मिठाई तथा तली हुई चीजों का कभी भी प्रयोग नहीं करते थे। 'जिनके प्रीतम पीवें शराब उनका जीना क्या जीना।' शराब के बारे में गीत रच कर बहुत गाया करते थे। गंगा, जमना, रामराय, पिंडारा आदि गन्दे मेलों में स्त्रियों के जाने पर उन्हें बड़ा कष्ट होता था और प्रचार में इन मेलों में होने वाली बुराइयों का बड़े साफ शब्दों में वर्णन करते थे।

अन्त में उस महान् कवि को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ यह लिखना चाहूँगा कि उन्होंने समाज से सम्बन्ध रखने वाला कोई क्षेत्र ऐसा नहीं छोड़ा जिस पर अपनी कलम न उठाई हो। सभी विषयों पर उनके भजन मिलते हैं। आजादी के बाद भी— 'हुआ राज हमारा है सखी रंग बरसैगा।' 'तेरे पा पा को मिटादें बाकी रह जागा किस्तान' आदि गीत लिख कर अपने देश की गौरव गाथा गाई।

आपकी अन्तिम कविता, जो आपने 12 जौलाई 1958 को लिखी—"काल से काल जानै सो जानै" है। उसके बाद आपका 14 जौलाई को दो दिन बाद आपके अपने गांव ककरौला में स्वर्गवास हो गया।

(समाप्तम्)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहस्यताम् विचार्यताम्

—पं० प्रशस्यमित्र शास्त्री
एम० ए० (लब्धस्वर्णपदक)

एक: प्रश्न:

यदि—

साहित्य संगीत कला विहीनः,
साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः ।

तर्हि—

साहित्य संगीत कला सुयुक्तः,
स किं पशुः पुच्छविषाणयुक्तः ?

द्वितीयः प्रश्नः

लज्जैवाऽऽभूषणं नार्या लज्जैव वसनं यदा ।
कथं कार्पासवस्त्राणि नारी परिदधात्यसौ ॥

षोडशी प्रार्थना

सश्रद्धं मन्दिरे गत्वा पत्रपुष्पकराशुभा ।
प्रत्यहं षोडशी काचित् प्रार्थयत्येवमीश्वरम् ॥
न मे याच्ञाऽस्ति हे देव ! काचिदप्यात्मनेपरम् ।
जनन्यै कृपया कश्चिज्जामाता दीयतां मम ॥

गदहा कः

सभामध्ये तु कस्मिंचिद् वैद्यः कोऽपि गुणान्वितः ।
"गदहे" ति विशेषेण देवदत्तेन कोपितः ॥
कुप्यन्तं वैद्यराजं तं दृष्ट्वाऽसौ देवदत्तकः ।
समाधानं करोत्येवं नतेन शिरसा तदा ॥
मा कुपः किं न वेत्सि त्वं यद् रोगो 'गद' उच्यते ।
गदं हन्ति च यो लोके स एव 'गदहा' स्मृतः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080487 ... विश्वविद्यालय

अभि नवनागपूजा

कदाचिदपि संसारे येनाऽद्यावधि कुत्रचित् ।
चायपानार्थमप्येकं मित्रं नैव निमन्त्रितम् ॥

साग्रहं दुग्धपानार्थं नयन्तं मित्रमण्डलम् ।
देवदत्तमुवाचैवं सखा कश्चन विस्मितः ॥

कृपण ! ब्रूहि को हेतुर्देवदत्ताद्य मित्रक ।
निमन्त्रयसि निःशेषान् सुहृदो दुग्धपीतये ॥

मित्रस्य वचनं श्रुत्वा देवदत्तः सुधीस्तदा ।
मन्दं मन्दं विहस्यैनं प्रत्यूचे मित्रमण्डलम् ॥

भो मूर्खाः ! किं न जानीथ दुग्धदानस्य कारणम् ।
पुण्या तु तिथिरद्यैव वर्त्तते नागपञ्चमी ॥

सरकारी वकील ने जज साहब को चोर की पहचान कराते हुए छड़ी से संकेत किया, कि—"हुजूर ! इस छड़ी के सिरे पर खड़ा व्यक्ति चोर है।"

अभियुक्त ने उत्सुकतापूर्वक पूछा—"कौन से सिरे पर हुजूर !"

❀ ❀ ❀ ❀

शराब की दूकान—

एक्सक्यूज मी
शराब की दूकान किधर है ?
जी ! बस······
थोड़े ही आगे
'गांधी मार्ग' पर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farme and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम पुस्तकालयाध्यक्ष

स्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

पत्रालय

जिला हरिद्वार

हर माह हजारों प्रतियां बिकने वाले 'समाज सन्देश' मासिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

* विज्ञापन की दरें *

टाइटल पेज एक चौथाई	...	50 रुपये
बैक पेज आधा	...	60 रुपये
अन्दर का एक पृष्ठ	...	40 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ	...	20 रुपये

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar